हिन्दुस्तान लूटा गया

कब ! क्यों !! कैसे !!!

(मादक द्रव्य मद्यनिषेध या शराब)

लेखक
श्री चन्द्रसेन

प्रथमवार] अक्टूबर १९४० [मूल्य २॥)

मिलने का पता :—

चन्द्रा पुस्तकालय

चूना मण्डी,

नई दिल्ली

(*Publisher*—Sahitya Prakashak Mandal, Chawari Bazar, Delhi.

मुद्रक—पं० खूबचन्द शर्मा, देहली कमर्शियल प्रेस, चांदनी चौक, दिल

विषय-सूची

अध्याय पहला

मद्य वर्णन

अध्याय दूसरा

मद्य दोष

अध्याय तीसरा

भारत सरकार को शराब बेचने से लाभ

अध्याय चौथा

अफीम

अध्याय पांचवां

भांग, चरस, गांजा

अध्याय छठा

तम्बाखू

अध्याय सातवाँ

मांस

अध्याय आठवां

चाय, कोको, कहवा, कॉफी

अध्याय नवाँ

कांग्रेसी सरकारें और मद्यनिषेध कार्य

Honourable F. M. Hubbard, District Judge of the Eighth Judicial District of Iowa, in passing sentence upon some liquor dealers for violation of the prohibitory laws of the State, said :

"While there are crimes known to the law which are punishable with greater severity, there are none which involve more of those qualities known as despicable meanness and audacity than the selling of intoxicating liquors. You who stand before the Court for sentence are in every moral sense murderers, and you are within the spirit, if not the letter, guilty of man-slaughter ; for the law is that whosoever accelerates the death of a human being unlawfully is guilty of the crime. Your bloated victims upon the witness stand, who undoubtedly committed perjury to screen you from the law, not only abundantly testified that you are accelerating death, but that you are inducing men to commit still greater crimes than your own. You still maintain the appearance of respectability, but how morally leprous you are inwardly. The ruin, poverty, and idleness which you are inflicting upon this community declare as *from the house-tops, that you are living in idleness and eating the* bread of orphans watered with widows' tears ; you are stealthily killing your victims and murdering the peace and industry of the community, and thereby converting happy, industrious homes into misery, poverty, and rags. Anxious wives and mothers watch and pray in tears nightly with desolate hearts for the coming home of your victims, whom you are luring with the wiles and smiles of the devil into midnight debauchery. You are persistent, defiant law-breakers, and shamelessly boast that in defiance of the law and moral sense of the community, you will continue in your wicked and criminal practices. It has, therefore, now become the imperative duty of this Court to let fall upon you so heavily the arm of the law that you shall either be driven from your nefarious traffic or ruined in your fortunes or wicked prosperity. You have become a stench to the nostrils of the community, and all good men are praying that you be speedly reformed or summarily destroyed. By the providence of God and the favour of this Court these prayers shall be speedily answered by signal and exact justice for your crimes."

FOREWARD

Prohibition Suits the genius of Indian Society, India will demand a true and complete account from all those who would venture to depart from the programme of Social purity.

I have faith, an undying faith in the ultimate triumph of Prohibition, and so have many, who are assosiated with this movement. And faith, after all, is the only worker of miracles.

—K. M. Munshi.

"मद्यनिषेध भारतीय समाज का आभूषण है, भारत उन सब व्यक्तियों को सही तौर पर परखेगा जो समाज की इस पवित्रता से स्वयं पृथक रहने का बहाना ढूंढेंगे।

मुझे अटल विश्वास है कि मद्यनिषेध पूर्ण सफल होकर विजय प्राप्त करेगा, और ऐसी ही प्रत्येक सहयोगी की भी अभिलाषा है।"

—के० एम० मुन्शी

वक्तव्य

'मादकद्रव्य' उन पुण्य पुरुषों को सादर समर्पित है जिन्होंने महात्मा गाँधी की इस चिर प्रतीक्षित योजना को कार्यरूप में परिणत करके अपनी मिनिस्टरी को अमर यश प्रदान किया। इस यश को केवल हम ही नहीं दे रहे हैं बल्कि वे असंख्य बच्चे और स्त्रियां दे रही हैं जिन्हें उनके पुरुषों ने उन्हें भुलाकर अब फिर अपनाया है और नशे के पैसे बचा कर घर का सामान खरीदा है। उस भयानक स्थिति की कल्पना तो करिये, जब शराबी नशे की खोज में अपनी पत्नी से जेवर छीन कर और गोद में आने को लालयित सुकुमार बच्चे को ठोकर में रौंद कर बदहवाश कल्लाल की दुकान में पहुँचता है और फिर वहां से साक्षात् क्रूर और हिंसक वन पशु बन कर घर में आ पड़ता है। हाय, उस घरमें कहां से चिराग जले, कहां से चूल्हा गरम हो, कहां से तन ढका जाय ?

बम्बई में मद्य निषेध आरम्भ होने के बाद अधिकारियों ने वार्लों, नैगाँव, पोल, लालबाग इलाकों में जब बच्चों से पूछा कि अब तुम कैसे हो, तब बच्चों ने आनन्दविभोर होकर उत्तर दिया, "बहुत अच्छे, दूध मिलने लगा है, रोटी चुपड़ी जाने लगी हैं, स्कूल में पढ़ने जाने भी लगे हैं, क्योंकि इस महीने स्कूल की फीस पिता ने दे दी है।"

मद्य निषेध की सच्ची भावना से कोई इन्कार नहीं कर सकता। भारत के अतिरिक्त अमेरिका और जरमनी में भी इसके विरुद्ध आज्ञायें प्रचलित की गईं। भारत की मद्यनिषेध योजना को पूर्ण बनाने के लिये कई अँग्रेज मित्रों ने भी अथक परिश्रम किया है।

इस पुस्तक के लिखने का अभिप्राय मादकद्रव्यों के भयानक परिणामों को वैज्ञानिक ढंग पर प्रकट करना है। और मुझे आशा है कि देश के अब भी सुषुप्त शिकार इसे पढ़कर अपने जीवन को बचायेंगे।

आयुर्वेद मंदिर
देहली

—चन्द्रसेन

शराबबन्दी का अर्थ

बम्बई के आर्चबिशप ने एक पत्र तथा अपने उस भाषण की प्रति मेरे पास भेजने की कृपा की है, जो उन्होंने शराबबन्दी के विरुद्ध रोटरी क्लब में दिया था। मैंने उन दोनों को उस आदर और ध्यान से पढ़ा है, जिसके कि आर्चबिशप साहब अधिकारी हैं।

आर्चबिशप का पत्र और भाषण पढ़ने से मुझे अपनी एक भूल मालूम हो गई। इसके लिये मैं ही मुख्य रूप से जिम्मेवार हूं। शराब के व्यापार के सम्बन्ध में बम्बई सरकार या अन्य प्रान्तीय कांग्रेसी सरकारें जो कदम उठा रही हैं, उसे शराबबन्दी का नाम देना गलत है। दर असल प्रान्तीय सरकारें जो कुछ कर रही हैं, वह शराब पीने पर रोक नहीं है। वे तो सिर्फ शराब की उन दूकानों को बन्द कर रही हैं, जो पूर्णतः उनके नियन्त्रण में हैं।

शराब के दूकानदारों को जो कानूनी संरक्षण प्राप्त है,वह सिर्फ एक साल के लिये है, जो उन्हें हर साल ठेके की बोली के समय दिया जाता है। इसके अलावा, उन्हें और कोई संरक्षण नहीं मिलता। हरेक ठेकेदार जानता है कि बहुत मुमकिन है कि अगले साल उसे ठेका न मिले। अगर उसके पास देशी शराब या ताड़ी है, तब भी बहुत मुमकिन है कि हर साल होने वाली ठेके की नीलामी में कोई उससे ज्यादा बोली बोल कर ठेका लेले। इसलिये शराब के ठेकेदारों का यह कहना कि उनके स्वार्थ नष्ट किये जा रहे हैं; गलत है। ठेकेदार लाइसेंस में सिर्फ

एक साल के लिये बँधा हुआ है, इसके बाद के लिये नहीं, क्योंकि बहुत सम्भव है कि ठेका किसी दूसरे के पास चला जाये। और एक साल का स्वार्थ भी उन सख्त शर्तों के पालन पर निर्भर करता है, जिनमें कानून द्वारा वे बंधे हुये हैं। इसलिये मेरा दावा है कि योग्य अधिकारियों द्वारा बनाया गया शराब के ठेके बन्द करने का कानून सार्वजनिक हित के लिये एक सामान्य सहज उपाय है। सरकार जो कुछ करती है, वह महज इतना ही कि वह शराबी के उस प्रलोभन और सुविधा को हटा लेती है, जो उसकी राय में, सिवा औषधि-प्रयोग के हानिकर है।

बिशप साहब कहते हैं कि "जो कानून शरीर, मन और हृदय पर दबाव डालकर इन तीनों की आस्था चाहता है, वह ज़रूर उचित व न्याययुक्त होना चाहिये अर्थात् लाखों आदमी उसे उचित कहें।"

मैं इस शर्त को लागू करने में कोई कठिनाई नहीं देखता, यद्यपि जिस दृष्टिकोण से मैं इस प्रश्न पर विचार करता हूं, उससे सरकार के लिये लाखों आदमियों के हृदय देखने की जरूरत नहीं। लेकिन मैं मानता हूँ कि संसार में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां शराब व अन्य मादक पदार्थों के सरकारी व्यापार पर पाबन्दी लगाने का करोड़ों आदमी समर्थन करेंगे। इसके लिये मत लेने की जरूरत ही नहीं है। इस कानून के समर्थकों का धारासभाओं में भारी बहुमत ही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैं आर्चबिशप को इस महान सुधार के विगत इतिहास की याद दिलाना चाहता हूं। वृद्ध पितामह दादाभाई नौरोजी ने इसे शुरू किया था। १९२० में यह कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम का अङ्ग बन गया। राजनीतिक शक्ति के प्रभाव में कांग्रेस ने शराब तथा

अफीम की दूकानों पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया। इस कार्यक्रम में हजारों स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सभी समुदायों ने, जिनमें पारसी भी शामिल थे, धरने के कार्यक्रम में भाग लिया। असहयोग आन्दोलन के दिनों में भी अधिकारियों को प्रेरित कर शराबबन्दी का कानून बनवाने की कोशिश की गई। बिना किसी अपवाद के सब अधिकारियों ने इस कानून के न बनाने के लिये आर्थिक कठिनता की दलील दी। किसी ने यह नहीं कहा कि सरकार द्वारा जनता को शराब मिलने के व्यक्तिगत अधिकार में हस्तक्षेप करना अनुचित है। एक मंत्री ने तो यहां तक कहा था कि यदि आप शराबबन्दी से होने वाली आर्थिक हानि को पूरा करने में मुझे सहायता करें, तो मैं एकदम शराबबन्दी जारी कर दूंगा। यह तो आज सब जानते हैं कि आर्थिक दृष्टि के कारण ही इस सुधार को नहीं किया गया। दूसरे शब्दों में, सरकारी आमदनी बढ़ाने के लिये लोगों को शराब पीने का लालच दिया गया है। अफीम के व्यापार का काला इतिहास भी इसकी सत्यता का साक्षी है।

जो लोग व्यक्तिगत स्वाधीनता के नाम पर बातें करते हैं, वे हिन्दुस्तान को नहीं जानते। एक व्यक्ति को अपनी विषय-वासना तृप्त करने के लिए राज्य से वेश्या मुहय्या करने की सहूलियतें मांगने का जितना अधिकार है, उससे अधिक अधिकार किसी को शराब पीने की सहूलियतें मांगने का नहीं है। मुझे उम्मीद है कि जो लोग अपने शराब के मितपान पर गर्व करते हैं, वे इस उदाहरण पर बुरा नहीं मानेंगे। इस देश में इस बुराई को नियंत्रण में रखने के लिए कानून के अभ्यस्त नहीं हैं, जर्मनी जैसे देश में सतीत्व बेचने वाली वेश्याओं के मकानों के लिए

लाइसेंस लेना पड़ता है। मैं नहीं जानता कि उन देशों में किस बात पर अधिक नाराजगी प्रकट की जायगी—बदनाम औरतों के मकानों के लाइसेंस बन्द करने पर, या शराबखानों के लाइसेंस बन्द करने पर ? जब वहाँ की महिला अपने गौरव को समझने लगेगी, वह अपने सतीत्व को बेचने से इन्कार कर देगी। वे महिलाएं जिन्हें कि स्त्री जाति के सम्मान का ख़याल है, कानून-सम्मत व्यभिचार को उड़ा देने के लिए ज़मीन-आसमान को हिला देंगी। तब क्या यह कहा जायगा कि वेश्यागृहों का लाइसेंस बन्द करने से वेश्याओं को हानि पहुँचेगी, क्योंकि उनके तथा उनके परिवार के गुज़ारे का एकमात्र साधन यही था ?

मेरी दलील यह है कि समाज-सुधारक तब तक अपने प्रचार में सफल नहीं हो सकते, जब तक कि लाइसेंसशुदा शराबखाने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करते रहेंगे। यह भी एक विचित्र बात है कि तमाम हिन्दुस्तान में शराबबन्दी के बरखिलाफ़ सिर्फ पारसियों ने ही आवाज़ उठाई है। वे अपने संयम पर अभिमान करते हैं और जिसे वे अपने व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य पर आक्रमण कहते हैं, उस पर रोष प्रकट करते हैं। उनकी एक यह भी शिकायत है कि यूरोपियनों को शराब पीने की सहू-लियतें दी गई हैं और इस तरह एशियावासियों के साथ भेदभाव का प्रतिबन्ध लगाया जाता है। मैं पहले ही पारसियों से अपील कर चुका हूँ कि वे अपने स्वभाव को कुछ ऊँचा उठायें और असली सहयोग से इस महान् सुधार को आगे बढ़ायें। भेदभाव के प्रतिबन्ध के बारे में मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि ऐसा प्रतिबन्ध बाहर से लगाया जाता

है। इस मामले में तो हम एशियावासी अपनी इच्छा से ही यूरोपियनों की मर्यादा स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन उन्हें भी छूट का परवाना लेना पड़ेगा और नियमों का पाबन्द रहना पड़ेगा। पारसी मित्र यदि कहते हैं, तो उनके लिए उचित मार्ग यह है कि वे भेदभाव हटाने के लिए आन्दोलन करें, न कि खुद भी वैसी ही छूट पाने की कोशिश करें।

आर्चबिशप ने एक और दलील दी है। शराबबन्दी से जिस फायदे की कोशिश की जा रही है, क्या उससे शराबी के आगे से प्रलोभन हटाने का मूल्य ज्यादा तो नहीं देना पड़ता? अगर ज्यादा मूल्य देना पड़ता है, तो वह सुधार हानिकर है। उनकी यह दलील वज़न रखती है। लेकिन यह तो अपनी-अपनी राय का सवाल है कि फायदे से मूल्य अधिक है या कम? मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि तमाम आबकारी नीति का आधार आमदनी बढ़ाना है, न कि कोई भारी ज़रूरत पूरी करना।

मैं आर्चबिशप से आबकारी के प्रबन्ध का इतिहास पढ़ने की प्रार्थना करूँगा। वे यह देखेंगे कि असेम्बली व कौंसिल के सभी प्रगतिशील सदस्यों ने इस नीति की कठोर से कठोर निन्दा की है। अगर हम इस इतिहास को अपने सामने रखें, तो हमें मालूम होगा कि जिस महान् लाभ की हम कोशिश कर रहे हैं, उसके मुकाबले हम बहुत थोड़ा मूल्य दे रहे हैं। और यह साधारण-सा मूल्य भी न देना पड़े, अगर आर्चबिशप तथा दूसरे प्रभावशाली पादरी मित्र फौज पर होने वाले भारी खर्चे को, जिसे किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता, कम करने का व्यापक आन्दोलन करें, ताकि समस्त देश में शराबबन्दी जारी करने के

लिए रुपया बचा सकें। यह एक ऐसा सुधार है, जो बहुत दिन पहले हो जाना चाहिए था। उन्हें बम्बई के मन्त्रियों को बधाई देनी चाहिए कि उन्होंने ऐसा टैक्स लगाया है कि जिसे आसानी से बरदाश्त किया जा सकता है। लेकिन मुझे इस बात में भी कोई शक नहीं है कि मंत्रिमंडल इस टैक्स को छोड़ देगा, अगर केन्द्रीय सरकार उसकी मदद करे। मन्त्रिमण्डल सुधार में भी देरी नहीं कर सकता, जबकि वह अकेला ही केन्द्रीय सरकार से टक्कर ले रहा है। सब दल सुधार की जरूरत को समझें और केन्द्रीय सरकार से न्याय की मांग करें, तब आर्चविशप साहब ने जो कठिनता बताई है, वह जरा भी न रहेगी।

डाक्टर गिल्डर से एक विचित्र प्रश्न किया गया है। आर्चविशप के साथ न्याय करने के लिये उनका सवाल उन्हीं के शब्दों में दे रहा हूं—"क्या वे (डा० गिल्डर) यह जानते हैं कि बहुत से ऐसे नशे भी हैं, जिनका पीने से कोई सम्बन्ध नहीं है ? पियक्कड़पन बुद्धि को हर लेता है और घरों को नष्ट कर देता है। लेकिन झूठे आदर्शों का नशा सारी जातियों और संसार को तबाह कर रहा है। फिर क्या डा० गिल्डर यह भी मानते हैं कि ऐसा नशा ज्यादा नुकसानदेह और छुतहे रोगों की तरह ज्यादा फैलने वाला है ? वे राष्ट्रों का आधुनिक इतिहास जानते हैं और इसलिये इससे इन्कार शायद ही करें। तब क्या वे यह बतायेंगे कि क्या भारतवर्ष झूठे आदर्शों के नशे की छूत से सर्वथा मुक्त है ?"

इसका अर्थ यह हुआ कि सरकार अगर शराब की दूकानों के लाइ-सैंस को खत्म कर देने के अपने असंदिग्ध अधिकार का प्रयोग करती है, तो यह भी एक झूठा आदर्श है। इससे भी आदमी मदोन्मत्त हो

जाता है और डा० गिल्डर भी इस नशे के शिकार हैं ! यह ठीक है कि संसार में सब कुछ सम्भव है, लेकिन मैं यह कहने का साहस करता हूं कि पिछली आधी सदी से राष्ट्र शराबबन्दी की जो पुकार कर रहा है, उसका आधार झूठा, मादक और छूत की बीमारियों की तरह फैलने वाला आदर्श नहीं हो सकता । जो आदर्श झूठा, मादक और छूतहा है, वह कभी अस्थायी नहीं हो सकता, वह हमेशा स्थायी ही होगा ।

भाषण के अन्तिम अंश में मुझे सम्बोधन करके एक सवाल पूछा गया है । करीब छः पंक्तियों में ऐसे सुझाव पेश किये हैं, जो असली सवालों को छूते ही नहीं हैं । दूसरे सुझावों के साथ आर्चबिशप ने एक यह भी सुझाव पेश किया है कि शराबबन्दी के समर्थक इसे एक सम्भव मार्ग न कहकर "एकमात्र सम्भव धर्म मानते हैं ।" किसी ने भी शराब-बन्दी को धर्म नहीं कहा । यह प्रस्तावना बांधकर आप कहते हैं कि— "मुझे आशा है कि धर्म और सत्य के ध्येय के प्रवर्तक इस प्रश्न पर बुरा न मानेंगे । क्या अब भी उन्हें यह निश्चय है कि सब धर्म सच्चे हैं ?" अगर किसी और शख्स ने यह सवाल किया होता तो मैं उसे माफ न करता और जवाब देने की जरूरत भी न समझता । लेकिन बम्बई के लाटपादरी जैसे कार्य-व्यस्त प्रबन्धकर्त्ता से मैं यह उम्मीद नहीं कर सकता कि वे मुझ जैसे व्यक्ति जो कुछ कहते हैं, वह सब अच्छी तरह पढ़ेंगे या किसी उद्धरण की सत्यता जानने की कोशिश करेंगे । मैंने जो कुछ कहा है, उससे मेल खाते हुये उनको यह सवाल करना चाहिये था कि—"क्या गांधी को अब भी विश्वास है कि इस दुनियां के तमाम बड़े धर्म एक समान सच्चे हैं ?" इस संशोधित प्रश्न का मेरा उत्तर

यही होता कि "हां, निश्चय रूप से।" आर्चबिशप के लेख के समग्र विषय के साथ अकेला यह सवाल बिलकुल मेल नहीं खाता।

उनके पत्र में एक वाक्य है, जिसने मुझे कुछ चिन्ता में डाल दिया है। "पिछले कुछ महीनों ने मुझे क़ायल कर दिया है कि बम्बई में पुण्य कार्यों को एक जबर्दस्त धक्का पहुँचने वाला है।"

लाटपादरी की ये सब धारणायें भी, मेरा खयाल है, जैसा कि मैं सिद्ध कर चुका हूं, असिद्ध कल्पनाओं पर आश्रित हैं। मैं उनके इस आरोप का प्रमाण चाहता हूं। यदि पुण्यकर्मों को दरअसल धक्का पहुंचाये जाने की बात है, जैसाकि कहा गया है, तो मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वे मंत्रियों के सामने इसके प्रमाण पेश करें। मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि वे जल्दी ही गलतियों को सुधार लेंगे।

आर्चबिशप के पत्र का आखिरी पैराग्राफ उनके उच्च पद के बिलकुल योग्य है। सिर्फ उसमें एक कमी है कि उन्होंने अपने सहयोग को शर्तों के साथ बाँध दिया है। वे अपने साथियों और शिष्यों के साथ बग़ैर किसी शर्त के पूर्ण शराबबन्दी के समर्थक हो जायें और शराबबंदी के इस पुण्यकर्म में हमारी सहायता करें। इस तरह वे कानून बनाने वालों के काम को हलका कर देंगे और इस देश में, जहां लाखों मूक भारतीयों का अन्तःकरण शराबबन्दी के पक्ष में है और जो देश दरअसल शराबबन्दी का अधिकारी है, शराब के व्यापार को नष्ट करने में सहायता देंगे।

२४ जून १९३९
हरिजन से,

—मो० क० गांधी

पहला खण्ड

अध्याय पहला

मद्य वर्णन

प्रकरण १

मद्य कथा

बौद्ध ग्रन्थों में एक मद्य कथा इस प्रकार वर्णित है:—

एक दिन प्रभु संसार के सब जीवों पर दृष्टिपात कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक राजा जिसका नाम सर्वमित्र है खूब मद्य सेवन कर रहा है। उसके साथ उसके मन्त्रिगण और प्रजाजन भी मद्य के प्याले कण्ठ से उतार रहे हैं और महा पापाचार हो रहा है। प्रभु ने कहा, हाय! हाय!! इन मनुष्यों पर यह कैसा अभिशाप है! मद्य पीने में तो मधुर है परन्तु इसका परिणाम कैसा भयानक है! इन सब का विवेक नष्ट हो गया है, मुझे यह अनाचार क्यों दीखा! यदि यह राजा सुधर जाय तो शेष प्रजाजन भी सुधर जायेंगे।

ऐसा विचार कर प्रभु ने ब्राह्मण का रूप धारण किया। उनका रंग स्वर्ण की भांति दीप उठा, उन्होंने वल्कल वसन और मृगछाला शरीर पर परिधान किये और एक सुराही में मद्य भर कर अपने कंधे पर लटका ली। इस भेष में वे सर्वमित्र के सम्मुख दृष्टिगोचर हुए। उस समय राजा अपने दरबारियों के साथ मद्य चर्चा में लीन था, उन सबने प्रभु के तेज को देख कर उन्हें नतजानु हो करबद्ध प्रणाम किया। प्रभु

ने जलद गंभीर स्वर में कहा, "देखो, पुष्पों से आच्छादित इस सुराही में ऊपर तक सुगन्धित मधुर मद्य भरी हुई है, तुम में से कौन इसका ख़रीदार है? यह सुराही कण्ठहार की भाँति सुसज्जित है, देखो तो, कैसी प्रिय है। तुममें से बताओ कौन इसका मूल्य दे सकता है?"

राजा के नेत्र उस सुराही पर अटक गये, उसने करबद्ध हो प्रभु से कहा, 'आप प्रभात् के सूर्य की नाईं प्रतीत हो रहे हैं, पूर्ण चन्द्रमा की नाईं आपकी शोभा है, और आपका दिव्य वेश मुनियों जैसा है। आपको हम किस नाम से सम्बोधित करें?'

प्रभु ने उत्तर दिया, 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे जान जाओगे कि मैं कौन हूं, परन्तु पहले मुझसे इस सुराही के खरीदने का सौदा करो। कम से कम तुम तो परलोक की व्याधियों और कष्टों से नहीं डरते होगे।'

राजा ने निवेदन किया, "श्रीमान् की सभी बातें अद्भुत हैं, मैंने आज से पहले ऐसा व्यवहार कभी नहीं देखा। अपनी वस्तु के दोषों को कोई प्रकट नहीं करता। हे देव, कहिये इस सुराही में क्या पदार्थ है और आप इसे वेचने का नाट्य क्यों कर रहे हैं?"

प्रभु बोले, 'सुनो, राजन्! इसमें न जल है, न मेघों की अमृत बूंदें हैं, न यह किसी पवित्र स्रोत की पुनीत धारा है, न इसमें सुगन्धित पुष्पों का सार मधु है, न पारदर्शी घृत है, और न ही दूध है जो शरद चन्द्र किरणों की मधुरिमा से युक्त हो। नहीं, नहीं इस सुराही में पिशाचिनी मद्य है। इस मद्य के गुण सुनो: जो इसका पान करेगा उसे अपनी सुध-बुध न रहेगी, वह नशे में मतवाला होकर भोजन के बदले विष्ठा भी खा

सकेगा। ऐसी यह मद्य है, इसे खरीद लो, इतनी निकृष्ट यह सुराही बिकी ही के लिये है।

इस पदार्थ में तुम्हारा समस्त ज्ञान और विवेक नष्ट कर देने की शक्ति है, जिससे तुम अपनी विचारधारा पर अधिकार न रख कर एक वनपशु की भांति व्यवहार कर सको। तुम्हारे शत्रु तुम्हारी दशा की हसी उड़ायेंगे। तुम इसे पीकर खूब नाच भी सकते हो, गा भी सकते हो। यह मद्य अवश्य तुम्हारे खरीदने योग्य है। इसमें एक भी अच्छे गुण नहीं हैं।

इसके पीने से तुम्हारी लाज भावना जाती रहेगी। तुम नंगे भी रह सकते हो। लोगों का समुदाय तुम पर थूके भी तब भी तुम्हें प्रतीत न होगा। वे तुम पर गोबर, कीचड़, कंकर पत्थर उछालें तब भी तुम न जान सकोगे। ऐसी मद्य को मैं तुम्हारे पास बेचने के लिये लाया हूँ।

जो स्त्री इसका सेवन करेगी, वह मदान्ध होकर अपने माता पिता को रस्सियों से बांध कर और कुबेर सदृश पति को भी ठुकरा कर पतन के गड्ढे में प्रसन्नता से जा गिरेगी। ऐसी यह मद्य है।

इसने अनेक सम्पन्न परिवारों को नष्ट किया है, सुन्दर स्वर्ण शरीरों को चिताओं पर जला कर भस्म किया है, राजमहल और सम्राटों को धूल में मिलाकर श्वान समान पददलित किया है फिर भी इसकी तृष्णा नहीं बुझती। ऐसी प्रलयकारी यह मद्य है।

इसे जिह्वा पर रखते ही मन मलिन हो जाता है, जीभ ऐंठ जाती है। खूब हंसो, खूब बको, कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। उसमें असत्य भाषण करने का साहस आ जाता है, वह सत्य को असत्य और असत्य को

सत्य समझने लगता है। इस मदान्ध करने वाली वस्तु के स्पर्श मात्र से ही पाप लगता है, बुद्धि मलिन होती है, कष्ट और व्याधि बढ़ती हैं। जो समस्त अपराधों की जननी है, जो उज्ज्वल मन का भयानक अंधकार हैं, जिसकी तीक्ष्ण ज्वाला शीतल हृदय पर सदैव धधक धधक कर दहकती रहती है। जो इसके प्रभाव में होकर अपने माता पिता, स्त्री, भगिनी, भ्राता और बच्चों का हंसते २ वध कर सकता है, ऐसी यह मद्य है। हे प्रजा के राजा, यह पेय तुम्हारे प्रतापी कण्ठ से नीचे उतरने योग्य है तुम इसे खरीद कर पान करो।

इस मद्य को ज़रा देखो तो, इसका माणिक की भाँति हल्का लाल रंग है। सुन्दरियों की उंगलियों का स्पर्श पाते ही इसकी मादकता और भी तीव्र हो उठती है। इसे पीकर मनुष्य पशु बन जाता है, यही नर्क है।"

प्रभु ने मद्य का यह बखान करके चारों ओर देखा। सब स्तब्ध थे। उस नीरव दरबार में एकाएक गर्जन हुआ, राजा ने उठकर अपने मद्य पात्रों को बड़े वेग से दीवार से टकरा कर चूर चूर कर डाला। और 'हाय! पिशाचनी, मायावयी, मद्य, तू जा। जा। मुझे छोड़।' कह कर प्रभु के चरणों में गिर पड़े।

प्रकरण २

प्राचीन भारत में मद्यनिषेध

शुक्राचार्य पहिले व्यक्ति थे जिन्होंने मद्यनिषेध की आवाज़ उठाई थी। मनु ने मद्यनिषेध के लिये अत्यन्त कठोर नियम बनाये थे। उनका कहना था कि किसी भी राजा के राज्य में शराबी होना भयंकर कलंक है। जो शराब पीते थे उन्हें उसका त्याग करना पड़ता था। उनके सिर पर एक तिकोनी टोपी रहती थी जिससे उन्हें पहचाना जा सकता था। वे जब तक प्रायश्चित नहीं कर लेते थे उन्हें समाज और मित्रों से बहिष्कृत रखा जाता था। वे कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं कर सकते थे। मनु को इतनी ही दण्ड व्यवस्था से सन्तोष न था। जो स्त्री शराब पीती थी वह गृहस्थी के पद से च्युत कर दी जाती थी, उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका एक भी मृतकर्म नहीं किया जा सकता था। मृत्यु समय ब्राह्मण उसे श्राप देते थे कि तू अगले जन्म में गीदड़ अथवा अन्य किसी नीच पशु योनि में जन्म ले। जन्म न ले तो नर्क में पड़ी सड़ती रहे। मनु ने इन नियमों को कागज पर लिख कर और विधान बना कर ही नहीं छोड़ दिया बल्कि तत्परता से पालन कराया। यदि किसी विद्यार्थी को शराबी अपने हाथ से छूकर भोजन की भिक्षा दे देता था तो विद्यार्थी को वह भोजन खाना वर्जित था. उसके खा लेने पर उसे दण्डित किया जाता है। यदि किसी कल्लाल से ऋण धन लेना होता था तो उससे शराब की बिक्री का रुपया नहीं लिया जाता था, उस रुपये

को छू लेने पर भी दण्ड मिलता था। मनु देव पूजा में सोमरस आदि मद्य-पदार्थों के अर्चन को भी अपराध समझते थे। इसलिये सोमरस का बेचने वाला नीची श्रेणी में (शूद्रों में) गिना जाने लगा।

मनु के बाद अपस्तम्ब और गौतम ने भी मद्यनिषेध के लिये कठोर से कठोर नियम बनाये थे। अपस्तम्ब ने तो यह घोषणा कर दी थी कि तमाम मादक द्रव्यों का पीना वर्जित है। और जो कोई भी शराब पियेगा उसका एकमात्र प्रायश्चित यही है कि वह इतनी अधिक गरमागरम शराब पिये कि पीते पीते उसका प्राणान्त हो जाय। गौतम का सिद्धान्त था कि एक शराबी ब्राह्मण शराब पीने के पाप से केवल मृत्यु के बाद ही मुक्त हो सकता है। शराबी को शराब का त्याग करके प्रायश्चित करना पड़ता था जिसमें उसे पहले तीन दिन तक गरम गरम दूध, गरम घी और गरम पानी पीना पड़ता था। उसे साँस भी गरम हवा में लेना पड़ता था।

मनु ने लोगों के इस अन्धविश्वास को कि मद्य अर्चन से देवता प्रसन्न होते हैं अथवा हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थ मादक द्रव्यों के पीने का निषेध नहीं करते हैं दूर करने की बहुत चेष्टा की थी। उन्होंने दृढ़ता-पूर्वक मद्य व्यसन को बुरा कहा।

प्राचीन काल में दस प्रकार की शराबों का वर्णन है जो इन पदार्थों से बनाई जाती थीं:—(१) खाँड (२) महुआ के खिले हुये फूल (३) आटा (४) राब, शीरा (५) टंका वृक्ष के फल (६) जुजुबे वृक्ष के फल (७) कारागुरा वृक्ष के फल (८) रोटफल वृक्ष के फल (९) अंगूर (१०) नारियल वृक्ष का दूध।

पुलस्त्य ऋषि इन नामों से पृथक बारह नाम और गिनाते हैं। (१) पनस मद्य। इसके बनाने की विधि मत्स्यसुक तन्त्र में लिखी है, कच्चे पनासा को एक पात्र में रख कर नित्य कच्चे दूध की धार उस पर डालो, उसमें थोड़ा कच्चा माँस बारीक करके प्रति तीसरे दिन मिलाते जाओ। इसमें भांग की हरी पत्तियां भी डालो। खाने का चूना बुरको। और जब यह भली भांति सड़ जाय तब छान कर सुराहियों में भर कर रक्खो। (२) मधुका। शहद से बनती थी। (३) तला। ताड़ से बनती थी। (४) ऐन्नुवा (५) सैरा। काली मिर्च से बनती थी। (६) आरिष्ठ (७) सुरा, वरुणी, पैष्टी आदि।

प्रकरण ३

बुद्ध की अहिंसा और मद्य

बौद्ध काल से प्रथम ब्राह्मणों का सर्वत्र मान था। वे जैसा कहते थे राजा रंक सभी उसे मानते थे। वे यज्ञों में पशु बलि और मद्य का भी उपयोग करते थे। बुद्ध ने हिंसावृत्ति को बुरा बताया। उसने मद्यपान को दोष कहा। उसके असंख्य शिष्यों ने इन आज्ञाओं को शिरोधार्य करके उनका प्रचार किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासन में मांस खाना, मद्य पीना, बुरे आचरण करना, असत्य बोलना अपराध घोषित कर दिये थे।

कौटिल्य ने मद्यपान की दुकानों पर उत्तम स्वादिष्ट भोजन रखवा दिये। जब कोई व्यक्ति मदिरालय में पहुंचता था तो उसे पहले सुगन्धित फूलों के बीच में सजा कर भोजन पात्र पेश किया जाता था। ये भोजन प्रत्येक ऋतु के अनुसार अलग २ भांति के होते थे, और इनका मूल्य बहुत ही सस्ता होता था। वह व्यक्ति इस पात्र को ही ग्रहण करता था और शराब का व्यसन उससे छूटता जाता था। ब्राह्मणों को तो मद्य छूने में भी दण्ड दिया जाता था। जो धनिक व्यक्ति शराब की दुकान पर आता था, उसकी सम्पत्ति, उसके कण्ठहार, कुण्डल, अंगूठी आदि आभूषणों की जांच की जाती थी। यदि वह चोरी की सिद्ध होती तो दुकानदार को भी उस आभूषण के मूल्य के बराबर अर्थ दण्ड दिया जाता था।

सम्राट अशोक ने चन्द्रगुप्त के कार्य को पूर्ण रूप से पूरा किया। वह स्वयं भी मद्य पीने वालों की निगरानी रखता था। उसने अपनी राजसत्ता का प्रयोग बौद्ध धर्म के नियमों को पालन कराने में किया। उसने अपने शासन के तीस वर्षों में मद्य और मांस का बहुत कठोरता से दमन किया। आज हिन्दुओं में जो इतनी शुद्धता और पवित्रता देखने में आती है यह उसी का परिणाम है। यह सुधार इतनी दृढ़ता से किया गया था कि अशोक के बाद सैकड़ों वर्ष तक भी मद्य और मांस व्यापक नहीं हो सके। जब सन ३९९ ईस्वी में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान भारत में आया तब उसने बहुत प्रसन्न होकर अपनी यात्रा में यह लिखा है कि इस देश के निवासी न जीव हत्या करते हैं न मद्य अथवा मादक पदार्थ का सेवन करते हैं। वे मृत जीवों का व्यवसाय भी नहीं करते। मद्य की कोई दुकान मुझे नहीं दीखी। दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री हुआनस्यांग भारत में सन् ६३० में आया था और १६ वर्ष तक यहां रहा, अपनी यात्रा में लिखता है कि मैंने राजा हर्ष से लेकर साधारण किसान तक के जीवन का समीप से अध्ययन किया है, मैंने सबको शुद्ध पवित्र और मितव्ययी पाया। यह सब बुद्ध के अहिंसा धर्म का प्रताप था।

बुद्ध ने कहा कि वेश्या और सुरापान दोनों ही अप्रिय हैं, दोनों ही त्याज्य हैं। वेश्या धन का और सुरा परिवार का हरण करके मनुष्य को ऐसा बना देती हैं कि उसका मूल्य शून्य जितना भी नहीं रह जाता। मनुष्य समाज के कल्याण के लिये नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से इस अभिशाप का अन्त करना ही चाहिये। संसार में यह मनुष्य मात्र का प्रसिद्ध शत्रु है जो प्रलोभन का हेतु है।

मनुष्यों तुम, सिंह के सम्मुख जाते भयभीत न होता—वह पराक्रम की परीक्षा है, तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना—वह बलिदान की कसौटी है, तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ने से भयभीत न होना—वह तप की साधना है, तुम दहकती ज्वालाओं से विचलित न होना—वह स्वर्ण परीक्षा है; पर सुरा देवी से सदैव भयभीत रहना, क्योंकि यह पाप और अनाचारों की जननी है।

जिस राजा के राज्य में सुरा देवी आदर प्राप्त करेगी वह राज्य काल वेदि पर नष्ट होगा। वहां न औषधि उपजेंगी, न अनाज होगा, न वृष्टि होगी। यह महा हिंसा है।

प्रकरण ४

मुस्लिम राज्यों में मद्यनिषेध

अब से हज़ार वर्ष प्रथम नवीं शताब्दी में अरब का प्रख्यात सौदागर सुलेमान जब भारत में आया तो उसने देखा कि भारत में कहीं भी शराब की दुकान नहीं है। उसने यह बात बड़े आश्चर्य से अपने यात्रा विवरण में लिखी है। मुग़ल सम्राट औरंगजेब के समय में प्रसिद्ध फ्रांसीसी डाक्टर बर्नियर ने, जो औरंगज़ेब के दरबार में बहुत दिन रहा था, स्पष्ट लिखा है कि दिल्ली में शराब की एक भी दुकान नहीं थी।

बादशाह जहांगीर ने शराब के विरुद्ध घोषणाएँ प्रकटित की थीं। पहला योरोपियन यात्री वास्कोडिगामा जब भारतीय तट पर जहाज से उतरा तब उसने भी भारत को शराब से रहित पाया।

अलाउद्दीन ख़िलजी को एक दिन अपने पापों, दुष्कर्मों और क्रूरता पर इतना पश्चाताप हुआ कि उसने इन सब की जड़ को शराब समझा। वह बहुत शराब पीता था। उसने तुरन्त ही सेवकों को आज्ञा दी कि मेरी शराब की सुराही लाओ। सुराही सामने आने पर उसने बड़े क्रोध से उसे ज़मीन पर दे मारा। इसके बाद उसने महल के तमाम क़ीमती प्याले और सुराहियों को मंगवाकर अपने सामने तोड़ डालने की आज्ञा दी। इतिहासकार लिखता है कि बदायूं दरवाज़े पर कीमती और लज़ीज़ शराब को बहा दिया गया और बर्तनों को तोड़ फोड़कर नष्ट कर दिया गया। उस स्थान में ऐसी कीचड़ हो गई जैसे कि मेंह बरसने के बाद

हो जाती है। वहीं पर बड़े २ गड्ढे खोदे गये और शराब पीने वालों को उनमें गाड़ दिया गया। उन पर ऐसी क्रूरता की गई कि बहुत से तो तुरन्त मर गये। इस घटना से लोगों ने शराब पीनी छोड़ दी।

अकबर ने शराब के विरुद्ध आदेश कर दिये थे। कुरान में शराब पीने की आज्ञा नहीं है हिन्दू, पारसी, ईसाई सभी की धर्म पुस्तकों में शराब की निन्दा लिखी है। जिस प्रकार शराबी मनुष्य हिन्दु धर्म में द्विज नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार शराबी मुसलमान शरअ की रू से मुसलमान नहीं कहा जा सकता। मुग़ल सम्राट औरंगजेब के समय में, प्रसिद्ध फ्रांसीसी डाक्टर बर्नियर ने जो औरंगजेब के दरबार में बहुत दिन रहा था, स्पष्ट लिखा है कि दिल्ली में शराब की एक भी दुकान न थी। वह लिखता है, 'मदिरा' जो हमारे यहाँ भोजन का प्रधान अंग है, दिल्ली की किसी भी दुकान में नहीं मिलती। जो मदिरा यहाँ देसी अंगूर की बन सकती है, वह भी नहीं मिलती; क्योंकि मुसलमानों की कुरान और हिन्दुओं के शास्त्रों में उसका पीना वर्जित है। मुग़ल राज्य में भी जो मदिरा शीराज़ वा कनारी टापू से आती है, अच्छी होती है। शीराज़ी मदिरा ईरान से खुश्की के रास्ते—'बन्दर अब्बास' और वहाँ से जहाज द्वारा सूरत में पहुंचती और फिर वहां से दिल्ली आती है। शीराज से दिल्ली तक मदिरा आने में कई दिन लगते हैं। कनारी टापू से मदिरा सूरत होती हुई दिल्ली आती है। पर यह दोनों मदिरायें इतनी मँहगी होती हैं कि इनका मूल्य ही इन्हें बदमज़ा कर देता है। एक शीशी पन्द्रह या अठारह रुपये में आती है। जो मदिरा इस देश में बनती है, जिसे ये लोग 'अर्क' कहते हैं वह बहुत ही तेज़ होती है। यह भभके से

खींचकर गुड़ से बनाई जाती है और बाज़ार में नहीं बिकने पाती। धर्म के विरुद्ध होने के कारण अंग्रेजों व ईसाइयों के अतिरिक्त इसे कोई नहीं पी सकता। यह अर्क ठीक वैसा ही है जैसा कि पोलैण्ड के लोग अनाज से बनाते हैं और जिसे परिमाण से ज़रा भी अधिक पी जाने से मनुष्य बीमार पड़ जाता है। समझदार आदमी तो यहां सादा पानी पियेगा, या नीबू का शरबत, जो यहां सहज़ ही मिल जाता है और जो हानिकारक नहीं होता। इस गर्म देश में लोगों को मदिरा की आवश्यकता नहीं होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते रहने के कारण यहां के लोग सर्दी, बुखार, पीठ का दर्द आदि अनेक रोगों से बचे रहते हैं।

मुग़लों के राज्य का पतन कुछ बादशाहों की बढ़ती शराबपरस्ती ही थी! इतिहास में इसकी एक झलक मिलती है:—बहादुरशाह के पोते मुहम्मदशाह दिल्ली के तख़्त पर राज्य करते थे। यह वह समय था जबकि नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया, वह पश्चिम के मार्ग से भारत के प्रान्तों को लूटता हुआ दिल्ली तक आ धमका। उसने दिल्ली के निकट पहुंच कर बादशाह को लिखा, 'दो करोड़ रुपये दो वरना दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दूंगा।'

जब यह दूत दरबार में पहुंचा तो बादशाह शराब पी रहे थे और शेरें तथा गजलें गाई जा रही थीं। बादशाह स्वयं अपनी कवितायें सुना रहे थे, और अमीर उमरा उन्हें 'कलामुल्मुलूक लूकुलकलाद' कह कर झुक-झुक कर सलामें झुका रहे थे। दूत ने खत दिया तो बादशाह ने वज़ीर से कहा, 'पढ़ो क्या है?' वजीर ने पढ़ा और कहा, 'हुज़ूर ऐसे गुस्ताख़ी

के अल्फ़ाज़ हैं कि जहांपनाह के सुनने क़ाबिल नहीं।' बादशाह ने कहा, 'ताहम पढ़ो'। खत सुनकर कहा, 'क्या यह मुमकिन है कि यह शख्स दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दे?' खुशामदी दरबारियों ने कहा, 'हुजूर कतई नामुमकिन है।' तब बादशाह ने हुक्म दिया, 'यह खत शराब की सुराही में डुबो दिया जाय और इसके नाम पर एक एक दौर चले।' जब दौर खतम हुआ तो दूत ने कहा, हुजूर बन्दे को क्या इरशाद है?' बादशाह ने हुक्म दिया, 'पांच सौ अशर्फी और एक दुशाला इसे इनाम में दिया जाय।'

दूत चला गया और नादिरशाह तूफान की भांति दिल्ली में घुस आया। उसने तीन दिन तक कत्लेआम किया और असंख्य हीरे जवाहरात लूट ले गया। वह तख्तेताऊस भी लूट ले गया। इस लूट में उसे तख्त के अलावा दस करोड़ का माल मिला था!!!

प्रकरण ५

ईस्ट इण्डिया कम्पनी और मद्य

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में शराब को अधिक प्रोत्साहन मिला। एक तो कम्पनी के कर्मचारी ही स्वयं खूब शराब पीते थे, दूसरे इससे आबकर की बड़ी भारी आमदनी थी। आमदनी के लालच में कम्पनी ने शराब को प्रचारित करने के लिये नये २ उपाय किये, जनता को उत्साहित किया और इसके प्रचार को रोकने में तनिक भी नियन्त्रण करने की चेष्टा नही दिखाई। तबसे अब तक ईस्ट इण्डिया का शासन उठ जाने के बाद भी भारत सरकार ने कांग्रेसी मिनिस्टरी से प्रथम शराब के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई।

भारत के किसी भी स्वतन्त्र या उच्छृङ्खल राजा के मन में शराब की दुकान खोलकर अपने ख़जाने को भरने की सूझ नहीं हुई थी। इस अनोखी विचार सृष्टि का श्रेय केवल अंग्रेज सरकार को ही है, जो बिना संकोच कह सकती है कि उसकी बड़ी आमदनी के ख्याल ही से उसकी बिक्री कम नहीं की जायगी।

अब से सौ सवा सौ वर्ष पहले जब सरकार को पता लगा कि ताड़ी का व्यवहार नीच जातियों में ज्यादा बढ़ रहा है, तब उसने ताड़ी के प्रत्येक पेड़ पर टैक्स लगा दिया, धीरे धीरे इस आमदनी पर उसका जी ललचाया। उसने ज़िले में आबकारियां खोलीं और उनकी मालिक बन बैठी। बिशप जॉन हर्स्ट ने इस विषय पर लिखा है—'सरकार

आबकारियों की पूंजीपति बनी, उसने शराबख़ाने बनवाए। शराब बनाने के लिये आवश्यक वर्तनों की व्यवस्था की। ख़ास शराब के लिये ही पुलिस तैनात की। शराब का काम देशी ठेकेदारों को दिया गया।'

पर इतना होने भर भी सरकार को सन्तोष नहीं हुआ। वह इस धंधे से अधिक रुपया कमाना चाहती थी। इसी समय मिस्टर सी० टी० बकलैंड ने अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया। उन्होंने आबकारियां बन्द करदी, अब शराब बनाने वेचने का काम ठेके पर नीलाम किया जाने लगा। ज़िला मजिस्ट्रेट उस अधिकार का नीलाम करने लगे, सबसे अधिक रुपया देने वाले को इच्छानुसार शराब बनाने और वेचने का अधिकार मिलने लगा।

अब सरकार को कुछ सन्तोष हुआ, क्योंकि सरकारी ख़ज़ाने में धुंआधार रुपया आने लगा था। यह व्यवस्था सन् १८७८ में की गई। सन् १८७३ और ७४ में आबकारी विभाग की वार्षिक आय ३ करोड़ ७४ लाख रुपया थी, सन् १८७८-७९ में एक ही वर्ष में ४ करोड़ हो गई। सन् १८८७ में यह आय ६ करोड़ ३९ लाख ९ हज़ार हो गई। और १९०८ में ९ करोड़ ८८॥ लाख थी।

किन्तु प्रजा पर इसका क्या प्रभाव हुआ? आबकारियों की संख्या में भयंकर वृद्धि हुई, उनमें अपरिमित शराब तैयार होने लगी। मुंगेर के ज़िले में पुरानी व्यवस्था के अनुसार प्रति दिन ५०० गैलन शराब बनती थी; अब १५०० गैलन नित्य बनने लगी। शराब की इस प्रचुरता ने भारत की क्या दशा की है उसका वर्णन हृदय को हिला देने वाला है। ब्राह्मण से लेकर भंगी तक और बड़े ओहदेदारों से लेकर कुली तक

सभी शराबी बन गये हैं। स्वर्गीय केशवचन्द्रसेन ने एक बार कहा था कि १० शिक्षित बंगालियों में ९ छिप कर शराब पीते हैं। बिना शराब का प्याला ढाले मित्रों की सोसायटी में मज़ा नहीं आता। मुसल्मानों की श्रद्धा कुरान से उठ गई है, अब उच्च श्रेणी के मुसल्मानों में बिना शराब के कोई दावत पूरी ही नहीं होती। बाज़ारों और सड़कों के किनारे खोले गये शराबख़ानों में आज असंख्य अभागों की भीड़ नज़र आती है। इनके बच्चे भूखे मरते हैं, स्त्रियों के पास लज्जा निवारण को चिथड़ा नहीं है, किन्तु ये अभागे अपने दिन भर की कमाई की शराब पीकर पशु बनकर घर में आते और रात भर पड़े रहते हैं। पहले ये लोग अपनी आमदनी बचा कर पीते हैं, पर दिन पर दिन मात्रा बढ़ती और फिर सारी आमदनी स्वाहा होती है। मतवाले होकर स्त्री बच्चों को पीटना, फूहड़ गाली बकना या किसी गन्दी जगह में पड़ा रहना यही इनका जीवन हो जाता है। शीघ्र ही वह किसी काम के भी नहीं रहते, मजूरी भी नहीं कर सकते। घर के ज़ेवर बर्तनों पर हाथ साफ होता है, फिर चोरी भी करते हैं, जेल जाते हैं। अनाथ स्त्री बच्चे भीख माँग कर, व्यभिचार करके, मजूरी करके पापी पेट को भरते हैं। बहुत सी स्त्रियाँ विष खाकर मरती हैं।

मध्यम श्रेणी के लोग प्रथम दवा की तरह एकाध बार शराब पीते हैं, पीछे उसका मज़ा लेते हैं। धीरे धीरे वे अपनी श्रीमतियों के पवित्र होठों पर भी उसका आचमन करा देते हैं। वे यह कभी नहीं विचारते कि इसका भविष्य सन्तति पर क्या असर पड़ता है। जिन्हें कापी अन्न और वस्त्र भी नहीं मिलते, वे भी बराबर शराब पीते हैं। इसका परिणाम

यह होता है कि उनके शरीर भयंकर रूप में जर्जरित हो जाते हैं। खांसी, दमा, क्षय, उन्माद ये भयंकर रोग जो बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे हैं, निस्सन्देह शराबख़ोरी के परिणाम हैं।

प्रजा को अच्छी तरह हलाल करके, उसकी जातीयता, धर्म और पवित्रता का नाश करके, उसके सीधे सरल गृहजीवन में आग लगाकर केवल रुपयों के ढेर के लालच में सरकार बराबर शराब को उत्तेजन देती है !!!

सन् १८८८ में हाउस आफ कामन्स में, भारत में शराब के प्रचार के विषय में बहस हुई थी। अँग्रेजों ने भारत सरकार की शराब प्रचार नीति के पक्ष में बोलकर वाक्चातुर्य दिखाया था। परन्तु मिस्टर केनी ने भारतवासियों का पक्ष लेते हुए सरकारी नीति का तीव्र विरोध किया और उन्होंने शराब प्रचार के सम्बन्ध में भारत सरकार की कुटिल और दूषित नीति को प्रमाण द्वारा सिद्ध करते हुए कहा था, "यदि सरकार अपनी आय को प्रति दसवें वर्ष दुगनी करने की वर्तमान नीति को क़ायम रखेगी तो भारत ३० वर्ष में पृथ्वी तल पर एक पक्का शराबी और पतित देश हो जायगा।" क्या ये शब्द हमें भयभीत करने के लिये यथेष्ठ नहीं हैं ?

ईस्ट इण्डिया कम्पनी आबकारी वस्तुओं का ठेका नीलाम कर दिया करती थी। जो सबसे अधिक बोली बोलता था, उसे ही सर्वाधिकार दे दिया जाता था। बनाने, बेचने और खपत करने का सब काम वही करता था, सरकार को किसी भी झंझट में पड़ने की परेशानी उठानी नहीं पड़ती थी, वह तो ठेका देकर रक़म खज़ाने में रख लेती थी। ये

ठेकेदार खपत और बिक्री के बढ़ाने का विशेष प्रयत्न नहीं करते थे क्योंकि ये परस्पर में प्रतिस्पर्धा करके माल को अच्छा और मंहगा वेचने के इच्छुक न थे। जैसी बनी वेचदी। परन्तु धीरे २ सरकार ने इसमें सुधार किये। अनेक स्थानों पर बनने और ऊँची बोली के ठेकों से सरकार को प्रबन्ध और निगरानी करने में बहुत कठिनाई और परिश्रम करना पड़ता था। सरकार ने निश्चय किया कि एक ही स्थान पर शराब बने और वहां से सर्वत्र जाय। उसने सब स्थानों की इधर उधर फैली हुई भट्टियों को एक बड़े सरकारी केन्द्र में एकत्रित किया, जहां से शराब बाहर जाते समय नियन्त्रण में रहे और चुंगी लेने में भी भूल न हो। इसे डिस्टीलेरी सिस्टम कहते हैं।

आजकल अनेक जिलों में 'कन्ट्रैक्ट डिस्टीलेरी सिस्टम' प्रचलित है। इसके द्वारा समस्त भट्टी का ठेका एक ठेकेदार को देदिया जाता है, वह निश्चित मात्रा में शराब बनाकर निश्चित मूल्य पर कल्लालों को देता है, सरकार की इस पर पूरी देखरेख और जांच रहती है। इस डिस्टीलेरी सिस्टम से शराब कितनी बढ़ गई इसका पता इस तालिका से लगेगा।

DISTILLERY SYSTEM से बढ़ती

प्रान्त	क्षेत्रफल (हज़ारों स्क्वायर मील में)		बढ़ने का प्रतिशत	खपत (हज़ारों गैलन में)		बढ़ने का प्रतिशत	जनसंख्या लाखोंमें		बढ़ने का प्रतिशत
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	१९०५ १९०६	१९१०-११		१९०५ १९०६	१९१०-११		१९०५ १९०६	१९१०-११	
मद्रास	१२२	१२३	१ %	१२२२	१५३८	२५.५ %	३६७	४००	९ %
बम्बई	७५	७५	......	२३९२	२६०६	१३ %	१५३	१६०	५ %
सिंध	४७	४७	......	१८३	२१०	१५ %	३२	३५	९ %
बंगाल	४३	६३	४६ %	४५२	७७६	७१ %	२७८	४०१	४४ %
विहार उड़ीसा	१७	५१	२०० %	३०८	९३५	२०४६ %	७८	२७२	२४७ %
यू० पी०	६८	८५	२५ %	११४९	१३२९	१७ %	३९२	४३८	१७ %
पंजाब	९५	९७	२ %	४७१	४८०	२ %	१९९	२०३	२ %
मध्यप्रान्त	३१	५४	७५ %	४५०	६५१	४४ %	४७	७५	६९ %

सन् १८५८ तक जब भारत का शासन इङ्गलैंड के ताज के नीचे गया तब मद्य-व्यापार का कानून (खेद है कि इसके द्वारा इस व्यापार को उत्साहपूर्ण प्रोत्साहन दिया गया) लागू करने और इसको नियमित करने के लिए एक बड़े विभाग की स्थापना की गई, क्योंकि सरकारी आय के दृष्टिकोण से इसने संतोषजनक फल दिए, लेकिन इसके परिणाम जनता के लिये अत्यन्त भीषण और घातक सिद्ध हुए।

बहुत से भारतीय सुधारक इसके भावी रूप को देखकर आशंकित हो गये और उन्होंने इसपर प्रतिबंध डालने के लिये दबाव दिया। और उस समय उनकी प्रार्थनाओं के प्रति सरकार का सहानुभूतिप्रद तथा प्रोत्साहन पूर्ण रुख न देखकर कुछ ने भारत सरकार को भारत के नैतिक विनाश का कारण करार दिया। केशवचन्द्र जैसे प्रसिद्ध नेताओं ने बंगाल में दारू के अभिशाप के विरुद्ध निर्भीक आवाज उठाई और अपने प्रान्तवासियों से इसे विदा कर देने की मार्मिक प्रार्थना की। जिस समय वे योग्य राष्ट्रकर्मी गत शताब्दी के अंत में इंगलैण्ड गए तो उन्होंने अंग्रेज जनता को, सरकारी नीति द्वारा भारतीय जनता को जो भयानक हानि हो रही थी, मनवाने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उनके इस प्रयत्न में यूरोपियन मिशनरियों ने भी योग दिया, जब कि वे यह मालूम करके भयभीत हुये कि जन साधारण के दिमाग में शराब और ईसाईयत में अभिन्नता का भाव बैठ चुका था। किसी का शराबखोरी के प्रभाव में आना इस बात का प्रमाण समझा जाता था कि या तो वह मनुष्य ईसाई है या ईसाई होने वाला है।

सरकार से बार-बार अपील किये जाने तथा दबाव दिये जाने पर सन् १८८३ में बंगाल में शराब व्यापार की जाँच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त हुआ। कमीशन की रिपोर्ट ने यह स्पष्ट खोल दिया कि चुंगी की रसीदों की वृद्धि में कम से कम ५० फी सदी सरकार या सरकारी कर्मचारियों द्वारा जनता के स्वास्थ्य और सामाजिक तथा नैतिक उच्चता का बलिदान कराकर, शराब खोरी की आमदनी बढ़ाने के प्रयत्नों का फल है। जो बात बंगाल के विषय में है वही सारे भारत के विषय में निःशंक होकर कही जा सकती है।

श्री विलियम स्प्रोस्टन केन, जो हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य थे, पहले अंग्रेज थे जिन्होंने सरकार की चुंगी पॉलिसी के लिए सरकार को गम्भीर चैलेंज किया। उन्होंने १८८७, ८८ की शरद में भारत का पहला दौरा किया। उनका इस विषय की ओर हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सभी जातियों के प्रमुख व्यक्तियों के डेपूटेशन ने ध्यान आकर्षित किया। उनसे डेपूटेशन ने, पार्लमैण्टरी कार्रवाई की जा सके इस दृष्टिकोण से इंग्लैंड में एक संगठन करने, शराब व्यापार की रोक के लिये भारतव्यापी आंदोलन को प्रोत्साहन देने और मार्ग सुझाने के लिये अनुरोध किया। भारतीय नेशनल कांग्रेस ने शराब के प्रति संयम और पूर्ण बहिष्कार को हाथ में ले लिया।

अपनी जांच के फलस्वरूप श्री केन को इस बात को मानने के लिये बाध्य होना पड़ा कि भारत को उस व्यापार—जिससे कि केवल पश्चिमी संसार ही परिचित है—की बुराइयों से खतरा है, और उन

बुराइयों की भारत की देश-व्यापी गरीबी के कारण उसकी घनी संख्या में उग्ररूप से प्रचलित हो जाने की आशंका है।

श्री केन के इंग्लैंड लौट जाने पर श्री सेम्युअल स्मिथ के निवास-स्थान पर पार्लमेंट के मेम्बरों तथा सुधारकों की एक मीटिंग बुलाई गई। इस मीटिंग में एक 'ऐंग्लो-इण्डियन टैम्परेंस ऐसोसियेशन' बनाई गई, जिसके स्पष्ट उद्देश्य भारत के अन्दर शराबखोरी की सहूलियतों के प्रचार को रोकना, जनता में इसके प्रति पूर्ण निषेध की भावना फैलाना और शराब के व्यापार का विनाश करना था। श्री स्मिथ इस ऐसोसियेशन के प्रैसीडैण्ट बनाये गये। श्री स्मिथ की बाद में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में मृत्यु हुई, और श्री केन ने ऑनरेरी सेक्रेट्री का भार अपने कंधों पर लिया जिसको उन्होंने अपने मृत्यु समय १९१० तक निबाहा।

१८८९ में श्री केन ने दुबारा भारतवर्ष की 'चुङ्गी व्यवस्था' का गम्भीर अध्ययन करने के लिये दौरा किया। उन्हें ज्ञात हुआ कि भिन्न-भिन्न प्रान्तों में इस विभाग के तरीके अलग २ थे। लेकिन शराब की पैदावार और बिक्री का आधार एक ही था—और वह था 'फार्मिङ्ग-सिस्टम'। इस सिस्टम में जो व्यक्ति ज्यादा बोली लगाता था उसको शराब खीचने और विशेष क्षेत्र में दुकान खोल कर बेचने का लाइसेन्स मंजूर किया जाता था। किन्हीं प्रान्तों में तो शराब सरकारी ठेके के बतौर खींची जाती थी, और उसको बेचने का अधिकार खींचने वालों को ही था। सरकार की यह दलील थी कि यह नीति इसलिये चालू की गई कि शराब की कम से कम खपत से ज्यादा से ज्यादा आमदनी हो। इस

सिद्धान्त के पक्ष में सरकारी शब्द ये हैं—"इस प्रकार जहां तक सम्भव हो, जनता पर बिना तंगी किये उसे नाजायज तौर से शराब खींचने से रोकने के लिये शराब पर टैक्स लगाया जाना और उसका प्रयोग रोका जाना चाहिये।"

सरकार ने यह कहकर तसल्ली करली कि वह अपनी नीति में पूर्ण सफल हुई है और महसूल की आय में वृद्धि पहले वर्षों की अपेक्षा शराब के कानून के अन्दर कम इस्तेमाल होने का द्योतक है। भारतीय दृष्टिकोण सरकार के कथन के विपरीत था और वह यह था कि नाजायज शराब की पैदावार रोकने के थोथे बहाने की आड़ में सरकार ने जनमत को ठुकराकर आमदनी के लिये बहुत सी ऐसी-ऐसी जगहों पर लाइसेन्स दे दे कर दुकानें खुलवाईं जहाँपर कि शराब को कोई जानता तक नहीं था।

इङ्गलैंड लौट जाने पर केन और उनके साथियों ने पार्लमेंट में इस विषय को छेड़ा और इस पर उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर सरकार के विरुद्ध पेश किये गये निन्दा प्रस्ताव पर खूब वाद-विवाद हुआ। प्रस्ताव में इस नीति के द्वारा इसकी ओट में भारक के मजदूरों के अन्दर बढ़ती हुई बुराइयों पर जोर दिया गया और उनको मिटाने के लिये तात्कालिक कार्यवाही के लिये मांग पेश की गई थी। घोर सरकारी विरोध और उस समय पार्लमेंट में टोरी (अनुदार) सरकार का बहुमत होते हुये भी कॉमन्स सभा ने १०३ के विरोध ११३ से निन्दा का प्रस्ताव पास कर दिया।

इसका फल यह हुआ कि सरकार के चुङ्गी विभाग के शासन और उसकी नीति की गहरी जांच की गई और एक मोटी रिपोर्ट प्रकाशित

की गई जिसमें सरकारी व्यवस्था और नीति का जोरों से पक्ष समर्थन किया गया। अन्त में भारत सरकार को श्री केन की दलीलों के ठोसपन को मानना पड़ा और फलस्वरूप सरकार को सुधार करने पड़े जिससे स्थिति में कुछ सुधार हुआ।

उस समय भारत की जनता में शराब बन्दी आँदोलन जोर पकड़ता जा रहा था। और उधर अपने बार-बार के दौरे में श्री केन ने अनेक संस्थाओं का निर्माण किया जिनकी कुल संख्या लगभग ३०० थी। 'महिला मद्य-संयम सभाओं' की शाखाओं ने भी अपना काम आरम्भ किया। लेकिन एक ओर तो अकालों की पुनरावृत्ति और दूसरी ओर मद्य-संयम आंदोलन के होते हुए भी मादक पेयों की खपत बढ़ती ही गई। सन् १८५७ में सारे भारत की शराब से आमदनी सिर्फ १७,५०,०००पौंड थी, जो १९०५ में५८,६१,०००पौंड और १९३०-३१में१५० लाखपौंड हो गई। (युद्ध की बढ़ी हुई कीमतों को हमें ध्यान में रखना पड़ेगा, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि इसी समय के अन्दर ग्रेट-ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों में शराब से इतनी आमदनी नहीं बढ़ी)। महात्मा गाँधी के द्वारा आरम्भ किये शराब के पूर्ण बहिष्कार और दुकानों पर पिकेटिंग के लिये धन्यवाद है जिसने १९३६ में इसको १,१२,८५,००० पौंड तक कम कर दिया। उपरोक्त आंकडे पार्लमेंट में दिये गये आंकडे हैं।

इन पिछले वर्षों में सरकार की ओर से कड़ी दारूबन्दी नीति अख्तयार करने के भरसक प्रयत्न किये गये थे। जनमत के दबाव के उत्तर में १९०५ में पूरे चुङ्गी विभाग के प्रबन्ध की जाँच के लिये एक सरकारी

कमेटी बनाई गई। इस कमेटी की कुछ सिफारिशें प्रचलित व्यवस्था के पक्ष में थीं, लेकिन कुछ सूरतों में थोड़े से लाभदायक सुधार किये गये। इनमें मुख्य सुधार बड़े-बड़े शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में कमेटियों की स्थापना थी। इन कमेटियों का काम सरकार को शराब की दुकानों की संख्या के बारे में, तथा बिक्री के घंटों के विषय में सलाह देना था। ये कमेटियां सरकारी प्रभाव में स्थापित की गई थीं, इनका अन्तिम निर्णय एक स्थानीय माल अफसर के हाथ में था जो इन कमेटियों का चेयरमेन होता था।

सन् १९०७ में और फिर १९१२ में प्रभावशाली डेपूटेशन अधिक ठोस सुधार कराने के उद्देश्य से सैक्रेट्री ऑफ स्टेट फार इन्डिया (भारत मन्त्री) से मिले। इनमें महात्मा गोखले ने विशेष भाग लिया। दूसरे डेपूटेशन का एक फल हुआ कि प्रान्तीय राजधानियों में लाईसेंसिस बोर्ड बनाये गये जिनमें सुधारप्रिय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी थे। जिनका काम ऐडवाइजरी कमेटियों पर पहले की अपेक्षा अधिक सत्ता के साथ काम करना था। लेकिन सब होते हुए भी फल हमेशा निराशाप्रद ही मिले क्योंकि अन्तिम निर्णय फिर भी माल-अधिकारियों के हाथ में रक्खे गये थे।

१९१९ के इण्डिया एक्ट के अन्तर्गत चुंगी विभाग निर्वाचित प्रान्तीय धारा-सभाओं के उत्तरदायी भारतीय मंत्रियों के हाथ में दे दिया गया। यह अच्छा अवसर था जिससे भारतीय अपने अन्दर के इस रोग से छुटकारा पाने के लिये प्रयत्नशील हो सकते थे परन्तु तुरन्त ही कठिनाइयाँ सामने आ गई। क्योंकि इस चुंगी से जो आमदनी

होती थी वह प्रांतीय सरकारों के जन हितकारी कार्य—जैसे शिक्षा, सफाई आदि में खर्च किये जाने वाली मदों में से एक खास थी। उस नए विधान के आलोचकों ने ठीक ही घोषणा की थी कि यह व्यवस्था मद्य-निषेध के मार्ग में अड़ंगा डालने के लिये की गई है। जैसाकि सुधारकों ने पहले ही देख लिया था, शराब की निरन्तर बढ़ती हुई आमदनी से आर्थिक समस्या बढ़ा दी गई, यहाँ तक कि १९३२-३३ में शराब की आय कई सूबों की कुल आमदनी की एक चौथाई तक पहुँच गई। इस प्रकार मद्य-निषेध को सफल बनाने के लिये इस भयानक आर्थिक सङ्कट का सामना करना था।

लेकिन उन्नतिशील भारत तो वास्तव में इससे भी अधिक चाहता था। १९२५ की सितम्बर में भारतीय व्यवस्थापिका सभा दिल्ली ने मादक-पेयों की पैदावार, निर्माण, बिक्री और आयात पर पूरी रोक लगा देने के लिये एक प्रस्ताव पास करके इस ध्येय की ओर कदम बढ़ाया। यह प्रस्ताव सरकार की ३९ वोटों के विरुद्ध ६९ वोटों से पास हुआ था। विरोध में ३९ के अल्पमत में २५ यूरोपियन, तथा १४ भारतीय थे, जिसमें सभी या तो सरकार द्वारा निर्वाचित हुये थे या सरकार से अधिकारी वर्ग के नाते सम्बन्धित थे। इस प्रकार एक बहुमत के साथ स्वतंत्र भारतीय मत ने पूरी दारू-बंदी के पक्ष में अपनी सम्मति प्रगट की। यह तब १९२८ में कलकत्ता में हुई सर्व-दल-सम्मेलन में और भी पुष्ट हो गया, जब कि इस समय शराब-बन्दी राष्ट्रीय विधान के आवश्यक अंगों में से एक करार दे दिया गया है।

प्रकरण ६

भारत सरकार की मद्य नीति

"The Govt. of India have no desire to interfere with the habits of those who use alchohal in moderation. This is regarded by them as outside the duty of the Govt., and it is necessary in their opinion to make due provision for the needs of such persons. Their settled policy, however, is to minimise temptation to those who do not drink, and discourage excesses among those who do, and to the furtherance of this policy all considerations of revenue-must be absolutely subordinated."

भारत सरकार ने शासन सूत्र संभालते समय मद्य सम्बन्धी नीति की यह घोषणा की थी। इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि सरकार की मद्यनिषेध भावना नहीं थी। यह घोषणा सुधार भावना से नहीं बल्कि कल्लालों और शराबियों को बनाये रखने के लिये है। सन् १८९९ में सरकार ने आबकारी नीति को चलाने के लिये ये सिद्धान्त बनाये थे—

१. अधिक शराबख़ोरी को प्रोत्साहन न दिया जाय।

२. टैक्स यथासम्भव अधिक रखा जाय।

३. कम से कम खपत में अधिक से अधिक कर लगाया जाय।

इन सिद्धान्तों को तत्कालीन भारत मन्त्री लार्ड क्रॉस ने स्वीकृत कर लिया था। इन सिद्धान्तों में शराबख़ोरी को बिल्कुल ही बन्द करने की कोई नीयत नहीं है। इस नीति को कार्यरूप में इस प्रकार परिणित किया गया—

१. भट्टी पद्धति को चलाया जाय।

२. देसी शराबों पर अधिक ड्यूटी लगाई जाय। विदेशी शराबों पर अधिक ड्यूटी न हो।

३. दुकानों की संख्या कम करदी जाय।

इन उपायों को व्यवहार में लाया गया जैसाकि निम्न तालिका से प्रकट होता है—

दुकानों की संख्या

वर्ष	शराब की दुकानें	अफीम, भांग गांजा की दुकानें	दुकानों की कुल संख्या
१८९९—००	८२११७	१९७६६	१०१८८३
१९०५—०६	९१४४७	२१८६५	११३३१२
१९१०—११	७१०५२	२००१४	९१०६६
१९१४—१५	५६७२३	१७६९९	७४४२२
१९१५—१६	५५०४६	१७३१६	७२३६२
१९१६—१७	५१९१७	१७१७७	६९०९४
१९१७—१८	५४८९६	१७१४७	७२०४३
१९१८—१९	५२६८३	१७१५२	६९८५३

पहले बहुत सी दुकानें मज़दूरों और निम्न श्रेणी की बस्ती के निकट थीं। वे हारे थके वहां ठहरकर एक गिलास पीते और नशा चढ़ने पर सब कष्ट भूल जाते थे। ऐसी दुकानें सरकार को बन्द करनी पड़ीं। उपरोक्त तालिका में जो दुकानों की कमी दीखी है वह ऐसी ही दुकानों के बन्द करने के कारण से है। इससे इन दूकानों की प्रचुरता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है।

ठेके नीलाम करने के परिणाम में ठेकेदारों को बहुत सी कठिनाइयां प्रतीत हुईं। वे जितने लाभ की आशा से ठेका लेते थे, उतना उन्हें लाभ नहीं होता था। "Administration Report of Bengal Provincial Government" में इस बात को लिखा गया है, कि "ठेकेदार अपना लाभ प्राप्त करने के लिये शराब में पानी मिलाकर बेचते हैं। मार्च सन् १९११ में नीलामी होने के तुरन्त बाद ही चौबीस परगने में ढेरों अर्जियां फ़ीस कम करने की आईं जिनमें यह शिकायत की गई थी कि ऊँची बोली के भाव ने शराब विक्रेताओं को ईमानदारी से काम करने की गुंजायश नहीं रहने दी है।"

बिहार उड़ीसा की सरकारी रिपोर्ट में भी यही बात स्वीकार की गई है, "शाहाबाद में सबसे ऊँची बोली बोलने वाले को ठेका दिया गया। इस बोली में लाभ की गुंजायश न थी, परिणाम यह हुआ कि केवल इसी ज़िले में खपत २४९५६ गैलन बढ़ गई।"

फिर भी सरकार को दुकानों का ठेका देते समय दुकान के स्थान को विचारना पड़ता है। दुकान ऐसे स्थान पर हो, जहां से पीने वाले

आसानी से शराब प्राप्त कर सकें, साथ ही यदि वे मतवाले होकर फसाद भी करें तो रास्ता रुके नहीं।

परन्तु इन उपायों से मद्य-निषेध नहीं हो सकता। मद्य-निषेध का सबसे उत्तम उपाय वह है जो स्वेडन में किया गया था। इस उपाय को 'गोथन बर्ग सिस्टम' कहते हैं। इसके द्वारा पीने वालों का नाम और पता रजिस्टर में दर्ज करके उन्हें शराब खरीदने का लाइसेन्स दे दिया गया। इसमें ख़रीदने की मात्रा भी निर्धारित कर दी गई। साधारण ठेके न देकर सरकारी दुकानें खोल दी गईं। और वहाँ उतनी ही मात्रा में शराब का स्टाक़ रक्खा गया जितना रजिस्टर में दर्ज होता था। स्वीड निवासी संसार भर में प्रसिद्ध शराबी (पियक्कड़) थे। छोटे बड़े, बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री पुरुष सभी शराब पीते थे। पाप और पतन की पराकाष्ठा हो चुकी थी। ४२ लाख गैलन शराब ३ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष पीते थे। शराब बनाने, बेचने और पीने पर कोई प्रतिबन्ध न था, खुले आम शराब पी जाती थी। परिणाम यह हुआ कि देश में हाहाकार मच गया। अन्त में गोथन बर्ग की म्यूनिसिपिल कौन्सिल ने एक बिल पास किया और उसके अनुसार रजिस्टर रखा जाने लगा। उसने दुकानों के खुलने और बन्द होने का समय निश्चित कर दिया। शराब की पुरानी दुकानों के स्थान पर कॉफी-गृह और वाचनालय खोले गये। जिन व्यक्तियों को शराब पीकर नशा होता था उन्हें शराब पीने का लाइसेन्स बन्द कर दिया गया। जो एक से अधिक बार शराब पीने आते थे उन्हें भी लाइसेन्स बन्द कर दिया गया। इन दुकानों पर भोजन भी रहता था। यह भोजन बहुत स्वच्छ, स्वादिष्ट, पौष्टिक और मूल्य में

शराब के एक प्याले से बहुत सस्ता रहता था। शराब पीने वालों के सामने भोजन का प्लेट पेश किया जाता था, और जब वह देखता था कि चार पैसे देकर इस स्वादिष्ट और तृप्तिकारक भोजन से उसका पेट भर जाता है, तो वह फिर चार आने देकर शराब की छोटी सी मात्रा पीना पैसे फेंकना समझने लगा। उसकी शराब पीने की आदत छूट गई।

अध्याय दूसरा

मद्य दोष

क्लिटनवेन काफट ने शराब का वर्णन इस प्रकार किया है, "मैं आग हूं, मैं भस्म करती हूँ और नाश करती हूं। मैं रोग हूं और असाध्य हूँ। मैं चिन्ता हूं, राजाओं की चमकीली पोशाक, प्रतिष्ठित पुरुषों के भारी २ वेश, सजीली रानियों के रेशमी वस्त्र मेरी अमिट भूख मिटाया करते हैं। मेरा नशा जब भयंकर ऊँचाई पर पहुंच जाता है तब मैं थोड़ी देर के लिये सुलगती हूं। मेरी ज्वाला अचानक धधक उठती है और सर्वस्व को भस्म करना शुरू कर देती है, यहां तक कि कुछ भी नहीं छोड़ती। मैं अग्नि का समुद्र हूँ, कोई जिव्हा मुझसे प्यास नहीं बुझा सकती। मैं वह अग्नि हूं जो कभी जल से शान्त नहीं होती।"

पश्चात्य सभ्यता ने संसार को जो सब से भयानक वस्तु दी है वह शराब है। यह शरीर और आत्मा दोनों ही के लिये समान रीति से घातक है। गत महायुद्ध में १ करोड़ प्राण युद्ध के द्वारा, १॥ करोड़ महामरी के द्वारा और २ करोड़ शराब के द्वारा नष्ट हुए। भारत में ज्यों ज्यों पाश्चात्य सभ्यता बढ़ी है मदिरा का प्रचार व्यापक होता गया है। अमीर और ग़रीब सभी इसके चंगुल में फंसे हैं। पश्चिम में मद्य के विरोध में अब भारी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है। अमेरिका ने शराब को त्याग दिया है, यहां ३६ हज़ार वर्गमील ज़मीन है, और १०

करोड़ से अधिक मनुष्य रहते हैं, सर्वत्र शराब की बिक्री बन्द करदी गई है। वहां के वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने आन्दोलन मचा रखा है कि यह शराब उनके देश और राष्ट्र को, उनके समाज को सत्यानाश कर रहा है। विद्वान लोग सर्व साधारण को चिता रहे हैं कि मद्यपान से बल घटता है, पुरुषार्थ कम होता है, शरीर में रोग प्रवेश करते हैं और आयु कम हो जाती है। शराब का काम मांस को गला डालना है इससे दिमाग़ खराब होकर और बुद्धि मलिन हो जाती है। अन्य योरोपीय राष्ट्र भी समस्त संसार से इसको नष्ट कर देने का उद्योग कर रहे हैं। इङ्ग-लैंड के प्रख्यात महामन्त्री मिस्टर ग्लेडस्टन ने एक बार कहा था— "मनुष्य जाति पर असंयम द्वारा जितनी विपत्तियां पड़ी हैं, उतनी बड़ी से बड़ी तीन ऐतिहासिक विपत्तियाँ, अर्थात् युद्ध, महामारी और अकाल द्वारा भी नहीं पड़ीं।"

कुछ दिन पूर्व ग्रेट ब्रिटेन और भारत के डाक्टरों ने मिलकर एक विज्ञप्ति निकाली थी, जिसका अभिप्राय यह था:— १. यह वैज्ञानिक रीति से निश्चय हो गया है कि शराब, कोकिन, अफ़ीम और अन्य मादक द्रव्य विष हैं, २. भारत जैसे गरम देश में इनका थोड़ा भी व्यवहार स्थाई रूप से हानिकारक है। ३. बहुत दशाओं में शराब संतान के लिये हानिकारक है। ४. प्लेग, मलेरिया और क्षय को रोकने में शराब व्यर्थ है। ५. यही बात अन्य नशों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।

कलकत्ते के सर लियोवर्ड राजर्ज कहते हैं "कि बंगाल के जिगर के फ़ोड़े के ७० फ़ीसदी रोगियों का कारण शराब का पीना ही है।

स्त्रियों में यह रोग बहुत कम पाया जाता है, क्योंकि वे शराब नहीं पीतीं मुसलमानों में भी यह रोग कम है क्योंकि बंगाल में हिन्दू ही ज्यादा शराब पीते हैं।"

डाक्टर हार्वी वेली, जो अमेरिका के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं और मेडिसन रिसर्च एशोसियेशन के सभापति हैं, कहते हैं—"औषध तत्त्व-सार के पारंगत हैं। जिन्होंने शराब के प्रभाव का अन्वेषण किया है वे एक मत से सहमत हैं कि शराब पौष्टिक पदार्थ नहीं है। यह एक निरा विषैला पदार्थ है, इसलिये व्हिस्की और ब्रान्डी दोनों ही औषधि की श्रेणी में से अलग करदी गई हैं।

योरोप के अस्पतालों में अब से २५ वर्ष तक शराब का औषधि की भांति बहुतायत से प्रयोग होता था। चीर फाड़ के बाद बहुत से अस्पतालों में ब्रान्डी हृदय को उत्तेजना देने के लिये काम में लाई जाती थी, पर अब इसका प्रयोग बन्द कर दिया गया है। आस्ट्रेलिया के एक अस्पताल में सन् १८९१ में १००० पौंड से अधिक मूल्य की शराब रोगियों पर ख़र्च की गई थी। उसी अस्पताल में सन् १९१४ में ४ पौंड मूल्य की शराब ख़र्च की गई।

शराब पाचन शक्ति को नष्ट करने वाली, सनक और दीवानापन लाने वाली, कलेजा, गुर्दा, आमाशय और रक्त स्नायुओं को भीतर ही भीतर घुलाने वाली अस्वाभाविक रीति से रोग जंतुओं को शरीर में पहुंचाने वाली है जिससे शरीर अवयव और ज्ञान तन्तु बिगड़ जाते हैं। निमोनिया, श्वास, दिक़, क्षय आदि सांघातिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं और फिर पुश्तैनी हो जाते हैं।

शराव काम शक्ति को असाधारण रीति से प्रबल कर देती है। संयम की शक्ति जाती रहती है यह जनन शक्ति को भी नष्ट कर देती है इसका परिणाम यह होता है कि बांझ और नपुंसकता के रोग उत्पन्न हो जाते हैं और मनुष्य शीघ्र ही निर्वीर्य और वृद्ध हो जाता है और अल्प-काल ही में उसकी समस्त इंद्रियां वेकार हो जाती हैं। शराबियों में प्रतिशत २७.१ मस्तक रोग से, २३.३ अपच रोग से और २६.९६ फेफड़े रोग से मरते हैं। भारत के पागल खानों में ६० प्रतिशत पागल मादक द्रव्य सेवन करने वाले हैं। भारत की वैश्याओं में २२ प्रतिशत सुरापान कारण है। मादक द्रव्यों से वेहोश करके कितने ही दुराचारी अनेक दुष्कर्म करते हैं।

शराब अस्वाभाविक रीति से गेहूं, मक्का, ज्वार, चावल महुआ, जौ अंगूर और खजूर के रस से सड़ा कर बनाई जाती है। इसमें अल्कोहल—का प्राधान्य रहता हैं। १०९ औंस शराब में ७० औंस तक अल्कोहल रहता है। यह अल्कोहल भयानक विष है। यदि अल्कोहल थोड़ा भी एक मनुष्य को दिया जाय तो वह उसे मारने को काफ़ी है। यदि जल में सौवां भाग अल्कोहल मिला कर उसमें मछली को डाल दिया जाय तो वह मर जायगी। यदि अंडे की सफेदी को उसमें डालो तो वह तुरन्त सिमट जायगी तथा कड़ी हो जायगी।

प्रकरण १

अल्कोहल का परीक्षण

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक तरल पेय पदार्थों का उपयोग करते रहते हैं, जैसे दूध, पानी, लेमन, सोडा, बरफ, कॉफी, कोको आदि। इनमें अल्कोहल नहीं होता। इसके सिवा दूसरी श्रेणी के पेय हैं जैसे बीयर, विस्की, घर की बनी शराब, विलायती शराब, स्प्रिट, ताड़ी, दारू आदि ये सब नशा करती हैं क्योंकि इन सब में नशे की जीवात्मा 'अल्कोहल' होता है।

अल्कोहल के परीक्षण करने का साधारण उपाय यह है कि मद्य को किसी रकाबी में रखकर नीचे हल्की आंच जलाओ तो रकाबी भभक उठेगी। भक से जल उठना अल्कोहल का प्रमाण है।

किसी भी तरल पदार्थ को उबाला जाय तो उसकी भाप बनने लगेगी। पानी २१२ F. डिगरी तक गरम करने पर भाप बनने लगती है। अल्कोहल केवल १७२ F. डिगरी में ही भाप बनकर उड़ने लगता है। यदि हम थोड़ी शराब, बीयर, स्प्रिट आदि कुछ भी एक कांच के गिलास में रखकर गरम करें तो वह तुरन्त गरम होकर गिलास के मुंह पर लौ बनने लगेगी। चूंकि पानी की भाप लौ बनकर जल नहीं सकती, और शराब में अन्य पदार्थों का मिश्रण नहीं है, इसलिये यह लौ अल्कोहल को प्रमाणित करती है। पानी का तनिक भी अंश उसमें होता तो वह लौ को जलने से अवश्य रोकता।

अल्कोहल के सही माप का एक यन्त्र अल्कोहोलोमीटर भी आता है। आबकारी विभाग में घनत्त्व की माप भी की जाती है, और यही सही जांच है।

आबकारी विभाग अल्कोहल की वस्तुओं पर चुङ्गी प्रूफस्प्रिट Proof Spirit के हिसाब से लगाते हैं। आधा पानी आधा अल्कोहल से प्रूफ स्प्रिट बनती है। प्रूफ स्प्रिट में अनुपात से पानी का वज़न ५०.७६ और अल्कोहल का वज़न ४९.२४% प्रतिशत होता है। दोनों समान वज़न के हों तो प्रूफ स्प्रिट नहीं बन सकती क्योंकि अल्को-हल का घनत्त्व पानी से हल्का होता है। क्षेत्रफल के हिसाब से प्रूफ स्प्रिट में अनुपात से ५७.०६ भाग अल्कोहल और ४२.९४ भाग प्रतिशत पानी होता है।

यदि घनत्त्व ०.९८८५ हो तो उसमें ६.७५ प्रतिशत ख़ालिस अल्कोहल और १४.७३ प्रतिशत प्रूफ स्प्रिट का वजन होगा। इससे यह सिद्धान्त निकला कि प्रूफ स्प्रिट ख़ालिस अल्कोहल से दूनी से थोड़ी ज्यादा होती है, और ख़ालिस अल्कोहल की शक्ति में आधी से भी कुछ कम होती है। जिस तरल पदार्थ में २ प्रतिशत प्रूफ स्प्रिट होती है उस पर आबकारी चुङ्गी नहीं लगती, इससे अधिक पर लगती है। अल्कोहल में कितना पानी है इसका साधारण परिमाण इस प्रकार किया जा सकता है। दो चीनी के प्यालों में थोड़ी २ बारूद भरो। और उन में से एक में पानी मिली अल्कोहल छिड़क दो। दूसरी में ख़ालिस अल्कोहल छिड़क दो। दोनों के नीचे आंच जलाओ। दोनों जलेंगे। लेकिन (१) में अल्कोहल अंश तो जलकर उड़ जायगा, पानी

का अंश बारूद में समा हुआ रह जायगा और वह गीली मालूम होगी। (२) में अल्कोहल जलेगा पर चूंकि उसमें पानी का अंश नहीं है इसलिये वह जलकर बारूद को भी जलाना शुरू कर देगी और बारूद गरम और सूखी मालूम होगी।

अब हमें इस बात पर विचार करना चाहिये कि अल्कोहल कहाँ से आती है। अल्कोहल प्राकृतिक रूप में किसी भी पदार्थ में नहीं बनती। वह रासायनिक विधि से सड़ाकर पैदा की जाती है और उससे शराब बनती है; जैसे जौ से बीयर, अंगूरों से वाइन, सेब से साइडर, नास्पाती से पेरी, शहद से मीड इत्यादि। इन शराबों की उत्तमता का यदि हम इसलिये बखान करें कि ये इतने सुन्दर फलों से बनी हैं तो यह मिथ्या है। क्योंकि दोनो के गुण भिन्न २ होते हैं। जिस प्रकार पानी, पानी की भाप, पानी की बरफ एक ही वस्तु की बनी होने पर भी भिन्न २ गुण रखती हैं इसी प्रकार शराब को भी समझना चाहिये।

शराब किस प्रकार सड़ाकर बनाई जाती है इसका हम विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं।

प्रकरण २

जौ की शराब

माल्ट विधि

जौ से बीयर बनाई जाती है। सबसे पहले अनाज को माल्ट किया जाता है, जिसकी विधि यह है:— जौ की पौद में जब किल्ले (अंकुर) फूट आते हैं तब उसमें रासायनिक परिवर्त्तन आरम्भ होता है। इस शिशु पौदे में स्टार्च बहुत अधिक मात्रा में होता है, यदि जौ की ऐसी पौदी को छाया में सुखा कर सावधानी से रखा जाय तो बहुत दिनों तक उसका यह गुण बना रहेगा।

जब पौदा नमी को जज़्ब करने लगता है तब यह बढ़ना आरम्भ होता है, और कुछ समय तक स्टार्च ही रासायनिक परिवर्त्तन से एक प्रकार की शक्कर बन कर इसे पोषक तत्त्व देता है। नीचे की नोक फैल कर जड़ हो जाती है, पत्तियां पनपने लगती हैं। फिर ज्यों २ पौदा बड़ा होता है त्यों २ पत्तियों द्वारा हवा में से और जड़ों द्वारा ज़मीन में से भोजन लेने लगता है। विकास होने पर जड़ें नीचे ज़मीन में धंसती जाती हैं और पत्तियाँ ऊपर ताज़ी हवा और रोशनी में फैलने लगती हैं।

स्टार्च बहुत ही शक्तिशाली पदार्थ है, यह तेज़ गरम पानी अथवा रासायनिक क्रिया से ही घुल सकता है। स्टार्च को रासायनिक उपायों

से शक्कर बना कर बाज़ार में ग्लूकोज़ (Glucose) नाम से बेचते हैं। ग्लूकोज़ एक पोषक तत्त्व है, बच्चों और मरीज़ों के लिये पथ्य है। यह कई प्रकार के होते हैं।

इस बात से हमें ज्ञात हुआ कि जौ में "जौ की शक्कर" एक महत्वपूर्ण वस्तु है। इस शक्कर से ही शराब बनती है। शराब बनाने के लिये पहले जौ का माल्ट बनाते हैं, क्योंकि सूखे जौ में से स्टार्च को शक्कर के रूप में बदल देने की यही एक मात्र विधि है। अकेले सूखे जौ से शराब नहीं बन सकती। माल्ट विधि की चार क्रियायें हैं—१. भिगोना, २. ढेर करना, ३. किल्ले भूटना और ४. सुखाना। जौ को एक बर्त्तन में डाल कर उसमें पानी भर देना चाहिये जिससे वे डूब जांय। ४८ घंटे तक डूबे रहने चाहिये। जौ पानी को जज़्ब करेंगे और फूल जावेंगे। इन जौ को पानी में से निकाल कर ढेर बना देना चाहिये। गीला ढेर बनने से थोड़ी गरमी पैदा होगी, और उनको गरमाई पहुँचेगी, इसी गरमाई से उनमें कुल्ले फूटेंगे। कुल्ले फूटने की आसानी के लिये ढेर को धीरे २ फ़र्श पर फैला देना चाहिये और उलट पुलट करते रहना चाहिये, थोड़े दिन बाद ही कुल्ले फूट आवेंगे। जब कुल्ले पूर्णतया फूट आंय, तब और अधिक अंकुर न बढ़ने देने चाहियें। उनको फिर भट्टी की मंदी आंच से गरम करके सुखाना चाहिये। आंच इतनी ही हो कि वे थोड़ा सूख जांय, बहुत सूखे नहीं, जले नहीं, स्टार्च नष्ट होवे नहीं। माल्ट की सारी विधि बन्द कमरे में होनी चाहिये, खुली धूप में नहीं। शराब के कारखानों में माल्ट करने के कमरे मीलों लम्बे होते हैं और वे खुले नहीं होते।

ऐसे माल्ट हुए जौ में पाचक शक्ति कम नहीं होती। बच्चों और मरीज़ों को डाक्टर लोग माल्ट अनाज की रोटी खाना बतलाते हैं। क्योंकि उनकी पाचन शक्ति कमज़ोर होती है। ऐसा अनाज मुंह की राल को उत्पन्न करता और उसके अभाव को पूर्ण करता है। भोजन खूब चबा कर निगलने का नियम इसीलिये है कि उसमें मुँह की लार का बहुत सा अंश मिलकर पेट में पहुंचे। माल्ट किया हुआ अनाज पाचनशक्ति को सुधार देता है।

माल्ट करने से जौ का वजन २० प्रतिशत घट जाता है। १०० सेर वजन ८० सेर ही रह जायगा। क्योंकि २% भिगोने में (घुलने वाला पदार्थ पानी में घुल जायगा), २% फर्सपर सुखाने में (कार्बन द्विओषित उड़ जायगी), ४% अंकुरों अथवा कुल्लों के घिसने अथवा छीज जाने में और १२% भट्टी की आंच से, भाप बन कर उड़ जाने में कम हो जाता है।

सन् १९२१ में यूनाइटेडकिंगडम अमेरिका में २,०००,००० एकड़ भूमि पर जौ की खेती शराब बनाने के लिये होती थी, जिसमें ९,०००,००० Quarter जौ पैदा होते थे। और १९,०००,००० Cwts जौ बाहर अन्य देशों से ख़रीदे गए थे।

एक जौ में निम्न पदार्थ होते हैं :—

Water	12.0
Dextrin & Sugar ...	6.2
Starch	62.6
Albuminoids	13.2

Ash	2.8
Woody fibre ...	11.6
Fat	2.6
	100.00

अच्छे जौ का वज़न प्रति बुशल ४९ और ५८ पौंड के बीच में होता है।

प्रकरण ३

शराब बनाना

शराब बनाने में आठ विधि करनी पड़ती हैं—माल्ट को कुचलना, मथना, पकाना, ठंडा करना, सड़ाना, साफ करना, शराब चुआना और शुद्ध करना।

मथने में १७५° F. गरम पानी प्रयोग में आता है, इससे स्टार्च की शुगर अच्छी तरह बनने लगती है। बड़ी २ मशीनों में पूरे चार घंटे तक एक घान की मथाई होती है, यहां तक कि स्टार्च की शक्कर बन जाती है जौ को अलग निकाल कर पशुओं को चारे के काम में लेलेते हैं और स्टार्च की शक्कर के तरल पदार्थ को पका कर शराब बनाते हैं माल्ट बनाने में जौ २० % कम हो गया था। अब मथने में जौ पृथक होने से ५० % और कम हो गया।

उस शक्कर के तरल पदार्थ को बड़े २ टैङ्कों में भरकर सड़ाते हैं। सड़कर उसमेंफेन पैदा होते हैं। शराब के कारखानों में बहुत दूर तक फैले हुए तरल पदार्थ के ऊपर ये फेन श्वेत समुद्र की भाँति दीखते हैं। इन फेनों को सावधानी से उत्पन्न करके उनको एक बर्तन में संग्रह किया जाता है। इन फेनों से शराब चुआई जाती है। ये फेन कई प्रकार के बनते हैं। तरल पदार्थ की नीची तह में भी फेन उत्पन्न होते हैं, इनकी बनी शराब कुछ कमज़ोर होती है। ऊपरी सतह के फेनों की शराब ही प्रायः सर्वत्र बनाई जाती है और श्रेष्ठ समझी जाती है।

फेन एक वार ही नहीं आते, वह एक वार उतार लेने पर दूसरी वार और तीसरी वार भी आते हैं। एक प्रकार से उस तरल पदार्थ की यह पौध है, इसमें वहुत सावधानी रखनी पड़ती है। जितने अधिक फेन आयेंगे उतना ही अधिक सड़ान समझना चाहिए। टैंकों में अनुकूल टेम्प्रेचर रखने के लिये यन्त्र लगे रहते हैं। सड़ान का रासायनिक काम यह हुआ कि शक्कर की अल्कोहल और कार्वन द्विओपित दो चीज़ें वनी। फेन का फॉरमूला यह है:—

$$\underset{\text{Sugar}}{C_6 H_{12} O_6} + \underset{\text{झाग}}{\text{Ycast}} = 2\underset{\text{Alchohal}}{\left(C_2 H_5 Ho\right)} + 2\underset{\text{Carbon Dioside}}{\left(Co_2\right)}$$
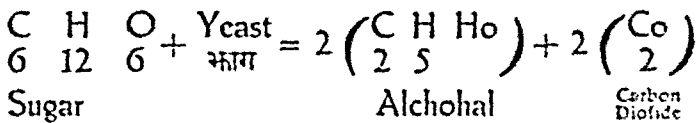
ज्यों २ फेन वनते हैं, कार्वन द्विओपित हवा में उड़ जाती है और अल्कोहल रह जाती है। इस प्रकार शराव में खालिस अल्कोहल ही है।

प्रकरण ४

शराब और डबलरोटी

कुछ लोगों की यह दलील है कि जौ की डबल रोटी भी इसी प्रकार ख़मीर उठा कर बनाई जाती है, जब उसमें हानि नहीं तब शराब में क्यों है? हम अभी बता चुके हैं कि शराब में, माल्ट और सड़ने में ७० प्रतिशत जौ कम हो चुके हैं और फेन लेने में तो और भी कमी हुई होगी, तब यह निश्चय मान लेना चाहिये कि डबल रोटी एक पैसे के टुकड़े में जितने पोषक तत्व मिले होंगे उतने पांच रुपये के शराब के गिलास में भी न होंगे। पश्चिम के एक प्रसिद्ध केमिष्ट बेरोन लीबिग ने एक बार कहा था कि हम इस बात को गणित द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं कि खाने की मेज़ पर पड़ी हुई छुरी की नोक पर ही इतना पोषक तत्व पा सकता है जितना नौ गुनी सबसे अच्छी 'बवेरियन बीयर' में भी नहीं होता।

आधी पौंड रोटी में २८६ ग्रेन नसों को पुष्टकरने वाला पदार्थ रहता है। आधा पिन्ट दूध में १७६ ग्रेन पौष्टिक तत्व रहता है। आधा पिन्ट बीयर में केवल २० ग्रेन ही पौष्टिक तत्व रहता है। एग्रीकल्चर हाल लन्दन में पहली नेशनल ब्रीवर्स एग्ज़ीबिशन के अवसर पर बरटन शराब का एक पीपा दिखाया गया था जिसमें शराब का भाग विभंजन दिखाया गया था। पीपे में ३६ गैलन अथवा १४४ क्वार्टस शराब का विभंजन इस प्रकार था।

१३०	क्वार्ट	Water
७॥	,,	Alcohal
३॥	,,	Extractive (Dextrin. &c.)
२	,,	Sugar
१	,,	Albumenoid
१४४	,,	

इसमें आप देखेंगे कि भोज्यपदार्थ केवल पिछली दो वस्तुएं ही हैं। रोटी और बीयर में अब यह भेद हुआ कि रोटी में वे सब गुण क़ायम हैं जो प्रकृति ने अनाज को पौदे में दिये थे जबकि बीयर में से ये गुण कुचलने और सड़ाने में रासायनिक परिवर्त्तन होने पर जाते रहे। यहां हम इस बात को प्रमाणित करते हैं कि रोटी में पौद के गुण क़ायम हैं।

एक तश्तरी में थोड़े से जौ अथवा गेहूं कुचल कर रखो, तश्तरी को गरम करो अनाज पहले काला पड़ेगा और फिर जलने लगेगा और यदि तेज आँच बराबर जारी रहे तो वह जलकर कोयले हो जायेंगे। अब इन कोयलों को और भी तेज़ आँच से जलाओ। धीरे धीरे कालापन चला जायगा, क्योंकि अधिक टेम्प्रेचर की वजह से कार्बन हवा की ओक्सीजन से मिलकर कारबन डि ओक्साइड बन गया। जब तमाम कालापन मिट जायगा तब ये दाने सफेद भस्मी हो जायेंगे। इस भस्मी में अनाज के खनिज क्षार मिले हैं। अब इसी प्रकार रोटी को जलाइये तो अन्त में उसकी भी सफेद भस्मी में वही खनिज क्षार मिलेंगे। दोनों एक ही चीज़ हैं। दोनों के गुणों में कोई तब्दीली नहीं हुई। इससे यह बात प्रमाणित हुई कि अनाज की रोटी बनाने से अनाज

के पौष्टिक तत्व नष्ट नहीं हुए। रोटी और बीयर का भेद इस प्रकार है:—

रोटी

पानी	३७·०	%
Albumen ...	८·१	,,
शक्कर	३·६	,,
Fat	१·६	,,
खनिज	२·३	,,
स्टार्च	४७·४	,,
	१००·०	,,

बीयर

पानी	८३·१२५	%
Albumen ...	०·६१३	,,
शक्कर	१·७७०	,,
खनिज	०·४१२	,,
Extractive ...	८·१९०	,,
अल्कोहल ...	५·८९०	,,
	१००·०००	

शराब उसी में से बन सकती है जिसमें स्टार्च या शक्कर होगी। प्रकृति के दिये हुए मधुर और पके हुए फलों को नष्ट करके हम शराब बनाते हैं जो भयंकर नशा है। यहां हम एक तालिका देते हैं जिससे यह प्रकट होगा कि कौन कैसी शराब बनाते हैं।

कौन जाति बनाती पीती हैं	नाम शराब	किससे बनाते हैं
हिन्दू, मलाया निवासी	अर्क	चावल, सुपारी (छालियां)
ग्रीक, तुर्क	राकी	चावल
हिन्दू	ताड़ी......	नारियल, ताड़ी
मराठे	बोजा	Elcusine Corocana
चीनी	शमशू......	चावल
जापानी	साके (Sacie)	चावल
पैसेपिक टापू	कैवा	Macropipeo.
मैक्सीकन्स (mexicans)	पुलक्येPulque	Agave
दक्षिणी अमेरिकन	चीका	मक्का, ज्वार
तातारी	कौमिस	घोड़ी का दूध
रूसी, पोल (ध्रुव) के निवासी	वोदका राका	आलू,
अबेसीनियन	ताला Tallah	बाजरा, कोदई, कफुनी

इनके अलावा अन्य शराब भी जैसे करन्ट (Currant), रसभरी (Raspberry), रूबर्ब (Rhubarb), गूजबेरी (Gooseberry), आदि विभिन्न देशों में बनाई जाती हैं परन्तु किसी भी फल में प्रकृति ने अल्कोहल प्रदान नहीं किया, मनुष्य ने उन्हें सड़ाकर अल्कोहल उत्पन्न किया है।

प्रकरण ५

सड़न

अंग्रेजी कोष में वाइन का अर्थ अंगूरों का सड़ा हुआ रस है। इसके बाद इसमें और भी अर्थ सम्मिलित कर लिये गये। प्राचीन काल में रस और शरबत को शराब समझते और कहते थे। इस रस और शरबत से नशा नहीं होता था, बल्कि मन और शरीर पुष्ट होते थे। आजकल रस और शरबत शराब से भिन्न वस्तु हो गये हैं और जो जितनी अधिक बढ़िया शराब पीकर नशा करता है वह उतना ही अमीर समझा जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि घर की बनी शराब से नशा नहीं होता, क्योंकि इसमें अल्कोहल कहां से आया, हमने तो मिलाया नहीं। अल्कोहल या स्प्रिट मिलाई नहीं जाती, वह तो सड़ान से स्वतः रासायनिक रूप में उत्पन्न होती और बनती है। हम इस बात को प्रयोग द्वारा बतलाते हैंः—

एक चौड़े मुंह की बोतल में दो बड़े चम्मच (Table Spoon) शक्कर डालो और बोतल का एक तिहाई भाग गुनगुने पानी से भर दो। खूब हिलाओ। फिर उसमें थोड़े से सूखे फेन या ताज़े फेन डाल कर और हिला दो। ऊपर से बोतल का मुंह कार्ड बोर्ड से ढकदो। इस बोतल में तीन ही चीज़ें हैं, स्प्रिट या अल्कोहल नही है। कुछ ही घंटों बाद उसमें अल्कोहल पैदा होने लगेगी। यह अल्कोहल कहां से आई? सड़ाव से। सड़ने के बाद शक्कर की अल्कोहल और कार्बन डाइऑक्साइड

बन गई। यदि हम बोतल को और भी १–२ घंटे तक देखते रहें तो उसमें सड़न की गन्ध आने लगेगी और छोटे छोटे बबूले उठते हुए नज़र आयेंगे। यदि हम ढक्कन हटाकर एक दियासलाई या बत्ती जला कर एक दम अन्दर ले जावें तो वह बुझ जायगी। इससे यह प्रमाणित हुआ कि बोतल में साफ़ हवा नहीं है, बल्कि कारबन डाइऑक्साइड है जिसने बत्ती को बुझा दिया। अब इस बोतल का थोड़ा मिश्रण डिस्टि-लिंग यन्त्र में डाल कर परीक्षण करें तो अल्कोहल भी प्रमाणित हो जायगी।

ऐसे ही फेनों को एकत्र करके भट्टी में चुआ कर शराब बनाते और फिल्टर करके बोतलों में भरते हैं जैसा कि अगले प्रकरणों में वर्णन किया जायगा।

प्रकरण ६

अंगूरी शराब

शराब बनाने के लिये अंगूर जैसे श्रेष्ठ फल को भी नष्ट किया जाता है। शराब बनने पर अंगूर के बहुत से गुण नष्ट हो जाते हैं। यहां हम अंगूर और वाइन (अंगूर की शराब) के गुण अलग २ लिखते हैं:—

अंगूर		वाइन	
Water ...	80·0	Water	78·0
Salts ...	0·4	Salts	0·2
Albumen	0·7	Albumen ...	0·3
Sugar	13·0	Sugar ...	3·5
Cellulose	5·1	Alcohal ...	17·5
Tortaric Acid	0·8	Refuse ...	0·5
	100·0		100·0

अंगूरों में भी प्रकृति ने अल्कोहल नहीं दिया। अंगूर सर्वप्रिय फल है और उसकी अनेक जातियां हैं। योरोप में दो हज़ार प्रकार के अंगूरों की पौद होती है। और सभी देशों में लोग इसे जानते हैं। कवियों ने इसकी तुलना में अपनी कविता को रंग दिया है। अंगूर का कोई भाग व्यर्थ नहीं जाता, यह देखने में आकर्षक, खाने में स्वादिष्ट, और गुणों में पोषक तत्त्व है। काबुल से परे इसे सुखाकर मुनक्के और किसमिस

बनाते हैं, और वहां के निवासियों का यही भोजन है। यह ऐसी ज़मीन में पैदा होता है, जहां अन्य पौद नहीं हो सकतीं। खूब रोशनी हो, पहाड़ी प्रदेश की ढालू और दरदरी मिट्टी हो। अंगूर के पौदे को जितना प्रकाश और हवा मिलेगी उतना ही वह पनपेगा।

अंगूर की ऊपरी तह पर खुर्दबीन से फ़ेन के सूक्ष्म परमाणु देखे जा सकते हैं। ये परमाणु यदि अन्दर की तह तक पहुंच सकते तो अंगूर में स्वतः अल्कोहल होती, परन्तु अंगूर छिलके में बन्द रहता है उन में न पानी प्रवेश कर सकता है न हवा, इसलिये ऊपरी सतह पर रहने वाले परमाणु अन्दर प्रवेश नहीं कर पाते। छिलका कट जाने अथवा फट जाने से जिन अंगूरों में ये प्रवेश कर लेते हैं ये अंगूर सड़ जाते हैं।

शराब बनाने के लिये पहले अंगूरों को मथ कर रस निकालते हैं। यह रस प्राचीन समय में पैरों से कुचल कर निकाला जाता था, अब मशीनों से निकाला जाता है। इस रस को मस्ट कहते हैं। मस्ट में अंगूर के समस्त गुण और पोषक गुण उपस्थित रहते हैं। फिर इसे सड़ाते और फेन उत्पन्न करके शराब चुआते हैं। सड़ने पर इसके गर्भी गुण नष्ट होजाते हैं और फिर अंगूर अंगूर नहीं रह जाता।

दुनियां में शराब बनाने के अनेक बड़े २ कारखाने हैं। पेरिस की नुमाइश में दुनियां के प्रत्येक भाग से १५०० फ़्रलाल अपनी २ शराबों के ३५००० भिन्न भिन्न नमूने लेकर आये थे।

यदि हम अंगूरों का ताज़ा रस निकाल कर पियें तो यह एक शक्तिशाली पेय है। अंगूरों के रस को बहुत दिन तक सड़ने से बचाने के कुछ उपाय हम यहाँ बतलाते हैं:—

१. उसे थोड़ी गरमी पहुँचाई जाय। (६०°C. या १४०° F. से ऊपर तापमान की गरमाई में उसमें सड़न नहीं होगी।)

२. उसे ठंडक पहुँचाई जाय। (५° C. या ४०° F. से कम तापमान की ठंड में उसमें सड़न नहीं होगी।)

३. उसका शर्बत बनाकर रखा जाय, या उसे पकाकर सुखा लिया जाय।

४. उसमें इतनी शक्कर मिलाओ कि वह गाढ़ा शरबत हो जाय।

५. उसमें सड़न रोकने वाली चीज़ें मिलाई जाँय, जैसे Salicylic Boracic, Sulphurous, Benzoic, and Cinnamic acids.

६. रस के सार को अलग कर दिया जाय।

७. उसे मूर्छित करके रखदो जहाँ वायु का प्रवेश न हो।

प्राचीन काल में लोग इन उपायों को भली भाँति जानते थे, और जहां तक हमारा विश्वास है वे इन्हीं उपायों से रखे हुए रसों का पान करते थे। इनमें अल्कोहल न होने की वजह से इन्हें शराब नहीं कहा जा सकता। अब भी किन्हीं पाश्चात्य देशों में बिना सड़ाव की शराब बनाई जाती है, उसमें रस को थोड़ा गरम करके, जिससे उसमें फेन के परमाणु मर जांय, हवाबन्द बोतलों में भरकर रख देते हैं। ऐसी शराब धार्मिक व्यवहार में लाई जाती है। मेसर्स फ्रेन्क रिट, मण्डे एण्ड कम्पनी, केन्सिंगटन ने इसी प्रकार की शराब बनाकर बहुत बड़ा व्यवसाय फैला लिया। वे डाक्टरी शराब भी बनाते हैं जिसमें अल्कोहल नहीं होता। स्वीटज़रलैंड में 'सेन्स-अल्कोहल वाइन कम्पनी' ने बिना

अल्कोहल की शराब बनाकर अपने देश में इसी को वर्तने की लोगों से प्रेरणा की है। ऐसा ही प्रयत्न Ararat, Victoia, Australia ने भी किया है। वहां इस प्रयत्न के सफल होने की पूर्ण आशा है क्योंकि वहां अंगूर बहुत पैदा होते हैं। इन देशों में ऐसी शराब बनाने के बहुत बड़े कारखाने हैं, अंगूरों के ढेरों को मशीन में कुचल कर रस निकालते हैं, फिर इस रस को नितार कर गरम करते हैं, गरम करके हवाबन्द बड़ी २ जारों में रख देते हैं जिससे इनमें सड़न न हो। एक वर्ष बाद इसे खोल कर फिल्टर करके बोतलों में भर कर बाजार में बेचते हैं। इनका विज्ञापन ही यह होता है "Grape juice the Best Drink."

यहां हम एक प्रयोग मूर्छित करने का बतलाते हैं जिससे सड़न रुक सकती है:—

एक साफ बोतल में थोड़ा ताज़ा दूध भरो और गरम करो यहां तक कि वह उबलने लगे। बोतल में से भाप निकलेगी, भाप के साथ बोतल की हवा भी निकलेगी। गरमी से बोतल के या दूध के परमाणु मर जायंगे। दूध गरम करने से पहले, ऊनी या रूईदार कपड़े के दो चार छोटे टुकड़े चूल्हे पर गरम होने को रख देने चाहिये। ये इस तरह गरम तो हो जांय किन्तु जलें नहीं, गरम होने से इनकी हवा निकल जायगी तथा इनके परिमाणु भी नष्ट हो जावेंगे। जब दूध उबल रहा हो, तब इन गरम कपड़ों के टुकड़ों को दूध की बोतल में डाट की तरह भर दो और बोतल को ठंडा होने के लिये रख दो। कपड़ों की डाट के मार्ग द्वारा हवा बोतल में प्रवेश कर सकती है, पर इसके छन परमाणु

कपड़े में ही अटके रहेंगे, अन्दर दूध में नहीं जा सकेंगे। इस प्रकार दूध एक दो वर्ष तक मीठा और स्वादिष्ट बना रह सकता है। पर इतना ध्यान रखिये कि दूध को प्रति दिन एक बार थोड़ा उबाल देना चाहिये। यह सत्य है कि दूध नित्य उबाले जाने से एक दिन अवश्य गाढ़ा हो जायगा, परन्तु यह बिगड़ेगा नहीं, सड़ेगा नहीं। इसे आप चाहें जब खा सकते हैं, वही स्वाद रहेगा। हम अपने घरों में एक दो दिन भी दूध को दूध जैसा नहीं रख सकते क्योंकि हवा के परमाणु उसमें पहुंच कर उसे बिगाड़ देते हैं।

शराब बनाने का थोड़ा हाल हमें ज्ञात हो चुका है। शराबों में अल्कोहल की मात्रा एकसी नहीं होती, ९% से २४% तक होती है।

Claret शराब में सबसे कम अल्कोहल होती है इसलिये वह सबसे कमज़ोर शराब होती है। Port और Marsala शराब सबसे तेज़ होती हैं। जिस शराब में १४% से अधिक अल्कोहल होती है, उसे तेज़ समझ लेना चाहिये। क्योंकि सड़ाव में से १४% अल्कोहल बन चुकने पर फेन बनने बन्द हो जाते हैं। ब्रिटिश वाइनें, जैसे Orange wine, Raspberry wine इनमें १० से १२% अल्कोहल होता है। सेव की Cider, और नास्पाती की Perry शराब में ५ से १०% तक अल्कोहल होता है।

प्रकरण ७

चुआना

सभी प्रकार की अल्कोहली शराब चुआ कर बनाई जाती है। अर्थात् सड़न के बाद उस पदार्थ को भाप द्वारा पानी बनाते हैं। चुआना अथवा अर्क खींचना अति प्राचीन पद्धति है। कहते हैं कि सबसे पहले यह पद्धति चीनियों को ज्ञात थी। चीनियों से और लोगों ने सीखी। प्रसिद्ध रासायनिक आबूकेसिस को एक ऐसा अर्क तैयार करना पड़ा जो जीवन को अमर बनाने वाला था, उसी अर्क के लिए उसने इस पद्धति को चलाया। प्राचीन भभके का आकार-प्रकार बहुत ही भद्दे ढंग का था। ज्यों २ सभ्यता बढ़ती गई त्यों २ नये रूप बनते गये। आधुनिक काल में ये भभके मशीन की शक्ल में बनाये जाते हैं जिसमें आंच मींच कर अर्क खींच सकते हैं। बारम्बार आग ठीक करने और ठण्डा पानी बदलने का झंझट नहीं करना पड़ता। आयर्लैंड और स्काटलैंड में इन यन्त्रों द्वारा अल्कोहल और ईथर* दोनों ही खींची जाती हैं। तेज अल्कोहल और ईथर में से स्प्रिट खींची जाती है। स्प्रिट खींचना बहुत सावधानी और फुर्ती का काम है। Coffey के कारखाने में इस प्रकार की आधुनिक मशीन लगी हुई है जिसमें दो अथवा अधिक आंच एक ही साथ खिंच जाती हैं। जितनी तेज अल्कोहल लेनी हो उतनी ही आंच खींची जाती है। Coffey की भट्ठी एक स्टैण्डर्ड भट्ठी मानी

---

* शराब की रूह को ईथर कहते हैं।

जाती है। इस भट्टी में ६५° से ६७° तक की एकसी स्प्रिट* तैयार होती रहती है। चुआने के बाद शराब तैयार हो जाती है। उसे फिल्टर करके हवा बन्द बोतलों में भरकर रख देते हैं। पुरानी होने पर व्यवहार में लाते हैं, जितनी पुरानी होगी उतनी ही अच्छी होगी।

यदि कोई व्यक्ति प्रति दिन एक पिन्ट बीयर पीये तो एक वर्ष में दो गैलन अल्कोहल उसके पेट में पहुंचेगी।

बहुत सी स्प्रिट इस प्रकार बनती हैं:—

ब्रान्डी, वाइन से अथवा वाइन के बचे हुए तलछट और मसाले से बनती है। एक हजार गैलन वाइन में १००–१५० गैलन तक वाइन स्प्रिट निकल आती है। *रम*, शक्कर को जोश देकर और सड़ा कर बनाई जाती है। शक्कर के झाग और मैल में पानी मिलाकर सड़ा कर खींचने से साधारण रम तैयार होती है। *विस्की* और *जिन*, अनाज को सड़ा कर बनाते हैं, लेकिन आलू, शक्कर, शक्कर का मैल और चुकन्दर की जड़ से भी बनती है। सौ पौंड माल में चालीस पौंड प्रूफ़ स्प्रिट बैठती है। एक बुशल माल्ट अनाज में दो गैलन प्रूफ स्प्रिट बैठती है। आठ बुशल सड़े हुए माल्ट में बीस गैलन प्रूफ स्प्रिट बनती है।

ब्रान्डी को डाक्टरी उपयोग में इसलिए लाते हैं कि इस के गुण डाक्टरी उपचार में आ सकने योग्य हैं। और इस बात की चेष्टा की जा रही है कि ब्रान्डी के गुण और उपचार सर्वत्र समान हो जांय जिससे डाक्टरों और मरीज़ों को 'अल्कोहलशक्ति' का निर्धारित ज्ञान हो सके।

---

* यहां स्प्रिट का अर्थ शराब ही है, जलाने की स्प्रिट इससे भिन्न होती है।

और भी कुछ पदार्थ हैं जो ब्रान्डी के समान ही लाभ करते हैं और जो अल्कोहल के दोष से रहित हैं। डाक्टर जे० जे० रिज बेहोशी, धड़कन और दर्दों को हरने के लिये ब्रान्डी के बदले में इन उपायों का प्रयोग बताते हैं:—

१. पानी, जितना गरम पिया जा सके, थोड़ी शक्कर मिलाकर या ऐसा ही चूंस चूंस कर घूंट घूंट पिये। ठंडा पानी भी चुस्की ले लेकर पी सकते हैं। दिल की चाल को बढ़ाकर ठीक करता है।

२. अदरक, ६ माशे अदरक को कुचल कर दो छटांक उबलते हुए पानी में डालो, और उतार कर छान लो। फिर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम २ घूंट पियो।

३. पोदीने को कुचल कर उबलते पानी में डालो। छान कर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम २ घूंट पियो।

प्रकरण ८

अल्कोहल और पानी

अल्कोहल देखने में पानी के समान है, परन्तु इसके गुण उससे सर्वथा भिन्न हैं। पानी का जो उपयोग हो सकता है, वह अल्कोहल का नहीं हो सकता। यदि पानी का घनत्व १ मान लिया जाय तो अल्कोहल का घनत्व ·८०९५ होगा। इससे यह सिद्ध हुआ कि पानी से अल्कोहल हल्की और पतली है।

एक काँच की ट्यूब में थोड़ा अल्कोहल भरो और किसी हल्के रंग से रंग दो। एक दूसरी ट्यूब में थोड़ा पानी भरो और इसमें पहली ट्यूब में से धीरे से अल्कोहल डालो। अल्कोहल पानी में डूबेगी नहीं, पर यदि उसे हिला कर मिलाओ तो मिल जायगी। चूँकि एक चीज़ हल्की है दूसरी भारी, इसलिये एक पिन्ट अल्कोहल और एक पिन्ट पानी मिल कर एक क्वार्ट नहीं हो सकेंगे। ऐसा १०० क्वार्ट मिश्रण बनाने के लिये ४९ क्वार्ट पानी और ५५ क्वार्ट अल्कोहल मिलाना पड़ेगा। यों तो ४९ और ५५ मिलकर १०४ होते हैं। परन्तु वह मिश्रण १०० ही बनेगा। दोनों तरल वास्तव में एक दूहरे में घुले हैं, मिले नहीं।

यदि हम काँच के एक गिलास में बराबर बराबर मात्रा में अल्कोहल और पानी मिलावें और अच्छी तरह हिलादें तो हमें तीन बातें दीखेंगी।

१. छोटे २ बबूले निकल रहे हैं। पानी में हवा मिली रहती है, और अल्कोहल के मिश्रण से हवा के बबूले बनने शुरू होते हैं।

२. दोनों के मिलने से गरमी उत्पन्न होगी और गिलास छूने से कुछ गर्म प्रतीत होगा।

३. दोनों तरल पदार्थ बराबर बराबर हैं फिर भी गिलास में उन्होंने दूनी जगह से कम जगह घेरी है।

सब पदार्थ अपने २ कार्य में अच्छे हैं। परन्तु विपरीत कार्य करने से वे विष के समान हो जाते हैं। पानी पेट और अंतड़ियों के लिये अच्छी चीज़ है और वह दिन भर में बहुत सा हमारे पेट में पहुँचता है, परन्तु यह फेफड़ों के लिये हानिप्रद है। यदि यह फेफड़ों में रम जाय तो कुछ ही मिनटों में मृत्यु हो जायगी। Carbon Dioxide पेड़ों के पनपने के लिये जीवन मूल है, पर यदि कोई जानवर इसमें सांस ले तो वह समाप्त हो जायगा। अल्कोहल भी ऐसी ही चीज़ है, यह हमेशा भयानक और खतरनाक है।

इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिये कि अल्कोहल जितनी भी अधिक पी जायगी उतनी ही वह विष है।

अल्कोहल में यह विशेषता है कि वह किसी भी वस्तु को सख्त और बेगुली बनाए रखेगी। हम अजायबघरों और डाक्टरी कालिजों में बड़ी २ कांच की जारों में मरे हुए जानवरों, पक्षियों और मनुष्य शरीर के हिस्सों को अल्कोहल में डूबे हुए देखते हैं। वे चीजें कई वर्ष तक बिना बिगड़ी बनी रहती हैं। एक बार एक डाक्टर ने कहा था 'कि यदि तुम किसी मृतक शरीर को चिरकाल तक रखना चाहते हो तो उसे अल्कोहल में डुबो कर रखो, पर यदि तुम जीवित शरीर को मारना चाहते हो तो उसे अल्कोहल पीने को दो।'

पांच कांच की ट्यूब लो, एक में मछली, दूसरी में मांस, तीसरी में रोटी, चौथी में शक्कर और पाँचवी में मुनक्के डाल कर उनमें अल्को-हल भर कर कस कर डाट लगादो, और बहुत दिनों तक रखा रहने दो। आप जब भी देखेंगे सब चीज़ें ज्यों की त्यों पायेंगी, घुलेंगी नहीं। यदि हम भोजन में अल्कोहल का व्यवहार करें तो वह भोजन के पचने में बाधा डालेगी।

दो ट्यूबों में नमक डालो और एक में पानी और दूसरी में अल्कोहल भरदो। थोड़ी देर बाद देखने से पता लगेगा कि पानी ने नमक को घोल दिया है, अल्कोहल ने नहीं। इसी प्रकार शक्कर को भी देखो। शक्कर पानी में घुल जायगी, अल्कोहल में नहीं।

कांच के दो गिलास लो, एक में पानी भरो दूसरे में अल्कोहल, दोनों में मिश्री की एक एक डली को रंग कर तागे से अधर लटका दो। ध्यान से देखते रहो कि पानी ने रंग भी घोला है और मिश्री भी। किन्तु अल्को हल ने रंग को घोला, मिश्री को नहीं

अल्कोहल भोजन को पचने से रोकती ही नहीं बल्कि वह घुले हुए भोज्य रस को अलग भी कर देती है। एक गिलास में नमक का घोल बनाओ। पानी को गरम करके उसमें नमक घोलो; वह घुल जाय तब और डालो, जब तक घुलता जाय तब तक घुलाते रहो, जब घुलना बन्द हो जाय और नमक तली में बेघुला बैठने लगे, तब घोलना बन्द कर दो। ऐसे घोल को ठंडा करके नितार कर दूसरे गिलास में ले लो। अब यदि इस घोल में थोड़ी अल्कोहल डालो तो देखोगे कि घुला हुआ नमक अलग होकर नीचे गाद की भांति बैठ गया है। जो

काम पानी ने किया था उस काम को अल्कोहल ने सिकुड़न कर दिया है।

दो गिलास और लो। एक में अल्कोहल भरो और दूसरे में पानी। दोनों में अंडे की सफेदी डालो। अल्कोहल में अंडे की सफेदी सिमट कर कड़ी हो जायगी, पानी में वह थोड़ी घुलेगी। पानी में गरम करके अंडे को पकाते हैं, तब भी वह कड़ी तो हो जाती है परन्तु सुपच्य रहती है। अंडे को धीमी आँच से इतना पकाना चाहिये कि वह अधिक कड़ा न हो जाय। बहुत तेज १८०° F. और २१२° F. पकाने से वह कड़ा और अपच्य हो जाता है। इन प्रयोगों से यह प्रमाणित होता है कि अल्कोहल पानी की तुलना में भोजन नहीं अपितु विष है। वह पचे हुए भोजन में भी बाधा डालता है। प्रकृति ने हमें पानी दिया है और हमें जब २ प्यास लगती है तब तब हम पानी पीते हैं. अन्य पेय उसकी बराबरी नहीं कर सकते। अधिक पानी पीना पेट को निर्मल और शुद्ध ही करता है। जिस प्रकार प्रकाश और अंधेरा, गर्मी और ठंडक, आग और पानी एक दूसरे के विपरीत और शत्रु हैं उसी प्रकार अल्कोहल और पानी परस्पर में विपरीत शत्रु हैं।

जिस प्रकार हवा हमें जीवित रखने के लिये आवश्यक है उसी प्रकार पानी भी आवश्यक है। बिना पानी हम जीवित नहीं रह सकते। मनुष्य शरीर के लगभग ६० प्रतिशत अवयव पानी है। पानी नसों और पुट्ठों के लिए परमावश्यक है। हड्डों में २२ प्रतिशत, नसों में ७६ प्रतिशत, रक्त में ७९ प्रतिशत, लारग्रन्थी के रस में ९० प्रतिशत पानी का अंश रहता है। यदि हमें पेय पदार्थों में केवल पानी ही मिलता रहे तो हमारा शरीर कभी रोगी नहीं हो सकेगा।

एक बार अप्रैल सन् १८७७ में रॉन्डा पहाड़ियों की एक खान में चार आदमी और एक लड़का कैद करके बन्द कर दिये गये। उन्हें खाने को कुछ नहीं दिया गया, केवल पानी का एक स्रोत उसमें बहता था, इनमें से एक आदमी के पास चोरी से शराब की एक बोतल छिपी रह गई थी। दस दिन के बाद जब उन्हें छोड़ देने के लिये निकाला गया तो पता चला कि उस व्यक्ति ने पानी को छुआ भी नहीं शराब ही पी, वह आठवें दिन ही मर चुका था। शेष सबने पानी ही पानी पिया और वे जीवित निकले।

प्रकरण ९

अल्कोहल एक विष है

अल्कोहल पानी के विपरीत ही नहीं, बल्कि एक तीव्र विष है। भोजन में यह गुण होना चाहिये कि वह शरीर का पोषण करे, नसों को बढ़ावे और शक्ति उत्पन्न करे। लेकिन विष में यह गुण नहीं होते। भोजन जीवन देता है, विष लेता है। डाक्टर लेथबे विष की परिभाषा इस प्रकार करते हैं—'जो खाद्य पदार्थ जीवित शरीर की नसों की चेतन शक्ति को नष्ट करता है अथवा जीवन का ह्रास करता है वह विष है।'

अल्कोहल के विषैले प्रभाव इस प्रकार हैं:—

१. नशा करती है। मस्तिष्क में उत्तेजना और व्याकुलता उत्पन्न करती है, मस्तिष्क के विकास को रोकती है, ज्ञान तन्तुओं को समेटती है।

२. नसों और पुट्ठों की छोटी सैलों को नष्ट करके उनका बढ़ना रोक देती है।

३. आक्सीज़न के प्रचार को रोकती है जिससे गर्मी बढ़ने लगती है।

कुछ लोग कहते हैं कि शराब नशा करती है इसीलिये इसे विष कहते हैं, शराब तो मौजमस्ती की एक दिलचस्प चीज़ है यह विष नहीं हो सकता। किन्तु हम वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा इसकी अन्य विषों से तुलना करके बतायेंगे:—

चार ट्यूबों में बराबर बराबर कच्चे अंडे की सफेदी डालो। एक ट्यूब में Nitric acid, दूसरी में Carbolic acid, तीसरी में Corrosive Sublimate और चौथी में अल्कोहल भरो। सबको हिला हिला कर रखदो। थोड़ी देर बाद देखोगे कि सब में अंडे की सफेदी एक ही तरह से जम गई है। यद्यपि चारों पदार्थ भिन्न भिन्न गुणों वाले हैं परन्तु सबका रासायनिक प्रभाव एक है। इससे यह सिद्ध हुआ कि अल्कोहल भी शेष तीनों जैसे गुण रखती है। ये तीनों चीज़ें विष हैं। इसलिये अल्कोहल भी विष हुई। पौदों और पशु पक्षियों पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे गये हैं और बराबर यही प्रमाणित हुआ कि अल्कोहल विष है। अमेरिकन डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचा· र्डसन ने एक बार मडूसा मछली पर यह पयोग किया। क्यूगार्डन्स के तालाब विक्टोरिया रेजिया में पानी का टेम्प्रेचर ८०° F. रक्खा जाता है, उसमें मडूसा मछली पलती हैं। पानी के दो बर्तन लिये गये, प्रत्येक में १००० ग्रेन तालाब का पानी भरा गया। एक बर्तन में एक ग्रेन अल्कोहल डालकर अच्छी तरह मिलादी गई। फिर दोनों में एक एक मडूसा मछली डाली गई। अल्कोहल का तत्काल प्रभाव देखने में आया, दो मिनट में ही मछली की हरकतें जो एक मिनट में ७४ गिनी गई थीं बन्द हो गईं, और वह नीचे बैठती गई। वह बहुत सिकुड़ गई थी। पांच मिनट के बाद वह बिल्कुल पेंदी में गिर पड़ी, और जड़वत् होगई। इसे तुरन्त निकाल कर, एक दूसरे बर्तन में जिसमें खाली टैन्क का पानी भरा था, डाला गया और २४ घन्टे तक उसी में पड़ी रहने दी गई, पर वह अच्छी नहीं हुई। जबकि दूसरे बर्तन वाली मछली बराबर एक सी

हरकत करती और खेलती रही। इससे यह प्रमाणित हुआ कि १०००वें पानी में अल्कोहल का १ वाँ भाग भी जीवन के लिये कितना भयानक है। डाक्टर रिचर्डसन कहते हैं कि मढ़ूआ पर यह प्रयोग मैंने अनेक प्रकार से करके देखा, मनुष्यों पर भी करके देखा, प्रत्येक अवस्था में अल्कोहल का विषैला प्रभाव हुआ।

डाक्टर जे० जे० रैजे ने वनस्पतियों पर अल्कोहल के प्रयोग किये थे। उन्होंने बीजों को अल्कोहल और पानी के समीप रखा और धूप रोशनी तथा खाद की एकसी व्यवस्था की। परन्तु अल्कोहल ने उन्हें पनपने नहीं दिया, अधिक अल्कोहल के कारण वे मर गए। डाक्टर एस० डब्लू० डेवलपन ने प्याज पर प्रयोग करके देखा। उन्होंने प्याज को पानी और अल्कोहल दोनों मिला कर बोया। अल्कोहल ने प्याज को बढ़ने नहीं दिया। यदि अल्कोहल अधिक डाली गई तो प्याज बिल्कुल ही मर गई। आलू और गेहूं पर भी इसी प्रकार के प्रयोग किये गये और सब का एक ही परिणाम रहा। सड़न में से १४% से अधिक अल्कोहल उत्पन्न नहीं होती, सो भी इसी कारण से; क्योंकि जब १४% अल्कोहल बन चुकती है तब वह पौधों की सेलों को मार देती है।

अल्कोहल के विष होने का सबसे मुख्य प्रमाण तो यह है कि यह मारती है। अल्कोहल पर आज तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं, वे सभी इसे विष सिद्ध करती हैं। ब्रिटिश मेडीकल एसोसियेशन के सम्मुख अपना निबन्ध पढ़ते हुए डाक्टर आर्मस्ट्रांग जेट ने कहा था कि मेरी दूसरी तजवीज़ यह है कि अल्कोहल एक विष है और इससे प्रति वर्ष अनेक मृत्यु होती हैं, मुझे खेद है कि मेरी इस तजवीज़ का अनु-

विवाद नहीं किया जायगा क्योंकि सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में इसका अनुभव करते हैं। बीमा कम्पनियों ने इसके आँकड़े भी दिये हैं। मैं तो एक ही बात दोहराऊँगा कि जो अधिक सुरापान करते हैं वे अधिक विष पीते हैं।'

डाक्टर एवर्ट, सिनियर फ़िज़िशियन एट सेन्ट जार्ज हॉस्पिटल, ने अपने लेक्चर में कहा था कि 'अल्कोहल का नाम उन विषों में सबसे पहले दर्ज़ है जिन्हें जनता अधिक से अधिक खा पी सकती है।' डाक्टर प्रोफेसर सिम्वुडहेड स्पष्ट कहते हैं कि 'मैं बहुत काल से इस बात का अनुभव करता आया हूँ कि अल्कोहल केवल शारीरिक विष ही नहीं है बल्कि वह रोग उपचार में जब अन्य उपचारिक विषों के साथ दिया जाता है तब वह उन सब विषों के प्राकृतिक गुणों को नष्ट कर डालता है और उन्हें और भी अधिक क़ातिल विष बना कर रोगी को स्वस्थ करने में बाधा डालता है।'

स्वर्गीय डाक्टर नॉरमन कर ने हिसाब लगाकर बताया था कि 'अल्कोहल के उपचार और आक्रमण से एक वर्ष में ४०,००० व्यक्ति मरे थे। यों प्रतिवर्ष १७०० मृत्यु की खानापूरी तो सरकारी रजिस्टरों में भी दर्ज होती है।' पुराने कुछ पत्रों की सूचनाएँ देखिये:—

Daily Chronicle, (२७ जनवरी १८९९) 'वाल्टर लेघ पेम्बरटन, आयु ४५ वर्ष, एक बीमा कम्पनी के इन्सपेक्टर, एक होटल के कमरे में मरे पाये गये। ज्यूरी ने अधिक शराब पीने का परिणाम निर्णय किया।'

Daily Chronicle, (२ फरवरी १८९९) 'एडवर्ड जी० टोम-सेट, एक ट्रेन में मरे पाये गये। डाक्टर निकल ने पोस्टमार्टम करके बताया कि अधिक शराब ने इन्हें मार डाला।'

Westminister Gazette, (२६ मार्च १९०२) 'एक ९ वर्षीय लड़का जिसका नाम थोमस टरने था, अपने पिता की रखी हुई शराब चखने के विचार से पीते ही मर गया।'

इसी में दूसरा समाचार यह भी था, 'लैण्डक्वार्ट में एक जर्मन मज़दूर ने होड़ में आकर तीन गिल 'नीट ब्रान्डी' पीली। पीते ही मर गया।'

Daily Chronicle, (२५ मई १८९९) 'मिस्टर जी० पी व्याट, इंगलैंड के कोरोनर ने घोषणा की है कि १० में से ९ मृत्यु जिनकी मैंने छानबीन की अल्कोहल के कारण थीं।

Western Daily Mail, (२३ जून १८९९) 'मिस्टर आर० जे० राइस को एक तीन वर्ष के बच्चे मेरी-एलान-ईवान्स की मृत्यु की जांच करते समय ज्ञात हुआ कि उसने अपने पिता की शराब कमरे में खेलते हुए पी ली थी।'

Daily Chronicle (४ नवम्बर १८९९) 'डाक्टर ए० एन्ड्रोम ने एक २१ वर्षीय अध्यापिका एलिजाबेथ की लाश की जांच करके जूरी को बतलाया कि अल्कोहल के विष से यह मृत्यु हुई है।'

Daily Chronicle (११ अक्टूबर १९०८) 'न्यूयार्क शहर में पिछले ११ दिनों के अन्दर २५ आकस्मिक मौत हुई हैं। जांच करने पर पता चला कि एक दुकानदार ने दुकान उठने के लिये किसी की

सस्ती बेच दिया। लोगों ने खरीद कर पी। पुलिस ने पता चलाया कि यह विस्की लकड़ी की सेलों में बनाई गई थी जिससे इसमें लकड़ी की अल्कोहल का अंश आ गया था। यह विस्की चोरी से बनी थी। काफी दौड़धूप के बाद बनाने वाले पकड़े गये हैं।'

सन् १९२१ की बम्बई के एक शराबी रईस की घटना है:—

'एक प्रख्यात कोड़पति का इकलौता पुत्र करोड़ों की सम्पदा और एक १८ वर्षांग सगर्भा स्त्री को छोड़ कर मरा। मृत्यु के समय उसकी आयु २४ वर्ष की थी। उसका शरीर काला, रूखा और अत्यन्त घृणित हो गया था। मुख से साफ शब्द नहीं निकलता था, गद्गद् वाणी से हकला कर बोलता और उसका प्रति क्षण प्रत्येक अङ्ग कांपता था।'

सन् १९२३ की एक शराबी राजा की घटना इस प्रकार है:—

'.......... के अत्यन्त सुन्दर राजा २६ वर्ष की आयु में मर गये। उनका शरीर पीला हल्दी के समान हो गया था, नेत्र भी पीले थे, जिगर और गुर्दे फूल कर सूख गये थे, एक एक बूंद पेशाब कष्ट से उतरता था, शरीर सूख कर हड्डी का ढांचा रह गया था, दस्त दो चार दिन तक न उतरता था। फेंफड़ा गलकर सड़ गया था। पाँच पाँच मिनट में ज़ुबान ऐंठती थी और वें शराब के सिवा कुछ न पीते थे, वे बचने के लिये आतुर थे, पर चीख़ २ कर प्राण निकल गये !!!'

प्रकरण १०

अल्कोहल का प्रयोग

अभी तक हमने यही देखा है कि अल्कोहल बनाने में अनेक खाद्य पदार्थों को नष्ट किया जाता है और यह भयानक विष है। अब प्रश्न यह उठता है कि अल्कोहल किसी प्रयोग में आ भी सकता है या नहीं ? इसलिये हमें इसके गुणों का भी परीक्षण करना चाहिये।

अल्कोहल भी काम में आती है। यह विष तो अवश्य है परन्तु भोजन बना लेने पर। वैज्ञानिक प्रयोगों में यह बहुत अच्छी वस्तु है। अल्कोहल के विरुद्ध जितने भी आन्दोलन चले हैं सभी ने इस नशीली चीज़ को पीने और भोजन बना लेने का विरोध किया है, पर बाहरी उपचारों का नहीं। विज्ञान हमें बताता है कि अल्कोहल जीवित शरीर के बाहरी प्रयोग में आ सकता है, अन्दर नहीं।

अल्कोहल और पानी के भेद :

अल्कोहल	पानी
१७२° F. पर उबलती है।	२१२° F. पर उबलता है।
जमती नहीं।	जम जाता है।
आसानी से आंच पकड़ लेती है।	नहीं जल सकता।
अग्नि को भड़काती है।	अग्नि को बुझाता है।
ईथर की गन्ध आती है।	गन्धहीन होता है।
जलने योग्य है।	जलने योग्य नहीं।

चमड़ी को जलाकर झुलसा देता है।	चमड़ी को शीतल और ताज़ा बनाता है।
जीवन के लिये अनावश्यक है।	जीवन के लिये आवश्यक है।
बीजों को मार देता है।	बीजों को उपजाता है।
भोजन को घोलती नहीं।	भोजन को मुलायम बनाता है।
विष है।	स्वयं भोजन है।
नशीली है।	नशा नहीं है।
शरीर को हानि पहुंचाती है।	शरीर को लाभ पहुंचाता है।
मल को रोकती है।	मल को निकालता है।
किसी भी भोजन में पैदा नहीं होती।	भोजन में मिला रहता है।
प्यास पैदा करती है।	प्यास बुझाता है।

अल्कोहल में राल, चमड़ी, गोंद कपूर आदि चीजें घुल सकती हैं इसलिये इससे वार्निस, पॉलिश और सेन्ट तैयार होते हैं। बाज़ारों में जो उड़ने वाले बढ़िया सेन्ट बिकते हैं उनमें अल्कोहल ही उड़ती हैं। अल्को-हल में बहुत सी चीज़ों को डुबोकर रख सकते हैं। स्कूलों, कॉलिजों, अस्पतालों और म्युज़िमों में जो मरे हुए जानवर तथा शरीर अंग रक्खे रहते हैं, वे अल्कोहल के कारण बिगड़ने नहीं पाते।

अल्कोहल का दूसरा सुन्दर उपयोग ईथर बनाना है। ५ भाग तेज अल्कोहल और ६ भाग तेज गन्धक के तेजाब को गरम करो तो भाप बनेगी। इस भाप को नली द्वारा किसी बरतन में संग्रह करते जाओ यही ईथर है। ईथर बनाना बहुत ही नाज़ुक है सावधानी से बनानी चाहिये।

क्लोरोफार्म जो शस्त्र चिकित्सा में मनुष्य समाज के लिये सबसे अधिक उपयोगी वस्तु है, अल्कोहल से बनता है। अल्कोहल में Bleaching Powder मिलाकर चुआलो। फिर इसे शुद्ध कर लो, और दुबारा चुआओ। ऐसा कई बार करो। यही क्लोरोफ़ार्म है।

Cloral और इसी प्रकार की अन्य औषधियां जो डाक्टरी काम में अधिक उपयोगी साबित हुई हैं सब अल्कोहल से बनती हैं।

तीसरी खास चीज़ अल्कोहल से Methylated Spirits बनती है जो नित्य बहुत काम में आती है। मेथेलेटेड स्प्रिट में ९० % अल्कोहल और १० % Wood Spirit होती है। इस Wood Spirit में Paraffin या मिट्टी के तेल का अंश होता है, इसलिये स्प्रिट पीने के काम में नहीं आती है। अल्कोहल से टिन्चर भी बनते हैं। अल्कोहल मोटर और मोटर साइकिलों में पेट्रोल के बदले में भी काम आ सकती है।

संसार में तरल पदार्थों में सबसे प्रधान पानी है, पानी के बाद दूध, दूध के बाद गन्धक का तेजाब, तेजाब के बाद अल्कोहल है। अल्कोहल अनेक रूप में अनेक प्रकार से बनती और व्यवहार में आती है। पाठकों में से बहुत कम अल्कोहल के इस विस्तृत क्षेत्र को जानते होंगे।

यहाँ हम अल्कोहल के तीन फॉरमूले बताते हैं:—

Methyl Alcohal or
Wood sprit CH_3HO.
Ethyl Alcohal C_2H_5HO.
Amyl Alcohal or
Potato spirit $C_5H_{11}HO$.

तीनों प्रकार की अल्कोहलों को टीन की प्लेटों में रखकर नीचे आंच जलाओ तो तीनों जलने लगेंगी। पहली का धुंआ रंगरहित होगा, दूसरी में थोड़ी चमक होगी, तीसरी में अधिक चमक और धुंआ होगा। यह सब कार्बन की कम ज्यादा मात्रा के कारण है। इनमें से पहली और तीसरी पीने में व्यवहृत नहीं होतीं, दूसरी होती है। अब भोजन और अल्कोहल की तुलना देखियेः—

भोजन	*अल्कोहल*
१. एकसी मात्रा सदैव एकसा ही प्रभाव करती है।	१. एकसा प्रभाव करने के लिये प्रतिदिन मात्रा बढ़ानी पड़ती है।
२. स्वाभाविक आहार मात्रा से अधिक लेने की इच्छा नहीं होती।	२. इसकी आहार इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, बढ़ती ही जाती है।
३. अचानक भोजन न मिलने पर स्नायुमंडल डूबता नहीं।	३. इसका अभ्यास हो जाने पर फिर एक बार न मिलने पर स्नायुमंडल डूब जायगा।
४. खाना देर तक खुला रखा जा सकता है।	४. अल्कोहल खुली नहीं रह सकती।
५. खाना शरीरमें जमा होता है।	५. अल्कोहल शरीर में जमा नहीं होती।
६. भोजन में पोषक तत्व हैं।	६. अल्कोहल में नहीं।
७. भोजन स्वस्थ शरीर का	७. अल्कोहल रोगी अवस्था में

आहार है ।

८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में भोजन त्यागने की सम्मति नहीं देगा ।

९. खाली पेट में भोजन कर सकते हैं ।

१०. युवावस्था में खूब खाओ ।

११. भोजन खाने के पश्चात कभी सरूर नहीं होता ।

१२. भोजन की मात्रा, मांस-पेशियों की बढ़ती के अनुसार बढ़ती है ।

काम में लाते हैं ।

८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में अल्कोहल कभी न पीने देगा ।

९. खाली पेट अल्कोहल नहीं ले सकते ।

१०. युवावस्था में अल्कोहल छूना भी नहीं चाहिये ।

११. पीने के बाद सरूर होता है ।

१२. अल्कोहल की मात्रा मांस-पेशियों के क्षीण होने पर बढ़ती है ।

प्रकरण ११

पानी भोजन है

भोजन का अधिक अंश पानी है। इससे शरीर के बहुत से अवयव बढ़ते और बनते हैं। शरीर में निम्न प्रमाण से पानी होता है:—

	Water P. C.		Water P. C.
Bones.	22	Skin	72
Fatty Tissues	30	Brain	75
Cartilage	55	Muscles	76
Liver	69	Lungs	79
Marrow	70	Kidneys	83
Blood	79	Intestinal Juice	97
Bile	86	Tears	98
Pancreatic Juice	88	Gastric Juice	99
Chyle	93	Saliva	99½
Lymph	96	Sweat	99½

एक स्वस्थ युवा आदमी चौबीस घंटों में, चमड़ी, फेंफड़े, और गुर्दों के द्वारा ८० से १०० औंस तक पानी खोता रहता है। इस कमी की पूर्त्ति के लिये प्रतिदिन ३॥ से ५ पिन्ट तक पानी की आवश्यकता है। अल्कोहल इस कमी का सूक्ष्मांश भी दूर नहीं कर सकती। प्रकृति ने पानी के सिवा अन्य कोई पदार्थ इस कमी को पूरा करने के लिये नहीं बनाया। यदि हम प्यास बुझाने के लिये, दूध, कोको, कॉफी, चाय,

लेमनेड आदि पीते हैं तो इन पेय पदार्थों में जो पानी मिला है, वही प्यास को बुझाने में सफल होता है अन्य अवयव नहीं। यह कहा जा सकता है कि जितना पानी निकल जाता है उतना पानी तो हम कभी पीते भी नहीं। परन्तु यह बात नहीं है, हम जितना असली पानी पीते हैं उतना तो पीते ही हैं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में भी भोजन आदि के द्वारा भी कुछ पानी पेट में पहुंचता है। नीचे हम भोजन में पानी का अंश बताते हैं :—

	Water P. C.		Water P. C.
Oat Meal	5	Bananas	74
Butter	10	Fish	74
Barley Meal	14	Potatoes	75
Haricot Beans	14	Grapes	80
Lentils	14	Parsnips	81
Maize	14	Beetroot	82
Peas	14	Apples	83
Wheaten flour	14	Peaches	85
Rice	15	Gooseberries	86
Figs	17	Milk	86
Bacon	22	Oranges	86
Cheese	34	Cabbages	89
Bread	40	Carrots	89
Walnuts (fresh)	44	Tomatoes	89
Eggs	72	Mushrooms	90
Fowl	73	Onions	91
Lean meat	73	Celery	93

Watercress	93	Sea Kale	93
Pears	94	Rhubarb	95
Vegetable Marrow	94	Cucumber	96
		Lettuce	96

यह न समझ लेना चाहिये कि ऊपर वर्णित पानी का अंश इन पदार्थों में पानी के रूप में ही है। यह भिन्न २ अंगों और अवयवों के सूत्रों में आबद्ध है। अब यह भली भांति प्रकट हो जाता है कि पानी जीवन के साथ कितना अधिक सम्बन्धित है। पानी अङ्गों का निर्माण करता, उन्हें पुष्ट करता और स्वच्छ करके, उनके मल को निकाल कर बाहर फेंक देता है। शरीर के प्रत्येक भाग से—नसों में से, रक्त नालियों में से, अन्तड़ियों में से, मेदे में से, पेट में से, मष्तिष्क में से, मल छुटता रहता है। सभी अंग नित्य स्वच्छ होते रहते और मल को त्यागते रहते हैं। यदि यह मल न निकले तो हम बीमार पड़ जाँय। एक मात्र पानी ही इस मल को बहाकर शरीर से बाहर करता है। अधिक मलावरोध से मृत्यु तक हो सकती है। हमारे शरीर में से प्रति दिन यदि ३ पिन्ट पानी निकलता हो तो इसमें $1\frac{1}{4}$ औंस मल जरूर मिला होगा।

अल्कोहल इस क्रिया को नहीं कर सकती। बल्कि वह शरीर के प्रत्येक अवयव को अवरोध कर देगी। शराबियों के गुर्दे प्रायः रोगी और बढ़े हुए होते हैं। ये गुर्दे झुर्रीदार और खुरदरे होते हैं। इनका रंग पीला ज़र्द होता है।

स्वस्थ गुर्दे का रंग गहरा लाल होगा। यह सम्भव नहीं कि प्रत्येक शराबी का पहले गुर्दा ही बिगड़े, क्योंकि शराब पहले किसी और अवयव

को भी पकड़ लेती है और फिर धीरे २ वहां तक पहुंचती है।

हमारे शरीर से चौबीस घन्टों में हमारे फेफड़ों से छै छटांक पानी सांस की भाप द्वारा निकलता है। इस पानी में फेफड़ों का मल कार्बन-द्विओषिद के रूप में मिला रहता है। शरीर का दूषित पानी पसीना बनकर भी निकलता रहता है। समस्त शरीर में दो लाख श्वेत-ग्रन्थियां हैं। संपूर्ण शरीर में पसीना बहने की नाली चौथाई इंच लम्बी होती है। शरीर की सब नालियों को मिलाकर लम्बा रख दिया जाय तो इनकी लम्बाई १० से २० मील लम्बी तक हो सकती है चमड़ी में से भाप बन कर प्रति दिन दो पौंड पानी उड़ता है। यदि चमड़ी इतनी क्रिया नहीं कर पाती तो इस क्रिया का भार फेफड़ों और गुर्दों पर आ पड़ता है। जिस प्रकार फेफड़ों और रक्त के लिये ताज़ा हवा की आवश्यकता है, उसी प्रकार चमड़ी को ठीक क्रिया में रखने के लिये शरीर के भीतर और बाहर स्वच्छ और अधिक पानी की आवश्यकता है। इस तमाम पानी का खिंचन, जो गुर्दों, फेफड़ों और चमड़ी के द्वारा बाहर निकलता है, रक्त में से होता है, क्योंकि रक्तवाहिनी नालियों में रक्त, इन तीनों अवयवों के पास से होकर गुजरता है। इस प्रकार रक्त निरन्तर व्यय होता रहता है, इस व्यय की पूर्ति शरीर में पानी को अधिक मात्रा में पहुंचाने से हो सकती है। इसीलिये पानी को आहार में गिना गया है।

शरीर के भिन्न भागों में रक्त की कमी इस प्रकार देखी जा सकती है:—

१. फेफड़े	[illegible] पानी कार्बन डाइऑक्साइड

२. चमड़ी	अधिक पानी थोड़ी कारबनडिओक्साइड थोड़ा मल
३. गुर्दे	अधिक पानी अधिक मल थोड़ी यूरिक एसिड

प्रकरण १२

प्यास

हमें प्यास उस समय लगती है जब शरीर में से प्रतिदिन [illegible] भाग मल बाहर निकल चुकता है। अधिक शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरों को प्यास अधिक लगती है क्योंकि शरीर में से पानी जल्दी २ खर्च होता है। अधिक नमक खाने से भी प्यास अधिक लगती है। प्रत्येक अवस्था में प्यास लगने पर सदैव बिल्कुल शुद्ध और निर्मल जल पीना चाहिये। जितना श्रेष्ठ जल होगा उतना ही श्रेष्ठ रक्त बनेगा, जितना श्रेष्ठ रक्त होगा उतना ही श्रेष्ठ शरीर और मस्तिष्क का विकास होगा।

यदि हम शरीर के किसी स्थान पर चमड़ी के ऊपर अल्कोहल में डूबा हुआ ब्लाटिंग पेपर रखदें और उसे दबादें, तो थोड़ी देर में ही उस स्थान पर झुर्रियां पड़ जावेंगी और वह लाल हो जावेगा। अर्थात् अल्कोहल चमड़ी के छेदों से प्रवेश करके रक्तवाहिनी नालियों में पहुंच गई। इसीलिये रोगी जिसे शराब का अभ्यास नहीं है, अल्कोहल के व्यवहार से सुधरने की अपेक्षा बिगड़ जाता है क्योंकि अल्कोहल शरीर के परमाणुओं को समेट कर शक्तिहीन बना देती है। अल्कोहल ने ज्यों ही रक्त में प्रवेश किया कि उसने तुरन्त स्वाभाविक क्रियाओं को बिगाड़ना आरम्भ किया। वह पहले नसों के जोड़ों को शिथिल करती है, जिससे ज्ञानेन्द्रियों की नसों का अधिकार कम हो जाता है। डॉ.

णाम यह होता है कि रक्त की गति धीमी पड़ जाती है और रक्त ज्यों २ चमड़ी के समीप आता है, त्यों २ शराब पीने वाले के चेहरे पर उत्तेजना और लाली झलकती है। यही क्रिया मन को चेतनाहीन और मग्न कर देती है।

दिल पर अल्कोहल का क्या प्रभाव पड़ता है? डाक्टर पारकेस और डाक्टर वूलोविज़ ने सबसे पहले इसका परीक्षण किया था। उन्होंने पानी और अल्कोहल की अलग २ खुराक पर एक स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट आदमी को रक्खा। अल्कोहल के दिनों में दिल की चाल बहुत बढ़ गई थी। यों, स्वस्थ अवस्था में २४ घंटों में दिल की धड़कन १००,००० होनी चाहिये। दिल की दो कोठरियां होती हैं, जिनमें ६ औंस रक्त प्रत्येक धड़कन पर आता है अर्थात् २४ घंटों में ६००,००० औंस रक्त का प्रवाह रहता है। यह रक्त इतनी तेजी से आता जाता है कि यदि खुली हवा में यह छूटे तो ५ या ६ फीट की दूरी पर जाकर पड़े। दिल को यह परिश्रम १ फुट ऊँचा ११६ टन बोझ उठाने के समान पड़ता है। एक औंस अल्कोहल से ४,३०० अधिक धड़कन होती हैं, दो औंस से ८,६०० और तीन औंस से १२,९०० ।

इस अधिक धड़कन का यह अर्थ हुआ कि दिल को अधिक परिश्रम करना पड़ा। और यह परिश्रम निरर्थक होता है। इससे शक्ति का व्यय बढ़ता है। डाक्टर लोग जानते हैं कि दिल की चाल बढ़ जाने से रक्त के प्रवाह में कमी आ जाती है। शरीर के प्रत्येक अवयव के लिये एक कोष होता है जिसमें रिज़र्व शक्ति जमा रहती है। यह शक्ति तब काम आती है जब मूल शक्ति में कमी होती है। इसी प्रकार दिल के कोष में

भी रिज़र्व शक्ति होती है। अल्कोहल के प्रयोग से यह शक्ति खर्च होने लगती है। निरन्तर शराब पीने वाले व्यक्तियों का यह कोष खाली हो जाता है, कोष खाली होने से रगें नष्ट हो जाती हैं। अल्कोहल इस कोष में कुछ भी शक्ति नहीं भरती क्योंकि उसमें यह गुण नहीं है। इन दोषों के कारण शराबियों के दिल में चर्बी बढ़ जाती है, दिल सिकुड़कर मुर्दा बन जाता है और रक्त की एक बूंद भी न रहने पर हार्ट फेल हो जाता है।

रक्त की सेलों में और भी अति सूक्ष्म सेलें होती हैं जो ऑक्सीज़न को खींचती हैं। अल्कोहल इन सेलों को सिकोड़ देती है जिससे वे ऑक्सीज़न खींचने में कम समर्थ होने लगती हैं। यदि अधिक अल्कोहल प्रयोग किया जाय तो वे बिल्कुल ही ऑक्सीजन ग्रहण न कर सकेंगी। जितनी कम ऑक्सीज़न मिलेगी, उतना ही शरीर निर्बल होता जायगा, रक्त में रद्दी पदार्थ एकत्र होते जायेंगे। इससे रोग उत्पन्न होंगे। डाक्टर फ्रेन्क सेनायर ने मेंढकों पर यह प्रयोग करके देखा, उन्होंने अनेक मेंढकों की टांग, दिल और सिर के बल अल्कोहल में रखा और खुर्दबीन से उनकी क्रियाओं का परीक्षण किया। सबका यही परिणाम निकला।

पेट का रस		
	water	९९४'४
	Papsin	३'२
	Salt	१'५
	Hydrochloric acid	'२
	Potassium chloride	'५
	Calcium chloride	'१
	Phosphats of calcium, magnesium & iron.	'१
		१०००'०

लीवर का रस		
	water	८५९·२
	Bilin	९१·५
	Fat.	९·२
	Cholesterin	२·३
	Mucus and colouring matter	२९·८
	Salts	७·७
		१०००.०

मेदे का रस		
	water	९८०·५
	Pancreatin, Amylopsin Trypsin,	१२·७
	inorganic salts	६·८
		१०००'०

पेट में भोजन पहुँचने पर मांसपेशियों का कार्य शुरू हो जाता है। कोई भोजन देर में रस बनता है, कोई जल्दी। औसतन ३-४ घंटे का समय लगता है। यहां हम इसकी एक तालिका देते हैं कि कौन भोजन कितने समय में पचकर रस बनने लगता है:

	घंटे		घंटे
उबले चावल	१	गोमांस का कबाब	३
Boiled tripe	१	उबला भेड़ का मांस	३
कच्चे सेब	१॥	उबली गाजर	३।
उबली सलमन मछली	१॥	भेड़ का कबाब	३।
उबला साबूदाना	१॥।	रोटी	३॥
उबली कोड मछली	२	उबले आलू	३॥
उबली सेम	२॥	उबली शलजम	३॥
[illegible]	२॥	पनीर	३॥
आलू का शाक	२॥	उबले अंडे (पक्के)	३॥
हंस का कबाब	२॥	भूने हुए अंडे	३॥
उबला Gelatine	२॥	उबली मुर्गी का कबाब	४
उबला भेड़ के बच्चे का मांस	२॥	उबला करमकल्ला	४॥
उबला गो मांस	२॥।	सूअर का कबाब	५।
फली	३	उबली मुर्गी	५॥

शराब पीने से भी पेट का रस बनता है, लेकिन वह रस गुणकारी नहीं होता। असल में इस रस में pepsin बहुत ही कम रहती है क्योंकि रस की pepsin सेलों को पीने से हजम हो जाती है, और यह

pepsin बनने में अल्कोहल बाधा देती है। इसलिये शराब पीकर जो पेट का रस एकदम बढ़ता है, वह पचने की क्रिया नहीं है। शराब धीरे २ पेट की रस ग्रन्थियों को क्रियारहित कर देती है।

जेनेवा यूनीवर्सिटी के विख्यात प्रोफेसर डाक्टर एल० रेविलियोड और डाक्टर पालविनेट ने इस बात की बहुत खोज की है। वे कहते हैं कि शराब पीने वालों का पेट अन्दर की ओर सिकुड़ कर मोज़े की शक़्ल का हो जाता है। उसमें चर्बी बढ़ जाती है। इसी प्रकार के प्रयोग डाक्टर बीयूमोन्ट ने किये थे और एक पुस्तक छपाई थी, जिस पर एक नोट डाक्टर एन्ड्रू कूम्बे ने लिखा था जो सम्राज्ञी विक्टोरिया के चिकित्सक थे और बेलजियन्स के राजा रानी के परामर्शदाता थे। डाक्टर बीयूमेन्ट एक ही लाइन लिखते हैं कि 'शराब पीने वालों को पेट की एक न एक शिकायत बनी रहेगी।'

डाक्टर मुनरो ने एक प्रयोग करके यह स्पष्ट कर दिया है कि पानी भोजन को गलाता है और अल्कोहल इस के विपरीत करती है। यह प्रयोग इस प्रकार था:—

गौ मांस को बारीक कूटकर किमाम करके तीन बोतलों में डाला, इनमें थोड़ा थोड़ा 'पेट का रस' भी एक बछेड़े के पेट में से निकालकर मिलाया गया। अब पहली बोतल में पानी, दूसरी में अल्कोहल और तीसरी में पीली शराब (Pale ale) डालकर हिलाकर रख दिया गया। सब का टेम्प्रेचर १००° रख गया। तीनों में पेट की भांति निम्न-लिखित क्रिया हुई:—

मांस को किसमें मिलाया	चौथे घंटे बाद प्रभाव	आठवें घंटे बाद प्रभाव	दसवें घंटे बाद प्रभाव
पहली बोतल पेट का रस और पानी	पचन क्रिया आरम्भ	बारीक रेशे बन गये	घुलकर रस बन गया
दूसरी बोतल पेट का रस और अल्कोहल	रंग धुंधला हो गया, मांस में क्रिया नहीं हुई	मांस में अब भी क्रिया नहीं हुई	मांस ऐंठ कर सिकुड़ गया, पेपसिन तल में बैठ गई
तीसरी बोतल पेट का रस और पीली शराब	मांस पर रुंध जमकर बादल से बनगये	जरा सा मांस कम घुला	पेपसिन तल में बैठ गई। पचन क्रिया नहीं हुई

यह क्रिया बिल्कुल मनुष्य शरीर क्रिया जैसी थी क्योंकि डाक्टर बुनगे ने शरीर जैसे ही बर्तन बनाये थे। इससे यह स्पष्ट है कि पीली शराब में अल्कोहल का कम भाग भी होते हुए पचन क्रिया नहीं हुई। पेट के रस में पेपसिन एक अंश है इसे भी अल्कोहल ने निकालकर अलग कर दिया।

डा० विलियम बोमेंट ने पेट पर अल्कोहल के प्रत्येक प्रयोग करके देखे थे, उनका कहना है कि ५ प्रतिशत 'बीयर' और १० प्रतिशत

'वरटन एल' शराब निश्चय ही पचन क्रिया को रोकने में समर्थ होती है। येल यूनीवर्सिटी के डाक्टर चिटेन्डन और मेन्डेल कहते हैं कि २ प्रतिशत अल्कोहल पचन क्रिया को सदैव नष्ट कर देगी। डाक्टर ई० लेशेरडे अमेरिका के एक मासिक पत्र 'जरनल ऑफ फारमेसी' में अपने प्रयोग का परीक्षण इस प्रकार लिखते हैं, कि मैंने एक बोतल में मांस को चार घंटे तक ४०°C. के टेम्प्रेचर पर २ प्रतिशत अल्कोहल डालकर रखा। पानी ने जब जब पचन क्रिया आरम्भ की, अल्कोहल ने उसे तुरन्त रोक दिया। रॉयल मेडीकल सोसायटी एडिनबर्ग के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट डाक्टर जेम्सम्यूरहोवे इस प्रकार कहते हैं, 'कुछ व्यक्ति भोजन के बाद शराब पीते हैं और समझते हैं कि यह पाचन करेगी, परन्तु यह सब धोखा है क्योंकि जिस प्रभाव को वे पचन क्रिया अनुभव करते हैं वह पेट की नसों पर अल्कोहल की गरमी और नशे की सुरसुराहट है। अल्कोहल निश्चय ही बदहज्मी पैदा करती है। मदिरा जब पहलेपहल पीजाती है तो आमाशय उसे बाहर फेंक देता है और उल्टी हो जाती है।

अल्कोहल पेट में पहुंचने के बाद तुरन्त ही रक्त में मिलनी शुरू हो जाती है, और चूंकि रक्त बहुत तेजी से नसों का दौरा करता है, इसलिये अल्कोहल भी तेज़ी से नसों पर प्रभाव डालने लगती है। लीवर (ज़िगर) पर इसका प्रभाव बहुत ही बुरा होता है क्योंकि लीवर की सेलें अत्यन्त कोमल होती हैं, वे इसकी गन्धमात्र से ही मुर्झाने लगती हैं। सेलों के निकम्मे होने से लीवर अपना काम करने में असमर्थ होने लगता है। तेज़ या अधिक शराब पीने वालों का लीवर

सिकुड़कर ऐंठ जाता है। शरीर में लीवर सबसे बड़ा अवयव है। स्वस्थ लीवर का वजन ५० से ६० औंस तक होता है। यह चिकना और लाल होता है। शराबियों का लीवर, खुरदरा, काला और मुड़ा हुआ होता है। शराबियों को सदैव लीवर की बीमारी हो जाती है। वे व्यक्ति जिन्हें शराब बनानी या बेचनी पड़ती है और जिन्हें शराब पीने के सरल साधन प्राप्त हैं, वे शीघ्र मर जाते हैं। डाक्टर सर बेनजामिन वार्ड रिचर्डसन रक्त में अल्कोहल के प्रभाव का इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

'अल्कोहल का प्रभाव रक्त पर भयानक और नाजुक है, क्योंकि जब सूक्ष्म सेलें मर जाती हैं तो स्वाभाविक क्रिया बन्द होजाती है और स्वाभाविक शरीर का पोषण रुक जाता है। शरीर में रक्त की ये सेलें लाखों होती हैं। यदि इन सेलों को ऊपर नीचे रखकर एक पाई के बराबर मोटाई में चुना जाय तो एक इंच ऊंचाई में १२००० सेलें रखी जा सकती हैं। यदि इन सेलों को बिछा दिया जाय तो कई स्क्वायर गज़ जगह घिरेगी। ये सेलें रक्त के लिये ओक्सीजन ग्रहण करती रहती हैं। इसलिये इनमें से एक भी शरीर की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी है।

कुछ लोगों का ख्याल है कि 'पोर्ट वाइन' का माणिक जैसा लाल रंग होता है, इसलिये यह अवश्य रक्त को बढ़ाती होगी। परन्तु जांच के देखा गया कि यह ख्याल भी मिथ्या है। एक [illegible] 'animal charcoal' में [illegible] 'पोर्ट वाइन' [illegible] और उसे [illegible] होने के लिये [illegible] पानी की [illegible] बन जायेगी। [illegible]

में मिलगया परन्तु किसी भी पदार्थ के गुणों में तब्दीली नहीं हुई। तब फिर वह २-४ बूंद रंग भला क्या रक्त लाल करेगा?

किस शराब में कितना मादक द्रव्य होता है:—

बीयर	५ प्रतिशत	वरमथ	१५ प्रतिशत
एल	७ ,,	क्यूडीम्यूथी	३२ ,,
पार्लर	७ ,,	काकटेल्स	३५ ,,
हार्ड सैड	६ ,,	बिटर्स	४६ ,,
कूट वाइन	८ ,,	कीमनल	४२ ,,
कैरेट	८ ,,	रम	४५ ,,
मस्केरल	८ ,,	ब्रान्डी	५० ,,
शैपंन	१० ,,	जिन	५० ,,
सैनटर्न	१२ ,,	व्हिस्की	५० ,,
शेरी	१४ ,,	वोडाका	५० ,,
पोर्ट	१४ ,,	एब्सिथ	६० ,,

प्रकरण १४

शरीर की गरमी पर अल्कोहल का प्रभाव

हमारे भोजन का परिणाम मांस, रक्त और मज्जा का बनना और शरीर की गरमी को सही टेम्प्रेचर में रखना भी है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हमारा शरीर गरम है। संसार के प्रत्येक भाग, ध्रुवों और भूमध्य रेखा के निवासियों की शरीर गरमी का एकसा ही परिमाण है। हमारे शरीर में गरमी होने का प्रयोग water Hammer यन्त्र से करके देखा जा सकता है। इस यन्त्र में पानी की थोड़ी सी बूंदें होती हैं, हाथ में मुट्ठी बाँधकर पकड़ने से पानी की बूंदें भाप बनकर ऊपर को उड़ती प्रतीत होती हैं। आप ही मुंह में जीभ के नीचे थर्मामीटर लगाकर देखिये तो टेम्प्रेचर में कोई घटी बढ़ी नहीं होगी। इससे यह ज्ञात होता है कि हमारे शरीर में गरमी बनती और निकलती रहती है।

स्टार्च वाले भोजन जैसे चावल, आलू, साबूदाना, अरारोट, रोटी, और शक्करसार जैसे, गन्ने से चीनी, अंगूरों से ग्लूकोज़ (Glucose,) दूध से लैक्टोज़ (Lactose,) मधु (शहद) से लिवूलोज़ (Levulose,) आदि लेने से शरीर की गरमी ठीक बनी रहती है।

अल्कोहल शरीर की प्राकृतिक गरमी को बाहर फेंकने का काम किया करती है। एक औंस स्टार्च से एक औंस शराब से अधिक गरमी है, और शराब द्वारा हुआ अधिक नहीं पड़ती है।

नीचे लिखी वस्तुओं में शक्कर इस प्रकार होती हैः—

गन्ने की चीनी	में	९६·० प्रतिशत
गुड़	में	७९·०
अंजीर	में	६२·५
चेरी	में	१८·१
खुबानी	में	११·६
आड़ू	में	१६·५
नासपाती	में	६·४

यह गरमी भोजन के कारबन में से आती है। कारबन जलता रहता है यही गरमी है। निम्न फॉरमूले से आप देखेंगे कि शक्कर से अधिक कार्बन अल्कोहल में हैः—

Ethyl Alcohal C_2H_5HO.		Sugar C_{12} H_{22} O_{11}	
Carbon	52·174	Carbon	42·106
Hydrogen	13·043	Hydrogen	6·432
Oxygen	34·783	Oxygen	51·462

इस हिसाब से अल्कोहल शराब की गरमी के लिये बहुत ही लाभकारी होनी चाहिये, परन्तु ऐसा नहीं है। शराब पीने वाला गरमी को प्रतीत अवश्य करता है, परन्तु यह गरमी धोका है। डाक्टर बिन्ज़ ने इसके अनेक प्रयोग किये हैं। वे कहते हैं कि अल्कोहल पीने से आराम सा लगता है, यह पेट और चमड़ी की रक्तनालियों को फैलाती है। इस घर्षण में गरमी चारों ओर बिखरती है, बिखरकर वह भागती है। इस भागने को गरमी समझ लिया जाता है। डाक्टर बिन्ज़ ने १२६

प्रयोगों को थरमामीटर द्वारा परीक्षण किया है। बहुत थोड़ी मात्रा ने तो टेम्प्रेचर कम नहीं किया। बीच दर्जे की मात्रा ने ०·३ से ०·६ तक कम किया और अधिक मात्रा ने कई डिग्री कम कर दिया। जो साधारण मात्रा में शराब पीते हैं उनका टेम्प्रेचर एक डिग्री कम रहेगा। प्रोफेसर रेमसन कहते हैं कि ·०५ से २ डिग्री तक टेम्प्रेचर कम रहता है, यद्यपि गरमी सी लगी रहती है। डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचर्डसन अपने प्रयोग को इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

'एक गरम खून के पशु को शराब पिलाकर बेहोशी की हालत में एक कमरे में रक्खा गया, इस कमरे का टेम्प्रेचर १०° कम कर दिया गया था। उसी के साथ इसी कमरे में एक अन्य पशु बे शराब पिलाये भी रक्खा गया। दोनों सोये रहे। पहला सोकर उठा ही नहीं, मर गया। दूसरा स्वस्थ रहा।' समुद्र में सदैव रहने वाले सीलियॉर तथा ह्वेल मछली आदि जल जंतुओं के सिवायो जिन्हें सदैव पानी और ठंड में रहना पड़ता है, कभी शराब नहीं पीते। एक बार रूस में पीटर दी ग्रेट के शासन काल में एक बड़ा भारी उत्सव हुआ, और उसमें प्रत्येक व्यक्ति को शराब पीने की खुली छुट्टी दे दी गई। रात्रि में सरदी थी। प्रातःकाल देखा गया कि हजारों व्यक्ति शरीर की गरमी कम हो जाने की वजह से सुन्न हो गये और मर गये!!

प्रकरण १५

मस्तिष्क पर अल्कोहल का प्रभाव

समस्त शरीर का राजा और नियन्त्रणकर्त्ता मस्तिष्क है। प्रकृति ने इसे सबसे ऊपर बहुत सावधानी से ढककर रखा है। हम कुछ भी देखें, अनुभाव करें, विचारें जानें, ये सब क्रियाएँ मस्तिष्क करता है। यह मतिस्क इतना समझदार और उत्तरदायित्वपूर्ण भार ग्रहण किये हुये है कि हम जब सो जाते हैं तब भी यह शरीर को ज्ञान देता रहता है। यदि सिर में चोट लग जाती है और हम बेहोश पड़े होते हैं तब भी मस्तिष्क शरीर के अन्य अंगो की गति का संचालन करता रहता है। यदि मस्तिष्क में सांघातिक चोट लग जाय और वह बिल्कुल ही निर्जीव हो जाय तो शरीर की सभी क्रियाएँ बन्द हो जायेगी और प्राणी मर जायगा।

इसलिये मस्तिष्क बहुत महत्वपूर्ण अंग है। लोग समझते हैं कि अल्कोहल मस्तिष्क को सहायता प्रदान करता है, किन्तु यह ग़लत है। प्रोफ़ेसर क्रेपलिन और डाक्टर लौडर ब्रन्टन अपने प्रयोगों के परिणाम में कहते हैं, 'कि अल्कोहल का शारीरिक प्रभाव अद्भुत है. क्योंकि यह ज्यों २ प्राणी की गति को हीन बनाता है त्यों-त्यों वह इन्हें सतेज और अधिक कर्मशील अनुभव करता है।' इसके और भी प्रयोग किये गये हैं। डाक्टर जे० जे० रिज ने स्पर्श-ज्ञान, तौल-ज्ञान,

दृष्टि-ज्ञान और निर्णय-ज्ञान पर अलग-अलग परीक्षण किये और सभी को दूषित पाया। ये प्रयोग बहुत विस्तृत हैं और इनकी सम्पूर्ण विधि Medical Temperance Journal Vols. XIII and XXI में वर्णित है। ३॥ माशे अल्कोहल पीने के बाद स्पर्श-ज्ञान में ५% कमी हुई। तोल-ज्ञान में २८% कमी हुई। दृष्टि-ज्ञान में ९% कमी हुई। और निर्णय ज्ञान में १४% गलती हुई। प्रयोग काल में निम्न इन्द्रियों का इस प्रकार ह्रास हुआ।

१. हाथों की मज़बूती में कमी।

२. दृष्टि की तेज़ी में कमी।

३. निर्णय में यथार्थ ज्ञान की कमी।

४. विचारों के दौड़ान में कमी।

५. नसों की तेज़ी में कमी।

६. स्वयं नियन्त्रण शक्ति में कमी।

अधिक मात्रा देने से पूरा नशा हो जाता। बेहोश होने से पहले मामूली इधर उधर झूमना, बहकी बातें करना, असंयम से फलना फूलना और जल्दी ईर्ष्या दिखाने लगना रहता है। पूरे प्रभाव से अधिकतर मूर्छा और मृत्यु होकर रह जाता है। अमेरिका में एक शराब नियन्त्रण बोर्ड (the Board of Control) है, जिसके सहायक से [illegible] की रिपोर्टों से [illegible] प्राप्त करते हैं। सन् १९१५-१९ [illegible] में [illegible] अल्कोहल [illegible] से पीड़ित है।

[illegible]

तंतु और रीढ़ की संचालन शक्ति स्थिर है। इसलिये जिस व्यक्ति का मस्तिष्क ठीक क्रिया में नहीं रहता, उसे हम पागल कहते हैं। शराब कंठ से उतरते ही ज्ञानतंतुओं द्वारा मस्तिष्क पर प्रभाव करती है, दस मिनट बाद ही वह उसमें हलचल उत्पन्न कर देती है, मस्तिष्क में विचारों का तांता लग जाता और पीने वाला व्यक्ति अपने को बहुत ही व्यस्त समझता है। धीरे-धीरे स्नायुमंडल में विषैला प्रभाव उत्पन्न होकर संज्ञा नष्ट होने लगती है। जिसका परिणाम यह होता है, कि (१) इच्छाशक्ति प्रभावहीन हो जाती है। (२) वाणी काबू से बाहर हो जाती है। (३) चालीस प्रतिशत व्यक्ति आत्मघात करते हैं। (४) विवेक और ज्ञान नहीं रहता, (५) कार्य शक्ति का ह्रास हो जाता है। (६) पाप वासना प्रबल हो जाती है।

प्रकरण १७

अल्कोहलऔर जीवन

इस बात को सभी स्वीकार करेंगे कि अल्कोहल और शराब जीवन का दुखमय अन्त करती हैं। वह मनुष्य को मतवाला, पागल, जीवन रोगी बनाकर मृत्युके द्वार तक ही नहीं ले जाती बल्कि अनेक घरों में कंगाली दरिद्रता और सर्वनाश की पूर्णाहुति भी करती है।

शराब जीवन के लिये तनिक भी आवश्यक नहीं। कुछ लोग इसे आनन्द और भोगविलास के लिये पीते हैं, कुछ संग सोहबत के प्रभाव में पीने लगते हैं, परन्तु सभी इसके भयानक चरित्र को जानते हैं।

संसार में मद्य का ज़बरदस्त चक्र है। स्कॉट लोग विस्की पीते हैं, अंगरेज और जरमन बीयर पीते हैं। लेटिन लोग वाइन पीते हैं। पूर्वी अफ्रिका निवासी जिन पीते हैं। चीनी अफीम पीते हैं। आधुनिक अमेरिकन कोकीन पसन्द करते हैं। कुछ ख़ास व्यक्ति ख़ास रसों को सड़ाकर पीते हैं।

यह सब इसकी मादकता की महिमा है। इस मादक विष को हमें विद्वानों की इन सम्मतियों में ढूंढ़ना चाहियेः—

'अल्कोहल जो भ्रमात्मक आनन्द, क्रिया, और शक्ति प्रदान करनेवाला पदार्थ है, कब्र में दफ़नाये जाने योग्य है। किसी कवि, चिकित्सक, धर्म पुरोहित, और चित्रकार ने इससे प्रबल शैतान को नहीं देखा।

—डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचार्डसन, M. D., F. R. S.

'अलकोहल डाक्टरी के लिये भी योग्य नहीं है। भोजन भी नहीं है।'

—सर विक्टर हौर्सले F. R. S.

'मैं कह सकता हूं कि देश को नष्ट करने में अलकोहल प्रबल योद्धा है।'

—सर थामस बार्ट, M. D.

'अलकोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है।

—डा० मैक्डोवेल कासग्रेव, M. D., F .R. C. P.

'शरीर को अल्कोहल से कभी लाभ नहीं हो सकता।'

—सर एन्ड्रू क्लार्क बार्ट, M. D.

'शराबी और शराब बेचने वाले सब दुराचारी होते हैं सब समाज और राजनीति दोनों ही के संगठन को नष्ट करते हैं।'

—प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट।

'शराब शरीर की बची हुई शक्तियों को भी उत्तेजित करके काम में लगा देती है, फिर उनके खर्च हो जाने पर शरीर काम के लायक नहीं रहता।'

अध्याय तीसरा

भारत सरकार को शराब बेचने से लाभ

प्रकरण १

आय के ज़रिये

पिछले अध्यायों में पाठक शराब की बुराइयों को भली प्रकार समझ चुके हैं। भारत सरकार भी इन दोषों को समझती है। भारत सरकार इन दोषों को तब भी समझती थी जबकि अबसे सवासौ वर्ष पहिले लन्दन में प्रत्येक मुहल्ले के खुले चबूतरों पर शराब बेची जाती थी। शराबख़ानों के मालिक खुल्लमखुल्ला अपनी दुकान की खिड़कियों में नीचे लिखे ढंग का विज्ञापन लटका दिया करते थेः—

'साधारण शराब, मूल्य एक पैंस
बेहोश करदेने वाली शराब, मूल्य दो पैंस
साफ़ सुथरी चटाई, मुफ़्त (अर्थात् बेहोश होनेपर लेटने के लिये चटाई के पैसे नहीं लियेजाते)'

परन्तु इन दोषों को सरकार ने तुरन्त ही सुधार डाला क्योंकि वह अपना देश था। किन्तु भारत तो सरकार का अपना घर नहीं है, वे इस देशपर व्यवसायिक राज्य करते हैं। सरकार को शराब से बड़ी भारी वार्षिक आय है, वे इसे बन्द करके अपने ख़ज़ाने को कम क्यों

करें । आबकारी विभाग में मादक द्रव्यों से आय के ज़रिये इस प्रकार हैः-

१. मादक द्रव्यों का बनाना और बेचना, जैसे देशी शराब, पचवई, आदि । देशी शराब महुआ पेड़ के सूखे फूलों से बनती है ।

२. विदेशी शराबों की बिक्री जो बाहर से आती है, जैसे रम, ब्रान्डी, बीयर ।

३. खजूर, नारियल और ताड़ के पेड़ों से शराब निकालना और ताड़ी बेचना ।

४. स्थानीय जनता के लिये अफ़ीम बनाना और बेचना ।

५. भांग गांजा चरस आदि बनाना और बेचना ।

६. अन्य मादक वस्तुओं का जैसे कोकीन, मार्फ़िया आदि बनाना और बेचना ।

उपरोक्त विभागों से प्रकट होता है कि जो वस्तुएँ [illegible] अल्कोहल बनती हैं, अथवा जिनसे नशा होता है वे सब आबकारी विभाग की चीज़ें हैं ।

१. आबकारी आय का अधिक भाग तो देशी शराबों से ही प्राप्त हो जाता है, जो इस प्रकार है:—

(१) भट्ठी से बाहर शराब [illegible] भट्ठी की चुंगी ।

(२) बेचने का अधिकार देने की फीस ।

२. विदेशी शराब पर चुंगी इस प्रकार है :

(१) भारत में बाहर से विदेशी शराबों पर चुंगी [illegible]

[illegible]

में जमा होती है।

(२) भारत में बनी तथा विदेशों से आई विदेशी शराब बेचने की लाइसेन्स फ़ीस।

पहली (१) में ये चीज़ें सम्मिलित हैं, माल्टेड शराब, वाइन की स्प्रिट, रेक्टीफ़ाइड स्प्रिट, अल्कोहल, ब्रान्डी, विस्की, रम और डाक्टरी तथा सुगन्धित स्प्रिटें।

३ पेड़ों का टैक्स:

(१) पेड़ों पर टैक्स। इनसे शराब चुआना, बनाना और बेचना।

(२) लाइसेन्स फ़ीस। दुकानों पर बेचने की आज्ञा देने का लाइसेन्स।

(३) सरकारी जमीन पर पेड़ों को बोने की फ़ीस।

भारत में सरकार की निगरानी में जो देशी शराब की भट्टियां हैं, उनमें एक वर्ष में लगभग पचास लाख गैलन बीयर और लगभग एक करोड़ गैलन मामूली शराब तैय्यार होती रहती है। विलायती शराब भारत में सन् १९१२ से १७ तक लगभग सात करोड़ रुपयों की विदेशों से मंगाई गई थी।

देशी शराब की खपत (Proof gallons में)

प्रान्त	१९०१—०२	१९११—१२	१९१८—१९
बम्बई और सिन्ध	१७१७७७५	२९३७०३४	२६७०१५४
मद्रास	८७५७५५	१६२६१७८	१६७२४९५
पंजाब	२४८५२४	४५९७९६	४५६८३७
सी. पी.	२६६१८०	१०३६८८०	१२२११३७
यू. पी.	१२१४७९८	१५३८५०४	१४६८६२०
बंगाल, बिहार, उड़ीसा	६०८२९८	१८७६३१९	२०६१९०९
आसाम	......	२३८९४७	२२५५७१
बरमा	......	२६७८६	१२४४०९

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि शराबख़ोरी कितनी बढ़ गई है। सरकार ने इस बढ़ती को रोकने के लिये टैक्स बढ़ा दिया। परन्तु यह केवल बहाना मात्र था, टैक्स तो अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए था, न कि शराबख़ोरी बन्द करने के लिये। शराब महंगी होने पर शराब घटी नहीं, बल्कि चोरी डकैती की घटनायें बढ़ गईं। वे चोरी करने और गाँठ कतरने लगे। सरकारी टैक्स के आंकड़े भी देखिये:—

सन् १९०१–०२ से १९११–१२ तक का टैक्स

प्रान्त	शराबखोरी की बढ़ती	टैक्स की बढ़ती
बम्बई	५१ %	१८ %
सिन्ध	१५ %	२२ %
मद्रास	८६ %	११ %
पंजाब	८१ %	११ %
यू.पी.	२० %	१४ %
मध्य प्रान्त	१०० %	५४ %

बंगाल, बिहार और उड़ीसा के आंकड़े १९०५—१९०६ में प्रान्त-भेद के कारण नहीं दिये जा सके।

समस्त भारत में आबकारी दुकानों की संख्या

वर्ष	शराब	अफ़ीम भांग गांजा चरस	कुल संख्या
	१	२	३
१८९९-००	८२११७	१९७६६	१०१८८३
१९००-०१	८३२०२	१९९२८	१०३१३०
१९०१-०२	८४९२५	२०१५५	१०५०८०
१९०२-०३	८६७५७	२०९८४	१०७७४१
१९०३-०४	९१३२३	२२०५१	११३३७४
१९०४-०५	९११३८	२१९७८	११३११६
१९०५-०६	९१४४७	२१८६५	११३३१२
१९०६-०७	८९२१४	२१०७२	११०२८६
१९०७-०८	८६७५८	२०२४४	१०७००२
१९०८-०९	७३३५०	२०००५	९३३५५
१९०९-१०	७६७६२	१९७५४	९६५१६
१९१०-११	७१०५२	२००१४	९१०६६
१९११-१२	६२११३	१९१०८	८१२२१
१९१२-१३	५९९८६	१८१६६	७८१५२
१९१३-१४	५८५२७	१७९५७	७५४८४
१९१४-१५	५६७२३	१७६९९	७४४२२
१९१५ १६	५५०४६	१७३१६	७२३४२
१९१६-१७	५१९१७	१७१७७७	६९०९४
१९१७-१८	५४८९६	१७१४७	७२०४३
१९१८-१९	५२६८३	१७१५२	६९८३५

आबकारी आय

वर्ष	कुल कर	चुंगी का आय	कुल आय १+२	व्यय	बचत ३-४
	१	२	३	४	५
	रू०	रू०	रू०	रू०	रू०
1885—86	4,15,21, 360	....	4,5719460	1243720	44475740
1886—87	43751740	4881970	48633710	1167300	47466410
1887—88	45346550	5277920	50624470	1270780	49353690
1888—89	47053460	5482840	52536300	1379410	51156890
1889—90	48918940	5592650	54511590	1567390	52944200
1890—91	49477800	6009000	55486800	1749810	53736990
1891—92	51172640	5895840	57068480	1900970	55167510
1892—93	52424430	5102530	58526960	1930130	56596830
1893—94	53885730	5956510	59842240	1933750	57908490
1894—95	55276760	6116090	61392850	1928090	59464760
1895—96	57224170	6625860	63850030	2079570	61770460
1896—97	56142000	6591650	62733650	2128550	60605100

1910-11	105454715	12053394	117508109	6089904	111418205
1911-12	114146285	12458386	126604671	6288803	120315868
1912-13	124168787	12597466	136766253	6428572	130337681
1913-14	133414505	13368464	146782969	6562932	140220037
1914-15	132853214	12199000	145052214	6895269	138156945
1915-16	129483132	11790000	141273132	7061095	134212037
1916-17	138238495	12513946	150752441	7179474	143572967
1917-18	154425590	10996886	165422476	7300000	158122476
1918-19	173552770	11065351	184618121	8200000	176418121

आबकारी आय प्रतिवर्ष कितनी बढ़ी ?

समय	प्रतिवर्ष में औसतन बढ़ती	१० वर्ष में बढ़ती का प्रतिशत
१८६०-१८७०	६.५	३३%
१८७०-१८८०	७.६	३२%
१८८०-१८९०	१८.१	५८%
१८९०-१९००	९.६	१२%
१९००-१९१०	४६.४	७९%
१९१०-१९१८	८५.०	६५%

केवल शराब के आँकड़े इस प्रकार हैः—

बीयर तथा अन्य शराबों से आय

वर्ष	अन्य शराबों से	बीयर से
१९००—०१	४२३४५१५६ रु०	४६२२६३ रुपये
१९०५—०६	६१९८२९६६ ,,	५९४५२९ ,,
१९१०—११	७७९६३५४३ ,,	८३८६६७ ,,
१९१५—१६	१,२९५८७४४ ,,	१०२९५६१ ,,
१९१६—१७	९९६८५४८१ ,,	१८८०१७१ ,,
१९१७—१८	११०९१०२९९ ,,	२००७४७४ ,,
१९१८—१९	१२८०५२७४० ,,	१६१५६९३ ,,

अलग २ प्रान्तों के आँकड़े इस प्रकार हैं:—

यू० पी० में	सन्	१८९९-००	में	६३६	लाख रु०
,,	,,	१९०४-०५	,,	१०२	लाख रु०
,,	,,	१९१८-१९	,,	१५९	लाख रु०
मद्रास में	सन्	१८९९-००	में	१३४	लाख रु०
		१९०४-०५	,,	१८७	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	४६४.४	लाख रु०
बम्बई में	सन्	१८९९-००	में	१०६	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	३७८	लाख रु०
पंजाब में	सन्	१८९९-००	में	२६	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	९८	लाख रु०
सी. पी. और बरार में	सन्	१९०३-०४	में	४५.५	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	१२३	लाख रु०

दूसरा खण्ड

होता है। २. पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है। ३. श्वासरोग। ४. मँद बुद्धि। ५. चिड़चिड़ापन ।

राजपूताने में अब भी व्याह शादी, दावतों और आदर सत्कार में ठाकुर लोग अफ़ीम घोल कर पिलाते हैं। गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश में पहले इतनी अफ़ीम खाई जाती थी कि अफीमियों की विष्ठा से पशुओं की रक्षा के लिये जंगल में आदमी नियत किये गये थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्वीय देशों में अफ़ीम का प्रचार पिछली सदियों में ही बढ़ा है और इसका कारण पश्चिमी व्यापारी हैं जिन्होंने पूर्व में मादक द्रव्यों का व्यवसाय करके उसे बहुत ही लाभदायक व्यापार दिखा दिया। इस ध्येय को लेकर मादक द्रव्यों की समस्या और भी विस्तृत होती गई है और प्रत्येक नगर में दुकानदारों ने मनुष्य की नैतिक दुर्बलता की ओट में इसे पूर्ण रूप से स्थायी बना दिया है।

मिलों में तथा अन्यत्र दिन भर काम करने वाली मज़दूर मातायें अपने बच्चों को चुपचाप पड़े रहने के लिए अफ़ीम पिला देती हैं। जिन देशों में अफ़ीम नहीं मिल सकती वहां दूसरी कोई नशीली वस्तु दे देती हैं। शहरों में हीं नहीं, गांवों में भी खेतों पर काम करने वाली माता बच्चों को अफ़ीम देती हैं। बूढ़ी और समझदार स्त्रियें इस अभ्यास को अपनी बहुओं को भी सिखा जाती हैं। एक बार एक अँग्रेज डाक्टर ने नागपुर के समीप एक गांव का निरीक्षण किया, वहाँ एक हिन्दू बूढ़ी दादी अपने पौत्र को अफ़ीम दे रही थी। डाक्टर ने इस पर आपत्ति की, परन्तु बुढ़िया ने अधिकार पूर्वक उत्तर दिया,

'इससे यह रोयेगा नहीं, चुपचाप पड़ा रहेगा, साथ ही इसके इधर पीछे दस्तों में भी लाभ होगा।''

एक दूसरा बच्चा जिसका पेट बढ़ा हुआ था और शरीर पीला था, बाहर से खेलता हुआ अन्दर आया, डाक्टर ने उसे देखकर पूछा, 'क्या इसे भी शिशुवस्था में अफ़ीम दी गई थी?' बूढ़ी ने बड़ी अधिकारपूर्वक उत्तर दिया, 'हां, पर इसकी भूख न जाने कहां चली गई है, यह कभी भूखा ही नहीं होता। आप डाक्टर हैं, इसकी पाचन शक्ति को ठीक करिये न!'

डाक्टर की ताड़ना देने पर भी वह अफ़ीम को बुरा नहीं मान सकी। उस गांव के दूसरे भाग में ईसाई लोग भी रहते थे, डाक्टर ने वहां के बच्चों को इस पापविष से मुक्त पाया। उनकी माताओं ने बताया कि अफ़ीम देने का हम विचार भी नहीं लातीं, हमारे बच्चे बिल्कुल स्वस्थ हैं ये समय पर सोते और समय पर जागते हैं। हमने उनका दैनिक क्रम इस ढंग पर डाल दिया है कि ये अपने खिलौनों से घंटों खेलते रहते हैं, उन्हें रोना और चिल्लाना नहीं पड़ता। यद्यपि इन लोगों को भी खेतों में अधिक समय देना पड़ता था। इन उदाहरणों से गरीबी और अज्ञानता के मूल कारण प्रकट हैं।

एक धारणा प्रसिद्ध है कि अफ़ीम बच्चों को शक्ति प्रदान करती है, खांसी को भी नष्ट करती है और दस्तों की रुकावट होती है। यह बात भले ही हो तब भी बच्चे के विकास की ओर कुप्रभाव डालती है। अफ़ीम की लत पाचनशक्ति नष्ट कर, उसके दिमाग और स्नायु मंडल पर असर डालती है। यहां हम सभी डाक्टरों का मत दूसरा और इसका सम्बन्ध की पूर्ति

हुई कि अफ़ीम का आनन्द और उसमें डूबकर मधुर स्वप्न दीखने का असत्य प्रलोभन नये ग्राहकों को फांस लेता है। फिर वे उसमें हमेशा के लिए तैरते रहते हैं। यूनानी और वैद्यक में अफ़ीम का प्रयोग बिल्कुल सही अवस्थाओं में होता है, लेकिन अताई चिकित्सक इसका प्रयोग निर्भय होकर प्रत्येक अवस्था में करते रहते हैं। ठंड, सर्दी और मलेरिया के आक्रमण से बचने के लिए इसका प्रयोग करने में अब डाक्टरों का विश्वास नहीं रहा। ग़रीब आदमी अपनी भूख मारने के लिए और सर्दी के दिनों में बच्चे को गरम रखने के लिये अब भी अफ़ीम व्यवहार में लाते हैं। लेकिन अफ़ीम की सबसे अधिक खपत इन उपचारों में नहीं होती बल्कि वहाँ होती है जहां अफ़ीमचियों की सोसायटी और पीनक में घूमने की लालसा अधिक रहती है। डाक्टर कर्नल आर० एन० चोपड़ा जिन्हें भारत सरकार ने अफ़ीम के शिकारों की दुर्दशा जांचने के लिये नियुक्त किया था, लिखते हैं कि 'अफ़ीमचियों' की सोहबत ने अफ़ीम का प्रचार बढ़ाया है। आसाम में अफ़ीम की लत बुरी तरह लोगों में लगी हुई है। यद्यपि इस प्रान्त का जलवायु मलेरिया उत्पादक है। ब्रह्मपुत्र के प्रान्तों में भी अफीम का अधिक प्रचार है, जबकि वहां का जलवायु मलेरिया उत्पादक नहीं है। उड़ीसा में अफ़ीम की बेहद ख़पत होती है, वहां पहाड़ी जिलों में तो प्रचार है पर नीचे के ज़िलों में बिल्कुल भी नहीं है। कर्नल चोपड़ा इसका कारण अफ़ीमचियों की सोहबत ही बताते हैं। पंजाब के विषय में भी उनकी यही धारणा है।

कहते हैं कि मुसलमानों में अफ़ीम का अधिक सेवन किया जाता है क्योंकि क़ुरान में शराब पीना वर्जित है। लेकिन पूर्वी बंगाल में जहां

होती हैं। अफ़ीम की विक्री के लिये रजिस्टर्ड लाइसेन्स दिये जाते हैं और महीने में वेचने की तौल भी सीमित है फिर भी इसका चोरी से मनों अफ़ीम विकती है। आसाम में एक भिखारी युवक जो अफ़ीम का जर्जरित शिकार था और जो अपने पैरों खड़ा भी नहीं हो सकता था, कमर में एक मटमैला थैला लिये फिरते देखा गया, इसके थैले में वही थी अफ़ीम थी जो सरकारी होती है और इसे वह वेच रहा था। कलकत्ते में अफ़ीम की सबसे बड़ी दुकान हावड़ा पुल के समीप है, उस दुकान पर सबसे अधिक विक्री शाम को होती है जबकि हज़ारों आदमी अपनी नौकरी पूरी करके जल्दी २ क़दम बढ़ाये स्टेशन की ओर ट्रेन पकड़ने जाते हैं और झट से पैसे फेंक कर अफ़ीम की पुड़िया जेब में डालते हैं।

आजकल ब्रिटिश भारत में अफ़ीम बनारस ऐजेन्सी में सरकार की कड़ी निगरानी मे बोई जाती और तैयार होती है।

फिर भी इसके विषम परिणाम को सरकार ने अनुभव किया और वह प्रति वर्ष इसकी काश्त के लाइसेन्स देने में कमी करती गई। सन् १९२०-२१ में काश्त के लाइसेन्सों की संख्या ४४११५१ थी और वह घटते घटते सन् १९२५-२६ में २८१६९४ ही रह गई। पहले १८५६८९ बीघा ज़मीन में काश्त होती थी, पीछे वह ११३६९१ बीघा ही रह गई। इस कमी का कारण कुछ तो सरकार की नीति में परिवर्त्तन और कुछ पहले स्टाक का बचा पड़े रहना था। सन् १९२०-२१ में १४३४० मन अफ़ीम पैदा हुई, सन् १९२४-२५ में २८२५४ मन और सन् १९२५-२६ में केवल १३०३० मन ही हुई।

लिये भेजी जाती है। दूसरी, भारत के लिये ही डाक्टरी औषध में व्यवहार करने के लिये पहली से थोड़ी भिन्न बनती है। तीसरी, आब-कारी विभाग के लिये बनती है जो भारत में सर्वसाधारण के खाने में आती है। और चौथी, उन देशों के लिये बनती है जहां इसका सेवन खाने में नहीं, पीने में करते हैं। ग़ाज़ीपुर का रासायनिक विभाग अफ़ीम का सत (मरफ़िया) भी निकालता है। ६ फरवरी १९२९ ई० को भारत के अर्थ मंत्री सर जॉर्ज शुस्टर ने देहली की लेजिस्लेटिव असेम्बली में रेवेन्ड जी० जी० चटर्जी के प्रश्नों के उत्तर में बताया था कि गाजीपुर में अनेक वर्षों से Pure Morhine जो लाभदायक डाक्टरी औषध है बनता रहा है। यह केवल एक ही बार सन् १९२३-२४ में ४३० पौंड ग्रेट ब्रिटेन को भेजा गया था, शेष सबकी खपत भारत में ही औषध विक्रेताओं में हुई है।" ख़राब और इधर उधर की ग़ैर कानूनी अफ़ीम को काम में लाने के लिये कच्चा (crude) मरफिया अधिक मात्रामें बनाया जाता है। सन् १०२३-२४ में ४००० पौंड, १९२४-२५ में २००० पौंड, १९२५-२६ में ५,००० पौंड, १९२६-२७ में बिल्कुल नहीं, १९२७-२८ में ११०० पौंड कच्चा मरफ़िया बनाया गया। ये आंकड़े अकेले भारत में बने माल की मात्रा को प्रकट करते हैं, जबकि योरोप में भी कच्चा मरफ़िया संसार भर की डाक्टरी मांग से अधिक तैय्यार किया गया। भारत में बना यह सब मरफिया लन्दन को उस अफीम के बदले भेजा गया जो वहां मरफ़िया बनने के लिये भेजी जाती थी। इसका आर्डर लन्दन के औषध निर्माताओं ने ब्रिटिश होम ऑफिस की आज्ञा प्राप्त करके भेजा था। सन् १९२८ के मार्च महीने से इसका बनाना बन्द कर दिया गया,

और उनकी जगह कोडाइन Codeine बनने लगी, यह मारफ़िया से कम जोखिम रसायन है। अफ़ीम से Heroin हेरोइन मारफ़िया जैसी अन्य वस्तु भी बनती है, पर यह गाज़ीपुर में नहीं बनाई जाती।

लन्दन को प्रतिवर्ष जो अफ़ीम भेजी जाती है, उसका परिमाण वहाँ के आर्डर पर निर्भर है। आर्डर हाई कमिश्नर के आफ़िस से दो प्रतिष्ठित ब्रिटिश फ़र्मों के लाइसेन्स प्राप्त करने पर भेजा जाता है। यह लाइसेन्स लन्दन के होम आफ़िस से स्वीकृत होता है और इसकी मात्रा निर्धारित होती है। इन ब्रिटिश फर्मों को गाज़ीपुर अफ़ीम ख़रीदने के लिये तीन लाइसेंस प्राप्त करने पड़ते हैं:—

१. निर्धारित वज़न तक माल लेने और उसका औषध बनाने का लाइसेन्स, होम आफ़िस से।
२. अफ़ीम पार्सल को ब्रिटेन की भूमि पर जहाज़ से उतारने की हाई कमिश्नर के आफ़िस को होम आफ़िस की आज्ञा।
३. गाज़ीपुर के अधिकारियों को भारत सरकार का माल बाहर भेजने का परवाना।

पहली नवम्बर १९२४ से ३१ अक्तूबर १९२५ तक ११६००० पौंड (Medical opium) जो लगभग १४५० मन होती है लन्दन भेजी गई थी और १६००० पौंड यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका भेजी गई। अमेरिका में अफ़ीम सदैव नहीं जाती है; इसके सिवा ४४१ पौंड पानी और १२८९ पौंड चूरे की शकल में अफ़ीम भारत के भिन्न ६ प्रान्तों में भेजी गई जिनमें ५ मन कलकत्ते, १ मन लाहौर, १ मन अहमदाबाद और शेष मद्रास बम्बई इत्यादि स्थानों पर भेजी गई।

सन् १९२५-२६ में कुल ७१० पेटियां (जिसमें से १०८ भारत के आबकारी विभाग को दी गईं थीं।) लन्दन भेजी गईं और दो और मद में दी गईं। और भारत में डाक्टरी व्यवहार के लिये ७५० पौंड चकी और १३४१ पौंड चूरा दिया गया। एक पेटी में डेढ़ मन अफ़ीम होती है इस हिसाब से लन्दन में ९०० मन अफीम गई जबकि सन् १९२४-२५ में १४०९ मन गई थी। आबकारी विभाग द्वारा मालवे की मनों अफ़ीम चोरी से इधर उधर जाती हुई पकड़ी जाती है, जो मुफ्त बराबर ही सरकार के ख़ज़ाने में जमा होती है।

आबकारी की अफ़ीम की, जो भारत के प्रान्तों में सर्व साधारण के व्यवहार में आने के लिये बेची जाती है, एक-एक सेर की छै पहलू चकी (डली) बनती हैं, ऐसी साठ चकियां फिर पेटी में बन्द होती हैं, सन् १९२५-२६ में ५२२० पेटियां बेची गईं। इस अफ़ीम में दो भाग मालवी अफ़ीम और एक भाग बनारसी अफ़ीम का मिश्रण होता है। मालवी अफ़ीम वह है जो भारत की रियासतों में बोई जाती है। बनारसी अफ़ीम से इसमें तेल का अंश अधिक होता है और यह कम साफ़ होती है। इस कारण से इसका नशा कम होता हैं। दोनों अफीमों का यह भेद पौदे के डोडे से रस संग्रह करने की भिन्न २ पद्धति के कारण से होता है। भारत में खपने के लिये तेल अंश वाली अफ़ीम अधिक उपयुक्त समझी गई है। सन् १९२४-२५ में ९३१० मन, और १९२५-२६ में ३३४७ मन कच्ची मालवी अफीम रियासतों से ख़रीदी गई, जिसमें से आधी तो संयुक्त मालवी रियासतों से और इतनी ही ग्वालियर तथा कुछ इन्दौर से आई थी। सन् १९२४-२५ में

७९६९ मन और १९२५-२६ में ७८७१ मन आबकारी अफ़ीम भारत में सर्वसाधारण में बिकी। ये आंकड़े बाज़ार की मांग के ऊपर निर्भर है।

Provision अफीम (विदेशों को जाने वाली अफ़ीम) के एक एक सेर के गोले बनते हैं। साठ गोलों को एक पेटी में बन्द करते हैं। सन् १९०७ से प्रथम चीन व्यापार के दिनों में ३०००० से ४०००० पेटियां प्रतिवर्ष बाहर भेजी जाती थीं। १९२५—२६ में १०७४९ पेटियाँ फेक्टरी से बाहर गईं, जिनमें से ८०१७ कलकत्ते में बेची गई थीं। १९२६ -- २७ में ७००० और १९२७—२८ में ५,००० पेटियां बाहर गईं। पहिली सितम्बर १९२५ को भारत सरकार ने इस बात का निश्चय किया कि आगामी दस वर्षों में अफ़ीम का भारत से इस प्रकार बाहर भेजना बन्द कर दिया जायगा। स्टेट्स उत्तरी बोर्नियो, मलाया स्टेट्स्, डच इन्डीज़, फ्रेंच इन्डोचाइना, मकाउ, और हांगकांग में अफ़ीम को पीने का बहुत प्रचार था। जब वहां अफ़ीम के कारण बहुत सी अनाधिकार चेष्टायें बढ़ गईं तब भारत सरकार को यह निश्चय करना पड़ा। कलकत्ते में पहले अफ़ीम का खुले आम नीलाम होता था, सरकार को यह भी बन्द करना पड़ा। अभी हाल में आबकारी विभाग ने चीन में बनारसी अफ़ीम पकड़ी थी।

आबकारी और Provision की अफ़ीम को अफ़ीम के पौधे के सूखे पत्तों से लपेट कर पैकिंग करते हैं। इससे असुविधा के कारण कुछ नहीं होने। अफ़ीम के पौधे का शेष भाग भी पैकिंग के उपयोग में ले लिया जाता है।

सरकार द्वारा सन् १९२५—२६ में Provision अफ़ीम ५१,१७८,००० रुपये, बनारसी आबकारी अफ़ीम १,९२४००० रुपये, मिली जुली ख़राब क्वालिटी की आबकारी अफ़ीम १०,९०५,००० रुपये, ब्रिटेन को भेजी जाने वाली डक्टरी अफ़ीम २,३४९,००० रुपये से अधिक, भारत में वेची जाने वाली डाक्टरी अफीम का चूरा ३७००० रुपये से कुछ कम, भारत में काम आने वाली डाक्टरी अफ़ीम की चकी १४००० रुपये से कुछ कम, और Alkaloids अफ़ीम (लगभग सभी मरफिया के रूप में इंगलैंग भेजा गया) ३०२,००० रुपये से अधिक की वेची गई।

इंगलैंड को जो डाक्टरी अफ़ीम भेजी गई उस पर २४५,००० रुपये का नुकसान तथा Provision अफ़ीम पर १९,६९५,००० रुपये और Alkaloids अफ़ीम पर १६५००० रुपये का लाभ रहा।

भारत सरकार अफ़ीम पीने के अभ्यास को पसन्द नहीं करती, फिर भी पीने का अभ्यास आसाम में अधिक प्रचलित है। यू० पी० कलकत्ता, और गोदावरी के प्रदेश में भी पीने का थोड़ा प्रचार है।

तमाम ब्रिटिश भारत में कोकीन इंजेक्शन की खुली छुट्टी नहीं है। नाज़ायज़ कोकीन रात दिन आबकारी विभाग और पुलिस द्वारा पकड़ी जाती है। यू० पी० के आबकारी विभाग के मत से ज्यादातर कोकीन जर्मनी जापान और इटली से आती है। बम्बई में पठान लोग नाज़ायज़ कोकीन वेचते हैं।

दुकानदारों को अफ़ीम बेचने के ठेके दिये जाते हैं, जिसकी बोली ऊंची होती है, उसी के नाम पर ठेका छोड़ा जाता है। आबकारी विभाग के इन्सपेक्टर ठेकेदारों को ऊंची बोली बोलने के लिये प्रोत्साहन देते हैं और अफ़ीम बेचने के नये नये बाज़ार (जहाँ अभी तक अफ़ीम बेचने का उनका ध्यान भी न गया हो) बताते हैं। परिणाम यह होता है कि अफ़ीम की बोली का भाव बढ़ जाता है, और भाव बढ़ने से टैक्स बढ़ता है। मंहगी अफ़ीम होने पर भी अफ़ीम की खपत में कमी नहीं होती, लोग चोरी से इसको बनाते और बेचने लगते हैं। और जिसे अफ़ीम की लत पड़ जाती है वह न महंगी देखेगा, न सस्ती। वह कितना भी गरीब क्यों न हो, सौ उपाय करके अफ़ीम लेगा। आज बहुत से परिवार इसी नीति के कारण बर्बाद हो चुके हैं और हो रहे हैं।

आसाम में सब से अधिक अफ़ीम का प्रचार है। यद्यपि वहाँ के सभ्य व्यक्ति अकसर लोग भी इस भयंकर अभ्यास को नष्ट करने की चेष्टा करते रहे हैं, परन्तु किसी ने भी सफलता प्राप्त नहीं की। फिर भी सन् १९२१ और उसके बाद जो सफलता मिली, वो यह महात्मा गांधी तथा कांग्रेस नेताओं की। महात्मा जी ने अगस्त १९२१ में आसाम का दौरा किया, और जनता को समझाया कि जब तक मादक द्रव्यों का सेवन न त्याग देंगे, तब तक स्वराज्य नहीं ले सकेंगे। महात्मा जी जानते थे कि इस अभ्यास को छोड़ना अभ्यासियों के लिये कितना कठिन है, फिर भी उन्होंने इनको बारबार यही कहा, कि बहुत लोग अवश्य इन वस्तुओं को छोड़ सकते हैं। अफ़ीम छोड़ना बहुत ही कठिन काम है, ईश्वर से [illegible]

उपदेश को हृदयंगम किया और अफीम की पुरानी लत को छोड़ दिया। अगस्त से नवम्बर तक सैंकड़ों नवयुवकों ने उत्साहित होकर मादकनिषेध का कार्य अपने हाथ में लिया। उन्होंने दुकानों के आगे खड़े होकर खरीदने वालों को विनयपूर्वक समझाया। कोई अशान्ति नहीं हुई। परन्तु सरकार ने इन लोगों को सरकारी आमदनी में कमी कराने के उद्देश्य के जुर्म में गिरफ़्तार कर लिया, फिर भी अफीम की बिक्री में बेहद्द कमी हो गई। सन् १९२०-२१ में १६१४ मन अफीम; ६३९ मन गांजा और २०४५७२ गैलन देसी शराब की खपत हुई। सन् १९२३-२४ में अफीम ८८४ मन, गांजा ३४४ मन और देसी शराब १९१,४२१ गैलन की खपत हुई। इस कांग्रेसी आन्दोलन का स्थायी प्रभाव हुआ और वहां फिर मादक द्रव्यों की खपत नहीं बढ़ी।

एक बार एक जेल के मेडीकल ऑफिसर ने बताया था कि "जेल में जो अफीमची अथवा शराबी सजा काटने आते हैं, उन्हें वहाँ न अफीम ही प्राप्त होती है, न शराब ही। प्रारम्भ के तीन चार दिन तो उन्हें इनके न मिलने से बड़ा कष्ट होता है पर फिर वे निराश हो जाते हैं। और जब वे जेल से छूट कर जाते हैं तब तक उनकी यह आदत हमेशा के लिये छूट गई होती है। वे पहले से अधिक स्वस्थ और मजबूत हो जाते हैं। जब्बलपुर अफीम इन्क्वायरी कमेटी के सामने भी यही बात कही गई थी। केवल पांच फीसदी ऐसे कैदी मिलेंगे जो अफीम अथवा शराब की बहुत ही हुड़क करें। उन्हें जेल में अफ़ीम एक दो बार दे भी दी जाती है। पर पन्द्रह बीस दिन में वह हुड़क भी जाती रहती है। वास्तविक बात यह है कि यदि मनुष्य को यह ज्ञान हो जाय

कि अब यह चीज़ मुझे न मिलेगी तो वह अवश्य इस लत से छूट जायगा।

आसाम में गैरकानूनी मादक द्रव्य दो स्थानों से आता है। (१) चीन और तिब्बत। (२) राजपूताना। इनमें राजपूताना अधिक महत्व है। चीन की अफ़ीम कभी २ बङ्गाल की खाड़ी में नावों में पकड़ी जाती है, पर वह कम मात्रा में होती है। तिब्बत और मंगोलियन देशों से आने वाली अफ़ीम का उपयोग आसाम की खानों तथा चाय के बागों में काम करने वाले तिब्बती और मंगोलियन कुलियों में ही है। मार्गरेटा के एक अस्पताल में एक तिब्बती कुली ने बताया कि वह अफ़ीम पीता रहा है, उस कुली का नाम सरकारी दुकानों से अफ़ीम खरीदने वालों की लिस्ट में दर्ज नहीं था जैसाकि वहाँ का सरकारी नियम है। वह मिश्मियों से गैर कानूनी अफ़ीम लेता था। तिब्बत से आसाम में अफ़ीम आने का मार्ग उत्तर पूर्वी पहाड़ियों और जंगलों में होकर है। जावा और सुमात्रा से भी प्रायः चीन की अफ़ीम पकड़ी जाती है। बर्मा की खाड़ी में होकर भी अफ़ीम का मार्ग है।

यदि कोई व्यक्ति प्रति दिन तीन माशा अफ़ीम खाता है तो वह दो माशा मिलने पर बहुत छटपटायेगा, पर यदि उसे बिल्कुल भी न मिले और हताश हो जावे तो वह उसे सर्वदा के लिये छोड़ भी देगा।

आसाम की प्रधानतः [illegible] के बाद उड़ीसा का नम्बर है। उड़ीसा में भी अफ़ीम का अतिप्रचार है। [illegible] उड़ीसा बहुत ही ऐश्वर्यशाली देश था, अंग्रेज़ों के [illegible] में [illegible] स्वाधीन किये थे। परन्तु अफ़ीम की लत ने उसे अब [illegible] कर दिया है।

एक तो वहां वैसे भी भयंकर बाढ़ें आतीं और खेत में खड़ी फ़सलों तथा धन जन को बहा ले जाती हैं।

उड़ीसा को उन्नत करने के लिये बिहार प्रान्त में सम्मिलित कर दिया गया था फिर भी उसे विशेष लाभ नहीं हुआ। एक बार इंडिया ऑफिस की आज्ञा से एक अफ़ीम जांच कमेटी उड़ीसा में बैठी थी। इसमें एक भी सदस्य योग्य नहीं था। उसका नं० २ प्रश्न देखिये,

(i) किसी शारीरिक व्याधि के प्रयोग पर लोग विश्वास करते हैं? अगर ऐसा है तो किन व्याधियों पर?

(ii) क्या लोग इसके शक्तिवर्द्धक पदार्थ होने पर विश्वास करते हैं?

(iii) क्या अफ़ीम गठिया के दर्द और अन्य रोगों के आराम करने में बाहरी प्रयोग में आती है? किन २ रोगों पर?

इन प्रश्नों से साफ़ प्रकट है कि अफ़ीम की खपत के आधार क्या हैं। कमेटी ने ऐसा कोई प्रश्न नहीं किया जैसे, आपकी राय में अफ़ीम व्यवहार में आने के असली कारण क्या है? इसके प्रमाण में आप क्या विवरण पेश करते हैं? कमेटी का आगे चलकर पांचवां प्रश्न यह था,

(५) क्या लोगों को शारीरिक विशेष व्याधियों को रोकने के लिये, अथवा शक्तिवर्द्धक पदार्थ के रूप में, मादक द्रव्य की थोड़ी मात्रा लेना आवश्यक है? सांतवा प्रश्न अफ़ीम की खुराक के सम्बन्ध में था,

(७) क्या आपको कोई ऐसा उदाहरण ज्ञात है जिसमें अफ़ीम अधिक मात्रा में बिना शौक़ ली गई हो और उससे किसी

प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक क्रियों में नुकसान
हुआ हो ?

यह प्रश्न इस बात के समर्थन का संकेत करता है कि जो व्यक्ति डाक्टरी उपचार के सिवा वैसे अफ़ीम का शौक करते हैं, उन्हें अफ़ीम हानिप्रद नहीं है। बालासोर के एक डाक्टर के पास बीस प्रश्न दो दिन के अन्दर अन्दर उत्तर देने के लिये भेजे गये। यह डाक्टर बहुत ही व्यस्त अफ़सर थे, और वे प्रश्न भी विचार करने के लिये यथेष्ट समय चाहते थे। इन डाक्टर महोदय ने जो उत्तर जल्दी में दो दिन समाप्त होने पर भेजे थे, उनमें से एक तो उनके भाव से बिल्कुल ही विपरीत लिखा गया था। एक अमरीकन मिशनरी को, जिन्हें मादक द्रव्यों का विशेष अनुभव और ज्ञान था, इस कमेटी के समक्ष गवाही देने के लिये पेश किया, पर उन्हें यह कहकर इन्कार कर दिया गया कि आप देर से आये हैं।

मिस्टर सी० एफ़० एन्ड्रूज़, जिन्हें भारत के मामलों का विशेष ज्ञान है, और डाक्टर चोपरा, दोनों की यही सम्मति है कि देश के कल्याण के लिये कमीशनी खोजाटियां नई होनी चाहियें। यही एकमात्र उपाय अफ़ीम छुड़ाने का है।

उड़ीसा प्रान्त में जागीरी ठिकानों में अफीम की खपत
सन् १९२२—२३

जागीरदारी या स्टेट का नाम	कितनी अफीम खपती हैं		आबादी सन् १९२१	प्रति १०००० आबादीपर कितनी खपत हुई
	मन	सेर		सेर
अथागढ़	11	39	42339	110·7
अथामलिक	2	25	59753	17·6
बमरा	8	0	135432	23·6
बरमबा	2	20	38630	25·8
बौद	5	0	124515	16·0
बोनल	1	35	68186	11·0
दसपाला	3	1	34510	35·0
धेनकानल	32	28	233691	55·9
हिन्डोल	3	32	38621	39·3
खोंडपारा	5	19	64289	34·0
कियोंभर	9	13	379532	9·8
कालाहांडी	4	9	415846	4·0

खारास्वान	2	4	37409	22·7
मयूर भंज	33	7	754457	17·6
नरसिंहपुर	3	18	33003	41·2
नयागढ़	12	20	122843	40·7
नीलगिरी	6	30	65239	40·0
पटना	12	35	494719	10·4
पल-लहरा	2	8	23791	36·9
रायराखोले	2	0	31229	25·6
रानपुर	2	35	41281	27·8
सरायकेला	5	25	115539	19·4
सोनेपुर	5	15	226063	9·5
गंगपुर	30	8	309847	38·9
तलचर	7	21	51066	59·6
तिगीरिया	4	38	19535	101·5

बिहार और उड़ीसा प्रान्त की खपत

नाम ज़िला	आबादी सन् १९२१	कितनी अफीम दी गई (सेरों में)	प्रति १०००० आबादी पर खपत सेरों में
पटना	1609631	2094	13·0
गया	2159498	980	4·5
शाहाबाद	1865660	426	2·2
सारन	2289778	306	1·3
चम्पारन	1908385	296	1·5
मुज़फ़्फ़रपुर	2845514	482	1·6
दरभंगा	2929682	618	2·1
मुंगेर	2132893	662	3·1
भागलपुर	2139318	894	4·1
पुरनियाँ	1989637	1958	9·8
संथाल परगना	1882973	739	3·9
कटक	2109139	5372	25·4
बालासोर	1055568	5903	55·9

अंगूल	199451	242	12·1
पुरी	1023402	3097	30·2
सम्बलपुर	744193	840	11·2
हजारीबाग	1288609	691	5·3
रांची	1387516	762	5·4
पालामऊ	687267	445	6·4
मानभूम	1547576	817	5·2
सिंहभूम	691394	1000	14·4
जोड़	31,490,084	28,624	8·2

सन् १९२७ में कलकत्ते में एक जांच कमेटी बैठी थी। इसका उद्देश्य अफीम से उत्पन्न बुराइयों का कारण जाँच करना था। उस जाँच से पता चला कि कलकत्ते में मध्यम श्रेणी के बंगाली कच्ची अफीम बहुत खाते हैं। यह कच्ची अफीम गैर कानूनी और चोरी छिपे आती और बिकती है। सन् १९१२ के आंकड़े देखने से तो यही प्रतीत होता है कि वहाँ अब पहले की अपेक्षा खपत कम है। अब वहां पचास के पीछे एक व्यक्ति कच्ची अफीम खाता है। कलकत्ते में चीनी मर्द और औरतें भी अफीम खाती हैं, मर्द पीते भी हैं। बहुत से व्यक्ति तो ऐसे हैं जिन्होंने किसी रोगवश अफीम व्यवहार में ली थी, पीछे वह लत ही पड़ गई।

कलकत्ते में खपत के ये कारण हैं:—

१. अफीचियों द्वारा अधिक मात्रा में अफीम खाना।

२. पीने के लिये अफीम लेना।

कलकत्ते में अफीम पीने के लगभग १७५ अड्डे हैं। जांच कमेटी ने सिफारिश की थी कि (१) ये सब अड्डे सख्ती से बन्द कर दिये जाँय और इनके मालिकों को कठोर दंड दिया जाय। (२) बेचने और ठेके में जमा रखने की मात्रा में कमी कर दी जाय। अर्थात् कलकत्ते शहर में एक तोला (१८० ग्रेन) और सिरामपुर में दो तोला (३६० ग्रेन) की जगह घटकर केवल १२ ग्रेन ही बेचने और खरीदने का अधिकार रह जाय। बहुत ही पक्के अफीमची, जिसे अधिक अफीम लेने के लिये सरकारी रजिस्ट्री टिकट लेना होगा, की बात अलग है। अब तो डाक्टरी राय भी यह है कि ५ या ६ ग्रेन की दैनिक मात्रा भी

हानिप्रद है। दर्द अथवा अन्य उपचारों के लिये १ या २ ग्रेन काफी है। (३) सारे बंगाल प्रान्त में बेचने और रखने की मात्रा एक तोले से अधिक न रहने दी जाय और आगे चलकर फिर आधा तोला कर दी जाय। (४) पुराने अभ्यस्त अफीमचियों का नाम सरकारी रजिस्टर में दर्ज कर लेना चाहिये और उनको कुछ अधिक अफीम प्राप्त करने के सरकारी रजिस्ट्री-कार्ड छै महीने के अन्दर अन्दर दे देने चाहिये। (५) अन्य कोई व्यक्ति १२ ग्रेन से अधिक (केवल डाक्टरी नुसखे को छोड़कर) न पा सके। (६) मूल्य में क्रमशः वृद्धि हो। (७) फुटकर मर्गीज बेचने का भाव प्रान्त भर में एक हो जिससे चोरी छिपे अफीम न बिक सके। (८) अफीम बेचने वाले ठेकेदार को सरकार नियत वेतन दे, जिससे वह बिक्री बढ़ाने का उद्योग न करे। (९) यह सब व्यवस्था बन जाने पर छोटे २ अफीमचियों का नाम भी रजिस्टर में दर्ज कर लिया जाना चाहिये। (१०) चिकित्सा के केन्द्रों को प्रोत्साहन दिया जाय। (११) गैर सरकारी आन्दोलन को भी प्रोत्साहित किया जाय। (१२) मिल मालिकों से प्रार्थना की जाय कि वे मिल में काम करने वाली मजदूर माताओं की निगरानी करें कि कहीं वे अपने बच्चों को सुलाने तथा चुप बना रखने देने के लिये अफीम तो नहीं दे रही हैं। (१३) बिक्री की दूकानों को कम किया जाय, और वे मिल अथवा फैक्टरियों के पास पास में न रहें।

कि अफीम बेचने का अधिकार औषध विक्रेताओं को सौंप दिया जाय और ठेके तोड़ दिये जांय। मूल्य में वृद्धि की नीति बहुत ही घातक सिद्ध होगी, क्योंकि गरीब और मजदूर अफीमी अपनी सारी कमाई देकर भी अफीम खरीदेगा और इस प्रकार वह स्वयं तो नष्ट होगा ही, उसके स्त्री बच्चे भी भूखे मरेंगे और नष्ट होंगे।

जब्बलपुर जांच कमेटी ने यही उपाय बताये थे कि अफीम खरीदने की मात्रा चौथाई तोला या ४५ ग्रेन कर दी जाय।

कानपुर जाँच कमेटी का कहना है कि अफीम की खपत तांगे-वालों तथा अपराध करने वालों में अधिक है।

बनारस कमेटी ने भी मादक द्रव्यों को बिल्कुल बन्द कर देने की सिफारिश की है।

वर्त्तमान में, मात्रा से अधिक अफीम रखने पर अथवा अड्डे में जाकर अफीम पीने पर जो सजा दी जाती है वह कम है। यू. पी. में सन् १८७८ से एकत्र होकर अफीम पीना जुर्म है, लेकिन ऐसा अब भी होता है। सन् १९२७ में एक अनुभवी अधिकारी ने लखनऊ को लक्ष्य करके यह बात कही थी कि बड़े शहरों में अब भी एक दर्जन अफीम पीने के अड्डे हैं जहां तीन सौ व्यक्ति नियमपूर्वक अफीम पीकर स्वर्ग का आनन्द लेते हैं। सन् १९२६ में ऐसे चार केस पकड़े गये थे।

नवम्बर सन् १९२४ में एक सरक्यूलर लेटर भारत सरकार ने सब प्रान्तीय सरकारों के पास भेजा था जिसमें एक साथ मिलकर काम करने का प्रस्ताव था और विशेषतया सर्वत्र एक ही मूल्य रखने की प्रेरणा थी जिससे चोरी छिपे अफ़ीम बेचना खरीदना बन्द हो सके। इन

सब योजनाओं के उत्तर प्रान्तीय सरकारों ने भारत सरकार को भेज दिये, जिसे उसने अपने एक विशेष वक्तव्य और नीति के साथ जून १९२६ में प्रकाशित किया।

सन् १८९३ में रायल कमीशन ने भी अफ़ीम की जांच की थी। उसने यह सिफ़ारिश की थी कि कच्ची अफ़ीम की आवश्यक मात्रा रहने दी जाय, चाहे वह शारीरिक व्याधि के लिये व्यवहार में ली जाय अथवा शक्ति बढ़ाने या आनन्द लेने के लिये ली जाय। रायल कमीशन ने अन्य छोटी २ बातों को भी दूर सुधार कर दिया था। भारत सरकार रायल कमीशन की रिपोर्ट के अनुकूल है, पर वह यह प्रकट नहीं करती कि उस कमीशन के एक सदस्य मिस्टर एच० जे० विलसन ने इस रिपोर्ट में अपनी एक ज़ोरदार और अकाट्य विपरीत टिप्पणी लिखी थी। स्वर्गीय मिस्टर जोशुआ रौन्ट्री ने अपनी पुस्तक "दी इम्पीरियल ड्रग ट्रेड" में इस रिपोर्ट की थोथी और एकतरफ़ा कार्रवाई की अच्छी विवेचना की है। यह पुस्तक सन् १९०५ में प्रकाशित हुई थी।

"लीग ऑफ़ नेशन्स अफ़ीम कमेटी" ने अन्तर्राष्ट्रीय अफ़ीम समस्या पर विचार करने के लिये अनेक विद्वान डाक्टरों से परामर्श लिया था, उन सबकी यही राय थी कि नियमित रूप से अफ़ीम सेवन करना उचित नहीं है। यह वक्तव्य सन् १९२६ का है। इन्हीं दिनों इंडियन मेडिकल सरविस के डाक्टर कर्नल चोपड़ा ने भी जांच करके यही राय प्रकट की।

आसाम ने भी अपनी अफ़ीम जांच कमेटी बनाई थी और विस्तार रूप से जांच की थी। परन्तु उसकी सिफ़ारिशों को सरकार ने अंशतः ही स्वीकार किया।

प्रकरण २

मालवी अफीम

ब्रिटिश भारत में जो मनों गैर कानूनी अफीम पकड़ी जाती है वह अधिकांश राजपूताने की होती है। इस चोरी के व्यापार का कारण वहाँ अफीम का बहुत सस्ता होना और ब्रिटिश भारत में बहुत मंहगा होना है। यदि कोई व्यक्ति एक मन अफीम राजपूताने से २००) रुपयों की खरीद कर सही सलामती से ब्रिटिश भारत में बेच दे तो उसे कम से कम एक हजार रुपये बचेंगे।

राजपूताने की किसी किसी स्टेट में अफीम की खेती करना बहुत लाभप्रद सौदा रहा है। लेकिन थोड़े ही समय से अधिकारियों ने इस पर पूरा अधिकार और नियन्त्रण रखने की कोशिश की, और भूपाल तथा जयपुर ने तो बिल्कुल ही खेती न करने की चेष्टा की है। जयपुर सरकार.तो प्रति वर्ष अपने आबकारी विभाग की रिपोर्ट भी प्रकाशित करने लगा है।

आजकल राजपूताने में अफीम की पैदावार के दो बड़े बड़े स्थान हैं। झालरापाटन, मन्दसौर, सीतामऊ और राजगढ़ के आसपास रत-लाम तक खूब पैदा होती है। कोटा और टोंक के आसपास भी होती है। टोंक से 'अफीम बिस्कुट' बनकर जैसलमेर और जोधपुर आते हैं। इन जिलों में बहुत अधिक खपत होती है। जैसलमेर में एक वर्ष में एक हजार सेर अफीम प्रति दस हजार जन संख्या पीछे खर्च

होती है। इस प्रचुरता का कारण लोगों का खाना तो है, परन्तु चोरी छिपे बाहर जाना भी है। इन स्टेटों से अन्य राजपूती स्टेटों, और वहां से सर्वत्र फैलना. यह सारा व्यापार जोधपुरी मारवाड़ियों के हाथ में है। अंकों की गणना के अनुसार ब्रिटिश इलाकों के पड़ोस की देशी रियासतों में अफीम की खपत हमेशा अधिक होती है।

टोंक के इलाके की अपेक्षा अन्य इलाकों में सरकार का अधिक नियन्त्रण है। अक्सर लोग अफीम इकट्ठा करते, सुखाते और तेल लगा कर तैयार करते हैं। काश्त करने वाले को उनकी अफीम के ७) रुपये सेर के दाम मिलते हैं, जबकि सरकार की बेचने की कीमत १२) से लगाकर १५) रुपया तक है। गाजीपुर की अफीम २८) रुपया सेर बिकती है।

राजपूताने की अफीम मालवी अफीम के नाम से प्रसिद्ध है। सन् १९०७ में जब भारत सरकार ने चीन को अफीम न भेजने का निश्चय किया, तब उसने मालवी स्टेटों को इस बात की सूचना दी कि अब हमें तुमसे माल खरीदने की कम आवश्यकता होगी। सरकार की इस अचानक घोषणा ने अनेक मारवाड़ी व्यापारियों पर वज्रपात किया, क्योंकि उनके हाथ में अफीम का भारी स्टोक मौजूद था। कुछ समय तक तो यह स्टोक ज्यों का त्यों पड़ा रहा, किन्तु जब अन्य देशों पर पाबन्दियाँ लग गईं और भाव महंगा हो गया तब मारवाड़ी व्यापारियों ने इसे खरीदना और बेचना आरम्भ किया और इस स्टोक की अच्छी कीमत उठी। इन मारवाड़ी व्यापारियों में [illegible] सरकार [illegible] है। [illegible] इन रियासतों में अफीम पर [illegible] नहीं है, [illegible]

वह लीग ऑफ नेशन्स के समक्ष दुनियां के और देशों में नाजायज अफीम पहुँचने की जिम्मेदार है, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और सुदूर देशों में मालवी अफीम नाजायज तौर से पहुंची है। बम्बई से मेल बोट दक्षिण अफ्रीका को जाती है उसमें कभी कभी निश्चय चोरी से अफीम जाती है। तलाशियां होती हैं, परन्तु कम।

मई सन् १९२७ में वायसराय ने अफीम उत्पादक देसी रियासतों की एक कॉन्फ्रेंस बुलाई और उसमें अपने भाषण में स्पष्ट रूप से सरकार की परेशानी बताई। उन्होंने कहा, "जैसा कि आप सबको ज्ञात है कि रियासतों में अफीम का भारी स्टाक है जिसकी निकासी का कोई कानूनी नियम नहीं है। साथ ही अफीम की काश्त भी होती रहती है, और नया माल तैय्यार होने पर पुराना स्टाक रुका रहता है। सो, जब तक यह स्टाक है और नई पैदावार भी रुकती नहीं है तब तक भारत सरकार अफीम की नाजायज रवानगी का अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व लेने को तैय्यार नहीं है। आप लीग आफ नेशन्स के कमीशन अथवा 'जेनेवा अफीम कन्वेन्शन' की धारा २४ के अनुसार दिसम्बर सन् १९२८ में नियुक्त सेन्ट्रल बोर्ड के समक्ष क्या उत्तर देंगे, जब वे रियासतों में प्राइवेट लोगों के पास नाजायज एकत्रित अफीम के विशाल ढेर की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे, और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से उसके भयानक परिणाम पर विचार प्रकट करेंगे? क्योंकि पकड़ा-धकड़ी के लगातार सिलसिलों से इस बात पर काफी प्रकाश पड़ता है कि रियासतों से समुद्र तट की ओर अफीम का नाजायज श्रोत्र जारी है।

"अन्दरूनी स्थिति भी इतनी ही गंभीर है। मुझे विश्वास है कि

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि नाजायज़ अफ़ीम ब्रिटिश भारत में ही नहीं बल्कि दूसरी पड़ोसी रियासतों में भी जाती है।

"तीसरी समस्या कुछ रियासतों में अफ़ीम की अधिकाधिक खपत का होना है। इस खपत के कारण भारत और भारत से बाहर अप्रिय भावना का बढ़ना है, जिससे रियासतों और भारत सरकार दोनों पर अविश्वास उत्पन्न होता है।"

वायसराय महोदय ने आगे चलकर मि॰ बेसिल ब्लैकेट की [illegible] नीति की चर्चा की कि "इससे रियासतों की काश्त बन्द हो जायगी और भारत सरकार लागत मूल्य पर उन्हें अफ़ीम देगी। सन् १९०६ से १९२६ तक मध्यभारत और राजपूताने में काश्त भूमि का क्षेत्रफल २४४,००० एकड़ से घटकर १००,००० एकड़ रह गया। सन् १९२३ से १९२६ तक ७२,००० एकड़ से घटकर ३५,००० एकड़ ही रह गया। क्योंकि काश्तकारों ने यह देखा कि गेहूं और अन्य खेती से अधिक लाभ होता है। इन्स्टीट्यूट आफ प्लान्ट इण्डस्ट्री इन्दौर के डाइरेक्टर मिस्टर होवर्ड के अनुसन्धानों से यह बात सिद्ध हुई कि गन्ना, [illegible] और गेहूं की सर्वोत्तम किस्म 'पूसा ४' की काश्त की जाय और खेती को ट्यूब कुओं द्वारा सींचा जाय तो अफ़ीम की खेती से यह अधिक लाभदायक है।"

देशी रियासतों की इस कान्फ्रेंस के वाद-विवाद से [illegible] परिस्थिति समझने के लिये एक कमेटी नियत की [illegible]

१. अफ़ीम की काश्त के [illegible]

है और इसका [illegible]

२. अफीम की अधिक से अधिक खपत कहां तक निश्चय की जाय ? किस अवसर पर और किस लिये ? बिक्री के लिये यह कैसे तैयार होती है और विक्रेता पर इसका प्रभाव क्या पड़ता है ?

३. रियासतों में अफीम का कितना स्टॉक बचा पड़ा है और उसकी निकासी का सबसे उत्तम मार्ग क्या है ?

४. नाज़ायज तौर से चोरी छिपे माल ले जाने के विरुद्ध मोर्चा कैसे लिया जाय ?

५. रियासती अफीम नीति और ब्रिटिश भारत की अफीम नीति को एक समान बना देना कहाँ तक उपादेय होगा। जैसे, रियासतों में अफीम की काश्त बन्द करदें और अफीम गाज़ीपुर फेक्टरी से लागत मूल्य पर खरीदी जाय जिससे रियासतों में भी ब्रिटिश भारत के भाव पर बिके।

कमेटी की रिपोर्ट एक साल तक भारत सरकार के हाथ में प्रकाशित होने के लिये पड़ी रही और बटलर कमेटी की रिपोर्ट की प्रतीक्षा करती रही, जो देसी रियासतों का भारत सरकार से वैधानिक सम्बन्ध निर्णय करने वाली थी। यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई पर इसमें अफीम का नाम मात्र को ही जिक्र है।

पहली जांच रिपोर्ट के विषय में हम समझते हैं कि रियासतों से अफीम का गैर कानूनी ढंग से जाना तब रुक सकता है, जबकि भारत सरकार १०,४००,००० रुपये देकर वहाँ पड़ा सब स्टॉक खरीद ले और गाजीपुर में उसकी डाक्टरी अफीम बनाले। इसकी खपत होने तक युक्तप्रान्त में भी काश्त बन्द रहे।

प्रकरण ३

बरमा

बरमा में तीन जाति रहती है; बरमी, भारतीय और चीनी। सरकार तीनों के लिये अलग २ 'अफ़ीम नीति' का व्यवहार करती है। बरमी और भारतीय तो अफ़ीम खाते हैं, तथा चीनी पीते हैं। कानून से चीनियों को ही अफ़ीम पीने की आज्ञा है, भारतीय इसे ला सकते हैं और बरमी कठिनता से प्राप्त करते हैं।

अफ़ीम पीने का एक विशेष लाइसेन्स होता है। सब अफ़ीमी चीनी रजिस्टर में दर्ज रहते हैं। सन् १९२५ की रिपोर्ट के अनुसार कुल ६५४० (१६५० चीनी, ४८८४ भारतीय, ६ अन्य) अफ़ीमचियों में १६२६ ने अपने आपको पीने वाला लिखाया, और ३१ दिसम्बर १९२४ तक तमाम प्रान्त में दर्ज हुए पीने वालों की कुल संख्या चीनी १६९८८, बरमी ११४४, और भारतीय ३०५ थी।

इससे पहले बरमियों में अफ़ीम खाने वालों की संख्या अधिक नहीं थी और कुछ ही जगह इसका प्रचार था। और [illegible] देखी गई। लेकिन सरकार को जिस समय हुआ कि अफ़ीम [illegible] [illegible] की [illegible] अफ़ीम की बहुत [illegible] होती है, तब यह सोचा गया कि एक नया रजिस्टर और [illegible] [illegible] के [illegible] की [illegible] के [illegible] से [illegible] और [illegible] [illegible]

थी कि अफीम रोग के आक्रमण को रोकने में निरर्थक वस्तु है। म्योंगम्या जिले में जहां सन् १९२४ में इस प्रकार का अनुभव करके देखा गया, वहां सन् १९२६ के आरम्भ तक रजिस्टर में दर्ज़ वैसे व्यक्तियों की संख्या १७६५ थी। उन्हें अपने अफ़ीमी होने का एक डाक्टर सारटीफिकेट दिखाना पड़ता था। अब तो अन्य जिलों में भी रजिस्टर लिखा जाने लगा है।

बर्मा में नाज़ायज ढंग से दो प्रकार की अफीम आती है। १. पूर्व की ओर से 'शान अफीम,' (शान स्टेट्स बर्मा में हैं) २. पश्चिम की ओर से 'मालवी अफीम'। सन् १९२७ की आबकारी रिपोर्ट में 'शान अफीम' को यूनॉन (चीन का दक्षिण-पश्चिम बड़ा प्रान्त) की अफीम बताया गया है। रिपोर्ट में आगे चलकर लिखा है कि अगले वर्ष समुद्र और रेल द्वारा आने वाली 'मालवी अफीम' और नदी के द्वारा आने वाली 'शान अफ़ीम' में अनुपात से ७:६ की कमी हुई है। सन् १९२५ की रिपोर्ट में इस बात को ठीक निर्णय करने में कठिनाई प्रतीत हुई कि 'शान अफीम' शान स्टेट्स से आती है या यूनॉन से!

बर्मा सरकार की यह घोषणा है कि गत पन्द्रह वर्षों में अफीम की खपत कम हो गई है। और अफीम-कर की आय भी कम पड़ गई है। सन् १९२७ की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक १०० व्यक्ति पीछे अफीम की खपत १ सेर का ०·२१ भाग था, जबकि इससे पहले वर्ष की खपत १ सेर का ०·२५ भाग था। दक्षिणी बरमा में कमी का क्रम, १ सेर का ०·३१ भाग और उत्तरी बरमा में १ सेर का ०·०७ भाग था। लीग आफ नेशन्स की अफीम कमेटी के विशेषज्ञों ने प्रत्येक देश की

प्रति दस हज़ार जनसंख्या के पीछे १२ ग्रेन की आज्ञा देने का निर्णय किया था। साथ ही इस बात की भी हिदायत थी कि डाक्टरी उपयोग में आने वाली अफ़ीम डाक्टरी काम में ही आए। उसकी वजह से डाक्टरी नुस्खों में अफ़ीम नाममात्र को ही होती है।

प्रकरण ४

मलाया

ब्रिटिश राज्य में एशिया के उपनिवेशों में ब्रिटिश मलाया, स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट, (ये सब मलाया प्रायद्वीप के ही भाग नहीं हैं) और Federated & unfederated Malay States को सबसे अधिक अफीम खपाने का कलंक प्राप्त है। इन उपनिवेशों की आयकर का सबसे अधिक भाग अफीम द्वारा प्राप्त होता है। .स्टेट्स सेटिलमेन्ट (Straits Settlement) के एक या दो प्रान्तों में (सिंगापुर को मिलाकर) ५० प्रतिशत का अनुपात है। सन् १९२५ में यह अनुपात तमाम स्टेट्स सेटिलमेन्ट में ३७ प्रतिशत और Federated मलाय स्टेट्स में १४ प्रति शत था। सन १९२६ में Federated Malay का आबकारी कर (खासकर अफीम या चण्डू+ का ही) फिर बढ़ गया। सरकारी रिपोर्ट ने इसे "Fresh Rocord" लिखा है। वह १२,३६५,००० से बढ़ कर १५,८९३,००० हो गया। बाहर से आनेवाला माल सन् १९२१ में ७५००० पौंड से सन् १९२६ में १३१००० पौंड हो गया। इस बीच में चीनियों की जन सख्या में वृद्धि हुई हो यह बात भी विश्वास योग्य नहीं है। सन् १९११ और १९२१ की जनसंख्या की प्रामाणिक गणना के अनुसार स्ट्रेट्स सेटिलमेण्ट में खपत प्रति बड़े चीनी पुरुष पीछे ३१४ ग्राम से घटकर २३१ ग्राम; और फेडरेटेड मलाय स्ट्रेट्स में १९५.

+वहां अफीम को चण्डू कहते हैं।

प्रान्त में घटकर १२८ ग्राम हो गई। इन अनुपातों की कमी भी यही प्रकट करती है कि अफीम की खपत में कोई खास कमी नहीं हुई।

नवम्बर सन् १९२३ में एक 'ब्रिटिश मलाया अफीम कमेटी' जाँच करने के लिये नियुक्त हुई। उसके आधार पर सन् १९२४ में सरकार ने बहुत मोटी रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट से बहुत सी बातों का पता मालूम होता है। परन्तु कुछ प्रश्न ऐसे रह गये हैं जिन्हें कमेटी ने छुआ भी नहीं। फिर भी स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट्स में एक 'अफीम रिवेन्यू रिप्ले-समेन्ट फंड' सन् १९२५ में बनाया गया जो अब मिलाकर ४३ लाख स्ट्रेट्स डालर होगया। इस फंड में बाद से कोई रुपया जमा नहीं हुआ। इस फंड को दूसरे कामों में खर्च करने के लिये स्ट्रेट्स सेटिलमेंट्स का शा-सन चाहता था, परन्तु कालोनियल आफिस Colonial Office ने उसे दबा दिया। दूसरे इलाकों में भी ऐसे फंड खोले गये हैं।

कारी की वजह से ही देश में इतनी उन्नति हुई है, फिर भी वह हमारे लिये कुछ नहीं करती और विशेषकर स्कूलों के सम्बन्ध में।

सन् १९२४ के कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में बहुत सी कठिनाइयों को आसानी से सामना करने के उपाय बतलाये हैं। इस देश में अधिक अफीमी लोग खानों और रबड़ के कारखानों में काम करने वाले चीनी मजदूर हैं जो चीन और मलाया के बीच आते जाते रहते हैं। कमेटी ने निम्न सुधारों की सिफारिश की थी:—

१. सरकार अफीम की फुटकर बिक्री का सारा प्रबन्ध अपने हाथ में ले ले; प्राइवेट दुकानदारों को ठेका न दें।

२. अफीम का पेकिंग बदल दिया जाय। छोटे २ पेकैट जो आसानी से खोले और फिर ज्यों के त्यों बन्द किये जा सकते हैं, बन्द कर दिये जांय और उनके बदले मशीन से भरने वाले हवाबन्द (Air Tight) ट्यूबों में अफीम भरी जाय जिन पर सील मोहर भी करदी जाय और जो एक बार से अधिक काम में न आ सकें।

३. सब से छोटा पैकेट जो अब तक ३ हून (=17½ ग्रेन) का बिकता है, वह बन्द कर दिया जाय और उसकी बजाय २ हून (=11⅔ ग्रेन) का कर दिया जाय।

४. अफीम पीने के बाद उसकी कीट* को ढूंढ़ २ कर देखा जाय और एकत्र किया जाय।

५. लाइसेन्स की दुकानों में तत्काल कमी की जाय।

---

*अफीम पीने के बाद चिलम में अफीम का जो जला हुआ पदार्थ बच रहता है उसे कीट कहते हैं।

अफीम का पूरा करता होगा। उसके परिवार का विचार करना वृथा है !!

दूसरा व्यक्ति रबर के कारखाने में काम करने वाला एक कुली था जिसकी टांगों में नासूर हो गया और फिर मलेरिया। धीरे धीरे उसकी तिल्ली भी बढ़ गई, अब उसने अफीम लेनी शुरू की। उसकी नौकरी छूट गई, वह कुरूप, घृणित और कोढ़ी हो गया। पर वह चिकित्सा के लिये अस्पताल नहीं गया, क्योंकि उसे भय था कि वहां भरती होने पर अफीम नहीं मिलेगी।

ये उदाहरण कुछ भी नहीं हैं। वास्तव में अफीम नष्ट और बर्बाद हुए व्यक्ति की तसल्ली है। यह प्रकट सत्य है। और यह भी सत्य है कि अफीम उसकी बर्बादी की पूर्णाहुति है।

सरकार की मादक द्रव्यों को बन्द करने की नीति ऐसे मनुष्यों के बर्बाद जीवन को सुखी नहीं बना सकती। वे सुखी तो तभी बन सकेंगे जब उनके आचरण सुधरें और उन्हें सद्ज्ञान की प्राप्ति हो। मलाया में इसी बात की आवश्यता है।

सन् १९१४ की अफ़ीम रिपोर्ट में एक धारा शिक्षा की है। शिक्षा के द्वारा भी अफीम का प्रचार रोका जा सकता है। स्टेट्स में पैदा होने वाले चीनीयों ने जिनके बच्चे मलाया में शिक्षा पाते हैं, अफीम पीना बिल्कुल ही छोड़ दिया है। यदि हम मूल कारणों को देखें तो इस उपाय से लाभ उठाया जा सकता है। मलाया में चीन से आने वाले परदेशी चीनीयों को यहां पहुंचने पर अफीम की आदत पड़ती है। इसके दो आधार हैं:— पहला यह, कि कुली चीनियों के जीवन की अवस्था उन्हें

करते हैं। हमें संग सोहबत में मानसिक सुधार करना होगा। मन और मस्तिष्क को जिस उपाय से विकास और उन्नति प्राप्त हो वे सब प्रचारित किये जांय। वहां पब्लिक हेल्थ एज्यूकेशन कमेटी की ओर से स्कूलों, अड्डों, क्लबों और चीनी सभाओं में अफीम विरोधी साहित्य पढ़ने को बांटा जाता है, जिनका मन पर अच्छा असर पड़ता है।

प्रकरण ५

जावा

जावा और इसके समीपस्थ डच ईस्ट इण्डीज के टापुओं की भी मलाया जैसी स्थिति है। चीनी, जो वहां अधिक संख्या में बस रहे हैं आम तौर से अफीम पीते हैं। कहीं कहीं जावा निवासी भी अफीम पीते हैं। कहीं कहीं अफीम का प्रचार बिल्कुल बन्द है। अफीमचियों के नाम रजिस्टर में दर्ज हैं और इन नामों में नये नाम नहीं लिखे जाते हैं। उन बाहरी जिलों में जहाँ नये चीनी परदेशी आकर बस जाते हैं, इन नामों की संख्या बढ़ती है और वहाँ कोई भी चीनी निवासी भी अफीम खरीद सकता है।

यहां की डच सरकार ने अपने प्रान्तों पर सुन्दर रीति से अधिकार कर रक्खा है और आबादी बढ़ जाने पर भी अफीम की खपत कम ही हुई है, बढ़ी नहीं है।

जावा में जो अफीमी रोगी अस्पतालों में आते हैं, उनमें बहुतेरे अफीम छोड़ बैठते हैं। चीनियों की एक सामाजिक सुधार सभा ऐसे लोगों को सम्भालती रहती है। बनडोएन्ग के अस्पताल में अफीम छुड़ाने के परीक्षण किये गये हैं वहाँ अफीम की मात्रा में १० से १५ दिन तक क्रमानुसार कमी करते रहते हैं। वहाँ के एक डाक्टर की राय है कि अफीम का विषयाक्त प्रभाव आँखों से दीखता नहीं है; वह अन्दर ही अन्दर जड़ खोदता है।

जावा में कोका की बहुत पौद होती है, इससे कोकीन बनती है।

है कि अफीम से वहाँ कोकीन बनाई गई और चीन में भेजी गई। होंग-कोंग में सन् 1915-16 में 90 पेटी, 1918-19 में 450 पेटी गई। स्याम में 1917-18 में 850 पेटी, 1918-19 में 1750 पेटी गई।

भारत सरकार ने यह माल Colonial Government को बेचा था, पर क्या वह इसकी असलियत से अनभिज्ञ थी। यूनाइटेड किंगडम से कोकीन बनकर चीन को आती थी और ब्रिटिश भारत से यूनाइटेड किंगडम को सन् 1913 में 59 Cwts, 1917 में 5170 Cwts अफ़ीम गई !!! निश्चय ही इस सब अफीम की कोकीन बनी और पूर्वी देशों में खपी। जापान में भी 1917-18 में 971 पेटी और दूसरे वर्ष 1918-19 में 1930 पेटी गई। इस प्रकार चीन को अफीम भेजना बन्द करके सरकार ने पड़ोसी देशों से कैसा लाभप्रद सौदा किया ?

देशी राज्यों में मालवी अफीम पर भी भारत सरकार का अधिकार होना चाहिये।

अब सरकार अफीम पर सारे नियन्त्र करले तब वह मूल्य में अधिक से अधिक कमी करदे। इससे चोरी छिपे व्यापार बन्द हो जायेंगे।

सितम्बर सन् १९२९ में जेनेवा अफीम कान्फ्रेन्स में सब देशों की सरकारों ने यह प्रस्ताव पास किया था कि अफीम को क्रमशः कम किया जायगा और डाक्टरी मत से सारे संसार को जितनी अफीम चाहिये, उतनी निर्धारित की जायगी।

वर्ष	१	२	३
१८९९-००	६६०२९७३१	२५९०७३१४	४०१२२४१७
१९००-०१	७६५३३६३०	२६७८८१२५	४९७४५५०५
१९०१-०२	७२७८०३३०	२४१३०३५०	४८६४९९८०
१९०२-०३	६७४७६५७०	२४७२७२४५	४२७४९३२५
१९०३-०४	८६०४०६७५	३३३८६१६०	५२६५४५१५
१९०४-०५	९०३२२४८५	२९५०६२७५	६०८१६२१०
१९०५-०६	८२०३१७००	२८३८६६१५	५३६४५०८५
१९०६-०७	८४९०७९२०	२८६९९३८०	५६२०८५४०
१९०७-०८	७८६७४७८६	२५०४१६१०	५३६३३१७६
१९०८-०९	८८२७१८२४	१८५४१३२०	६९७३०५०४
१९०९-१०	८३०२०२४५	१६६५२३२२	६६३६७९२३
१९१०-११	११२८२९४३३	१८६९९८६९	९४१२९५६४
१९११-१२	८९४१९१७०	१०९१७७७६	६८५०१३९४
१९१२-१३	७६८६८८७३	८९१५९२९	६७८७२९४४
१९१३-१४	२४३७३१७८	१५१८६६००	९१८६५७८
१९१४-१५	२३५८३२७४	९८११३३१	१३७७१९४३
१९१५ १६	२८७०२७१२	१७१६४९.१	११५३७७४१
१९१६-१७	४७४०००७३	१३६८५९११	२३८१४१६२
१९१७-१८	४६१८३५३०	१६६३१७३९	२९५५१७९९
१९१८-१९	४९३३६६७०	१९६१८२७३	२९७१८३९७

प्रकरण ६

कोकीन

कोकीन दक्षिणी अमेरिका के पीरू प्रदेश में कोका के पेड़ से बनती है। अफीम से भी बनती है। भयानक प्रभाव लाने तथा सुन्न करने में कोकीन सब नशों से बढ़ कर है। इसका प्रभाव आनन्दयुक्त सुस्ती होना है, पर अन्त में मस्तिष्क, शरीर और आत्मा के तेज का इससे नाश होता है। भारत में लम्पट नर-पशु इसे पान में रख कर खाते हैं। इसका प्रचार भारत में १९१४ से बढ़ा है। यद्यपि सरकार की इस पर कड़ी दृष्टि है फिर भी चोरी छिपे लाखों रुपयों की बिकती है।

कोकीन के नशे से क्षण भर एक आनन्द का अनुभव होता है, पर जब नशा उतर जाता है तब उसे मालूम होता है कि वह घोर नरक में गिर गया। उसे भय, भ्रम, भूल, अनिद्रा, मन्दाग्नि, शूल आदि रोग लग जाते हैं। उसकी आयु नष्ट हो जाती हैं।

पेटेन्ट दवाइयों में बहुधा दूषित द्रव्यों, जैसे अफीम, कोकीन, मद्य आदि का संसर्ग रहता है। सिर दर्द की टिकिया जो अधिकतर काम में लाई जाती है, प्रायः उनमें क़ाफीन और फेनेस्टीन होता है, यदि उनकी मात्रा भूल से अधिक लेली जाय तो बहुधा मृत्यु हो जाती है। अमेरिका के प्रसिद्ध डा. ओलीवरवेनडेल होलास का कहना है, "यदि ये सब दवा-इयां समुद्र में फेंक दी जांय तो इससे मनुष्य जाति का उतना ही फायदा हो सकता है जितना कि मछलियों का नुकसान।"

तीसरा खण्ड

बर्मा में भांग को लोग अधिक नहीं जानते। दक्षिणी भारत में इसे कम व्यवहार करते हैं। सबसे अधिक खपत सिंध में होती है। सन् १९२६-२७ में यू० पी० सरकार ने बहुत अधिक नाजायज चरस पकड़ी थी। इसकी खरीद का मूल्य ६) रुपये से १०) रुपये प्रति सेर है और बेचने का भाव १२०) रुपये प्रतिसेर।

भांग की पौद साल में एक बार होती है। पौद दो प्रकार की होती है नर और मादा। नर पौदा मादा से छोटा होता है और इसमें घन के पत्ते नहीं लगते। पौद में तीन चीजें होती हैं। १. पतली शाखाऐं। २. चिकने बीज (जिनमें से तेल भी निकल सकता है। ३. पसेव (रतूबत जो पत्तियों और फूलों के सिरों पर रहता है।) यह तीसरी चीज़ ही आबकारी की आमदनी है। एक ही पौदे में से तीनों चीजें बनती हैं।

१. गाँजा—मादा पौद के फूलों से गाँजा बनता है।

२. चरस—पसेव की बनती है, जैसे अफीम बनती है। इसमें पौद के मूल अवयव सबसे अधिक होते हैं।

३. भाँग—नर और मादा दोनों पौद की पत्तिओं को सुखाकर बनती है।

ये पदार्थ अति सूक्ष्म मात्रा में भूख को बढ़ाने वाले, तथा सूक्ष्म मात्रा में नींद और खूमारी को लाने वाले हैं। खूमारी की अवस्था में मनुष्य सुख का अनुभव करता है। ज्यों २ नशा बढ़ता है, वह स्वप्न देखता, कल्पनाओं में उड़ता और विवेकहीन होकर अनर्गल बकने लगता है। उसका स्नायु मंडल ढीला पड़ जाता है, और वह अनेक रोगों का शिकार बना रहता है। इन वस्तुओं के सेवन करने वाले सिड़ी, दीवाने क्रोधी और आवारागर्द हो जाते हैं।

प्रकरण २

भांग आदि से आय कर

सन्	अफीम	अन्य	योग
१९०१-०२	१०१५७६१०	६१८३८७३	१६३४१४८३
१९०२-०३	१०८१७५२६	६६८५८४६	१७५०३३७२
१९०३-०४	१२९८१६२६	७२३९६८३	१९९२१३०९
१९०४-०५	१२९९३७३३	६८०३०९८	१९७९६८३१
१९०५-०६	१३६५४४३४	८८१३४३५	२२४६७८६९
१९०६-०७	१३९९४५७२	८८१३६८९	२२८०८२६१
१९०७-०८	१४७०६३६४	८८४९५०३	२३५५५८६७
१९०८-०९	१४८४९३४८	९४०६४७४	२४२५५८२२
१९०९-१०	१४८७१९१६	९८८३३३४	२४७५५२५०
१९१०-११	१५५५६२०५	१०६९५७८९	२६२५१९९४
१९११-१२	१५७४६७७५	११३८५७४४	२७१३२५१९
१९१२-१३	१७८२४०११	१२१५७१६३	२९९८११७४
१९१३-१४	१९३६६५८७	१३६५९१६३	३३०२५७५०
१९१४-१५	१९४९९४७९	१४०२१३२१	३३५२०७९१
१९१५-१६	२०५४५०६५	१४२६६८९४	३४८११९५९
१९१६-१७	२११४६२००	१४८०६०३१	३५९५२२३१
१९१७-१८	२२८०५०३७	१४९२४४४८	३७७२९४८५
१९१८-१९	२४२२५१७०	१५९२१३७९	४०१४६५४९

टैक्सों की नीति बिल्कुल स्वाभाविक है। जिस चीज की अधिक खपत है उस पर टैक्स अधिक है और जिसकी खपत कम है उस पर टैक्स साधारण है। जिस चीज का प्रचार जहां फैलाना होता है उस पर पहले कम टैक्स रखा जाता है। नीचे की तालिका से खपत का अनुमान होगा:—

प्रकरण ४

शराब और अफ़ीम, भांग, गांजा, चरस की दुकानों की संख्या

	1900-01	1905-06	1910-11	1915-16	1918-19
भाँग आदि	19928	21865	20014	17316	17152
शराब	83202	91447	71052	55046	52683

इस तालिका से सरकार की नीति की एक झलक प्रकट होती है। दुकानों की संख्या १९०५—०६ में सब से अधिक रही। इसी वर्ष India Excise Committee ने दुकानों में कमी करने की जोरदार सिफारिश की। सरकार ने इस पर तुरन्त अमल किया और दुकानें कम कर दी गईं। १९१०—११ में शराब की दुकानें १९०५—०६ की अपेक्षा ७८% कम हो गईं, और कुल संख्या १२१५० कम हो गईं। भाँग गाँजा चरस की दुकानों में कमी बहुत कम हुई। इस नीति के परिणाम से कार्य नियन्त्रण में आ गया और आयकर में वृद्धि हो गई। सरकार से जब जब इस व्यवसाय को बन्द करने को कहा गया, उसने सदैव यही उत्तर दिया कि शिक्षा पर फिर क्या ख़र्च हो? इसका यह
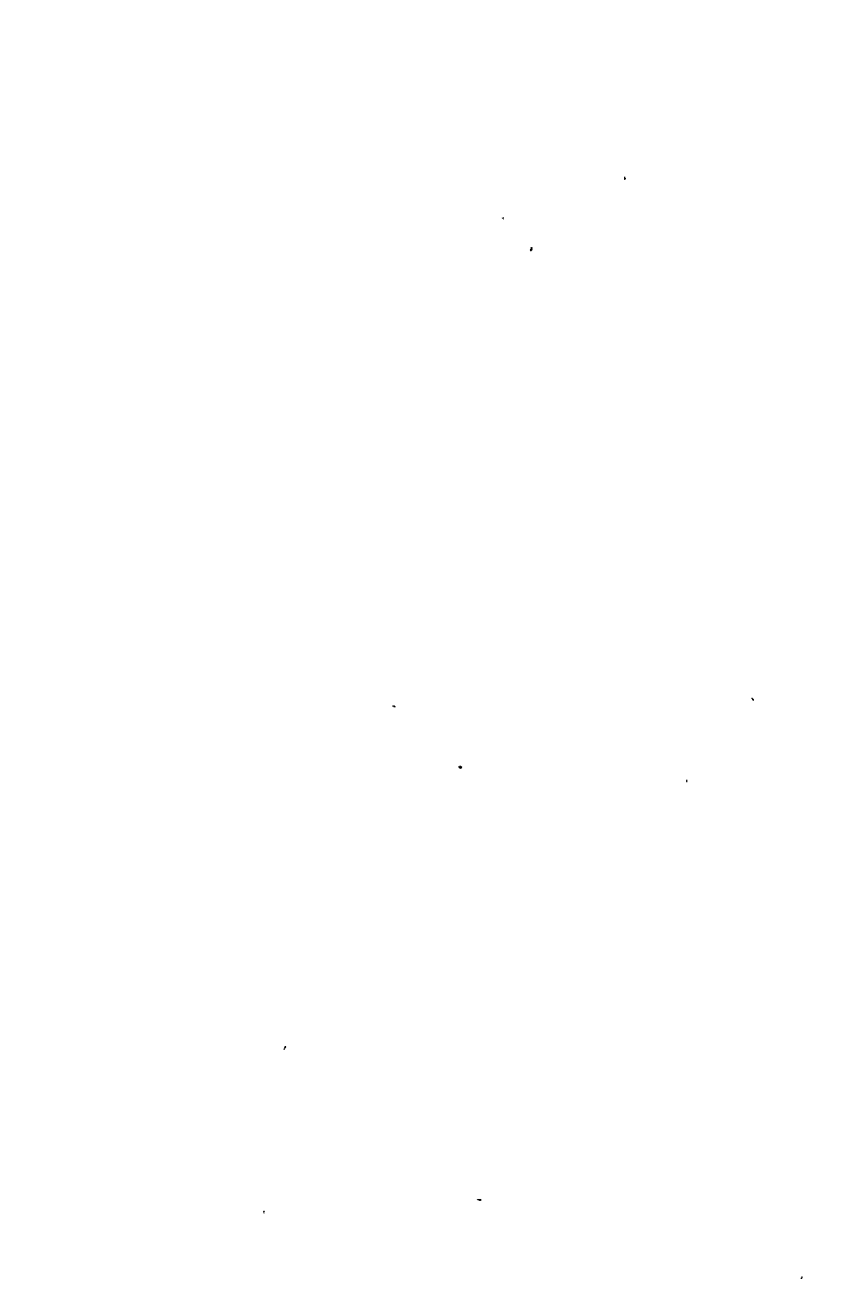
है। फिर भी तम्बाखू भिन्न २ जातियों के लिये भिन्न २ प्रकार की ज़मीन और आबोहवा का होना लाभदायक होता है। 'विरगिनिया तम्बाखू', जो पश्चिमी देशों का प्रसिद्ध तम्बाखू है और जिसकी बढ़िया सिगरटें संसार भर में दुकान दुकान पर बिकती हैं, का पौदा चार से छै फीट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियों की लम्बाई अट्ठारह इंच और चौड़ाई दस इंच तक होती है। पत्ती की शक्ल अडाकार होती है और फूल का रंग हलका गुलाबी होता है। तम्बाकू की कच्ची पौद को कोई नहीं खाता। जब पौद पकने लगती है, तभी उसे तोड़ लेते हैं, पूरा पकने से वह खाने के योग्य नहीं रहता। क्योंकि पूरा पकने की क्रिया में उसके समस्त गुण पत्तियों में से निकल कर बीजों में संग्रहित होने लगते हैं, यदि बीज ही बनाना हो तब तो पौद को पहले तोड़ने की आवश्यकता नहीं। पत्ती जितनी अधिक मोटी और भारी होगी उतनी ही अधिक उसकी क़ीमत होगी और वह उतना ही अधिक नशीला होगा। परशिया के शीराज़ तम्बाखू की बहुत प्रशंसा की जाती है। तम्बाखू की स्थाई रूप से खेती सबसे पहले यूनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) में होनी आरम्भ हुई थी। सन् १६०७ ईस्वी में जेम्सटाऊन नगर में 'विरगिनिया कोलानी' में तम्बाखू बोया गया। आठ वर्ष बाद उसके बोने में और भी विस्तार किया गया। तेरह वर्ष के बाद सन् १६२० में तम्बाकू व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तु बन गई। और इसकी इतनी प्रतिष्ठा हुई कि १०० पौंड (५० सेर) तम्बाकू के बदले एक क्वारी कन्या ब्याह ली जाने लगी। सन् १६२० में ही ऐसे ९० ब्याह रजिस्टर में दर्ज़ किये गये थे। अगले वर्ष सन् १६२१ में यह भाव बढ़ गया

Potash salts, 40·6 of lime salts, 8·8 of salica, 496·9 of lignine, and 88·7 of Water."

अपेलेटॅन की साइक्लोपेडिया में भी तम्बाखू का यही विभाजन बताया गया है। डाक्टर रिचार्डसन तम्बाखू पीने पर निम्न परिणाम बतलाते हैं:—

१. गीली भाप बनती है।

२. कार्बन् बनता है। यही कार्बन गले में तथा गले और कलेजे की नालियों में जम जाती है।

३. अमोनिया (ammonia) होता है। जो अधिक काल तक पीते रहने से जिह्वा को फाड़ डालता है, गले को खुश्क करता है जिससे प्यास बढ़ती है और तीव्र धूम्रपान की इच्छा जाग्रत होती है। अमोनिया रक्त को भी दूषित करता है।

४. कारबोनिक एसिड (Carbonic acid) 'कोयले का तेजाब' होता है, जिससे सिर दर्द, अनिद्रा और स्मरण शक्ति का ह्रास होता है।

५. निकोटीन प्रवाहित होती है। निकोटीन एक तीव्र विष है, इसकी एक बून्द खरगोश के मुंह में डालो तो वह तुरन्त मर जायगा। कुत्ते की जीभ पर दो बून्द डालो तो वह भी मर जायगा। निकोटीन को कबूतर की टाँग से छुआ दो तो वह चार मिनट के अन्दर मर जायेगा। डाक्टर ब्रोडे ने बिल्ली की जीभ पर एक बूंद डाली तो वह पांच मिनट में उसी क्षण मर गई।

प्रयोग करके देखा है कि तम्बाकू सेवन करने वाला व्यक्ति जीवन के १०—१५ वर्ष अवश्य ही तम्बाखू की भेंट चढ़ायेगा।

इन हानियों से परिचित होकर तम्बाखू का परित्याग किया जाने लगा। रानी एलिज़ावेथ ने अपने राज्य में तम्बाखू का पूर्ण निषेध करने की आज्ञा प्रचारित कर दी थी। उसके बाद दूसरे शासक जेम्स-प्रथम ने तम्बाखू के प्रतिकूल प्रसिद्ध पुस्तक 'Counterblast to tobacco' लिखी। उन्होंने लिखा कि 'तम्बाखू नेत्रों के लिये घृणास्पद, नाक के लिये दुर्गन्धित, मस्तिष्क के लिये हानिप्रद, फेफड़ों के लिये शत्रु और इसका धुआं जीवन अंधकार का अथाह समुद्र है।' पोप अर्बन अष्टम ने तम्बाखू पीना अपराध करार दे दिया था। टर्की के अमुरथ चतुर्थ ने धूम्रपान करने वाले को मृत्यु दण्ड दिये थे। कुस्तुन्तुनिया में ऐसे व्यक्ति की नाक में नली को आर पार छेद कर बाज़ारों में घुमाते थे। मास्को के ग्रान्ड ड्यूक ने धूम्रपानी को पहले आर्थिक दण्ड और फिर दुबारा मृत्यु दण्ड नियत किया था। फ़ारस के बादशाह ने अपने राज्य में तम्बाखू का आना वर्जित कर दिया था। अबीसीनिया के राजा किंग जॉन ने सूंघने वाले की नाक काटने और खाने तथा पीने वाले की गर्दन उतार लेने की दण्ड व्यवस्था की थी। फिर भी धूम्रपान रुका नहीं। विश्व के मेघ के समान यह प्रति पल समस्त संसार में आच्छादित होता रहा। और आज अपने भारत में तीन चार वर्ष के बच्चे सिगरट और हुक्के का कश का आंख मींच कर आनन्द लेते हैं।

भारत में इसका प्रचार अकबर के शासन काल में बढ़ा। अंग्रेजी सभ्यता ने इसे और भी सुलभ कर दिया, क्योंकि हुक्के और चिलम की

बहुत आदमी प्रति दिन सौ सौ बीड़ियां और ३०–४० चिलम तक पी जाते हैं। यदि प्रति आदमी २५ बीड़ी गिनें और दो पैसा उनका मूल्य समझें तो प्रति वर्ष ११।) रू० होते हैं। यदि वह आदमी ४० वर्ष तक बीड़ियाँ पीता रहा, तो ४५०) रुपये की बीड़ियां और ५०) की दियासलाई इस प्रकार कुल ५००) उसने फूंक डाले। इस रक़म पर सूद दर सूद लगाइये और सोचिये कि यदि कुल भारत में १० करोड़ मनुष्य भी तम्बाखूसेवी हुए तो ५० अरब रुपया तम्बाखू की भेंट जाता है।

भारत में १० लाख बीघे ज़मीन में तम्बाखू बोई जाती है, इतनी ज़मीन में यदि अन्न बोया जाय और दो बार बुआई करने से उसमें से प्रति बीघा २० मन अन्न भी हो, तो २० करोड़ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। प्रति दिन एक सेर के हिसाब से एक एक मनुष्य को ९ मन अन्न एक वर्ष को काफी होता है। इस तरह २२ लाख से अधिक मनुष्यों का पेट भर सकता है।

तम्बाखू एकाध मात्रा लेने में तो दर्द की पीड़ा कम करने वाला है। परन्तु अधिक मात्रा में लेने पर घुमेरी, बेहोशी, नशा, मृगी उन्माद और मृत्यु भी हो जाती है। धूम्रपान का इतना अधिक व्यापक प्रचार होने के कारण यह है कि इसे करके व्यक्ति कुछ देर के लिये चिन्ताओं और भार से मुक्त हो जाता और आराम अनुभव करता है। हमें सच्ची मुक्ति तो उस कार्य के करने पर ही मिल सकती है। हमें अपनी बुद्धि से अपना उत्तरदायित्व भार जो ईश्वर ने हमें मनुष्य शरीर देकर दिया है, प्रतीत करना और उसका निरालस्य भाव से अकृत्रिम रीति से पालन करना चाहिये।

भी उतनी नफ़ासत न सीखे होंगे। बच्चों की यह धारणा हो जाती है कि बिना पान खाये और सिगरट पिये हमें कोई बड़ा और बुद्धिमान नहीं समझेगा। हमने अनेक परिवार ऐसे देखे हैं जो बहुत दरिद्र हैं। जब उनके पास तम्बाखू के लिये पैसा नहीं रहता, वे अपने छोटे बच्चे को लेकर किसी अमीर व्यक्ति के पास जा बैठे। उस व्यक्ति ने बच्चे को चीज़ खाने के लिये एक पैसा दिया, उन्होंने पैसा अंटी में लगाया और बच्चे को लेकर बाज़ार चले। उस पैसे से तम्बाखू की एक गोली खरीदी जाती है!!

एक बार एक साठ वर्ष के मरीज़ ने डाक्टर को बुला भेजा। डाक्टर ने उसकी परीक्षा करके कहा कि मैं तुम्हारा इलाज तब कर सकता हूँ जब तुम तम्बाखू पीना छोड़ दोगे। रोगी ने कहा, 'तम्बाखू छोड़ना असम्भव है।' डाक्टर चले गये। रोगी ने दो दिन तक डाक्टर के पास आदमी भेजा, पर वे नहीं आये, उन्होंने यही कहा कि पहले उससे तम्बाखू छुड़ाओ, नहीं तो वह मर जायगा। पर रोगी तम्बाखू न छोड़ सका। उसने पचीस वर्ष की अवस्था से तम्बाखू सेवन आरम्भ किया था और अभ्यास यहां तक बढ़ गया था कि एक क्षण को भी मुंह खाली नहीं रह सकता था। जीभ के नीचे तम्बाखू की पत्ती दबी ही रहती थी। चौथे दिन जब वह मरने लगा और डाक्टर ने उसे कह दिया कि तुम आज मर जाओगे, अब भी तम्बाखू छोड़ो तो औषध अपना असर करे। उसने लड़खड़ाती ज़ुबान से उत्तर दिया कि डाक्टर को निकाल दो। जब वह ठंडा होने लगा तब उसने चिल्ला चिल्ला कर कहा, मेरी जीभ के नीचे तम्बाखू की पत्ती रख दो। मेरे मुंह में

मानसिक उन्नति को रोकता तथा उनके आचार को दूषित करता है। फ्रांस के सिपाहियों की नस्ल अब छोटी हो गई है, क्योंकि वे पचास वर्ष पहले बहुत धूम्रपान करते थे। टर्की के सैनिक तम्बाखू और अफीम के कारण से ही क़द में छोटे हो गये।

धूम्रपान रोकने से आर्थिक सुधार तो होगा ही, नैतिक सुधार भी होगा। यदि एक परिवार में एक व्यक्ति तम्बाखू के ऊपर एक आना या दो आना प्रति दिन व्यय करता है, तो उतने धन से प्रति मास वह अपने घर के या बच्चों के लिये कोई वस्तु खरीद कर ला सकता है। धूम्रपान का अभ्यास निश्चय ही व्यर्थ और दूसरों के लिये अपनी शान दिखाने के लिये है। इसका गुण कुछ भी नहीं। एक बार एक आफ़ीसर की स्त्री ने बाज़ार से एक वस्त्र खरीद लाने के लिये कहा। आफ़ीसर एक महीने तक भी उसे नहीं ख़रीद सके, क्योंकि उनके पास रुपये नहीं थे। और वेतन महीने की चार तारीख को मिलता था और उसी दिन उसका सब बंटवारा हो जाता था। वेतन आई, पर खेद है कि वह वस्त्र खरीदने की उसमें गुंजायश न रही। पत्नी ने बिगड़ कर घर का कामधन्धा बन्द कर दिया और कमरे में पड़ी रहतीं। धीरे २ यह छोटी सी लड़ाई सब पर प्रकट हो गई, क्योंकि केवल बीस रुपये ही का तो प्रश्न था। एक मित्र ऑफिस से लौटते समय उनके साथ हो लिये। ऑफिस और कोठी का फासला एक ही फर्लाङ्ग था, इस बीच में पैदल आते २ उन्होंने 'Craven A' की चार सिगरट पी डालीं। मित्र ने कहा 'क्या तुम अपने सिगरट के खर्च का अनुमान कर सकते हो?' उन्होंने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों?' 'इसलिये, कि तुम इसे त्याग कर चालीस रुपये

तम्बाखू का सबसे पहला प्रभाव भूख कम करना है। दूसरा प्रभाव मांस कम करना है। एक किसान ने पचास वर्ष की आयु में हुक्का पीना एक दम छोड़ दिया। पूछने पर उसने गर्व से कहा, 'मैंने अपना जीवन दस वर्ष और बढ़ा लिया है।'

डाक्टरी राय है कि तम्बाखू किसी भी रोग की औषध नहीं। जो दो चार उपचार हैं भी वे सत्य नहीं है। लोग इसे दाँतों के दर्द की अक्सीर दवा बतलाते हैं। दांतों का दर्द तम्बाखू दांतों के नीचे दबाने से सुन्न हो जाता है, जड़ से नहीं जाता। बल्कि यह कहिये कि इसी प्रकार उन्हें दस पन्द्रह दिन दातों के नीचे दबाना पड़ा कि वे तम्बाखू के अभ्यस्त हुए। एक बार एक मित्र के घर एक मन्त्री, एक डाक्टर और एक केमिस्ट चाय पीने आये। मित्र ने उनसे तम्बाखू प्रयोग का कारण पूछा। मन्त्री और डाक्टर के उत्तर को छोड़ कर केमिस्ट का उत्तर हमारी बात की पुष्टि करता है, उसने कहा, कि दो वर्ष पहले मेरे होंठ गल गये थे तब मैंने तम्बाखू लिया था। उनसे फिर पूछा गया, कि जब होंठ अच्छे हो गये तब भी अब तक क्यों लेते हैं ? केमिस्ट ने उत्तर नहीं दिया, वे झुंझला कर उठ कर चल दिये। डाक्टर सौल्ली कहते हैं, कि तम्बाखू नसों को सुन्न कर देता है, जीवन को मूर्छित कर देता है, और निर्बलता को बढ़ाता है। यह वास्तव में कलेजे को धीरे २ जलाता है। उसके पीने वाला साक्षात् सूली पर चढ़ा हुआ अपने दुर्भाग्य को चूमता है।

तम्बाखू का पीना अधिक हानिकारक है या खाना ? अधिकांश में पीने में अधिक हानि है। क्योंकि वह गले की नसों में होकर मस्तिष्क

में बढ़ रहा है, हमें निम्न बीमारियों की बढ़ती नज़र आती है: मुख दर्द (अकारण ही मुंह का दुखना), अपच, गठिया का दर्द और मस्तिष्क रोग। छोटे बच्चों पर तम्बाखू का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। वास्तव में सिगरटों ने हमारे सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक जीवन में दुर्बलता ला दी है।

प्रसिद्ध फ्रेन्च डाक्टर जी० सैसने ने नौ से पन्द्रह वर्ष की आयु वाले ३८ धूम्रपानी बच्चों का परीक्षण किया। इन बच्चों का रक्त प्रवाह बहुत क्षीण था और उन्हें हृदय रोग हो चुका था। पाचन शक्ति बिगड़ गई थी, और उन्हें अल्कोहल पीने की इच्छा होती थी। पारी का बुखार आने लगा था, रक्त के लाल परिमाणु नष्ट हो गये थे। नाक से खून गिरता था। रात को भरपूर नींद नहीं आती थी और मुंह का स्वाद बिगड़ गया था। डाक्टर ने इन बच्चों से तम्बाखू छुड़ाया और वे ६ महीने के बाद बिल्कुल स्वस्थ हो गये।

युवावस्था में धूम्रपान की सबसे अधिक प्रचुरता होती है। ज्यों २ अवस्था बढ़ती है, नसों में सुस्ती जल्दी २ आती है, और तम्बाखू का सेवन अधिक होता है। हृदय पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, और स्नायु मण्डल ढीला हो जाता है। इच्छाशक्ति नष्ट होती है। इच्छाशक्ति ही सदाचार की कुंजी है, जिसमें इच्छाशक्ति नहीं, उसकी इन्द्रियां वश में नहीं, वह सदाचारी नहीं, संयमी नहीं। इच्छाशक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है, इसी के सहारे जीवन के दुःख सुख कटते हैं। जीवन एक नौका है जो पानी में डूबती और उतराती रहती है, इच्छाशक्ति ही उसका खिवैय्या है यह एक प्रकार का मानुषीय

सकती। और वह तुरन्त वहां से चली गई।' युवक महाशय को उस कन्या के न मिलने का कई वर्ष तक खेद रहा, क्योंकि उससे विवाह हो जाने पर वे कलेक्टरी की उम्मेदवारी में आ सकते थे।

एक प्रसिद्ध शराबी व्यक्ति ने शराब और सिगरट बिलकुल छोड़ दी। जब उसके मित्रों ने इस पर आश्चर्य प्रकट किया तो उसने कहा 'कि इसमें आश्चर्य क्या है। मैंने हृदय से जब चाहा तब छोड़ दी। और मेरा विश्वास है कि मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति से सब कुछ कर सकता है। परन्तु एक बात मेरे अनुभव में आई कि शराब तो मुझ से अनायास ही छूट गई किन्तु सिगरट छूटने में कठिनाई हुई। मैं सिगरट को इतना कठिन नहीं समझता था। पर मैंने उस कष्ट को भी अपनी इच्छा शक्ति से सहन किया और वह भी त्याग दी। अब मैं मानों स्वतन्त्र हूँ।'

एक नवयुवक को सारे दिन सिगरट पीने की बुरी लत थी, सिगरट न मिलने पर वह बेहोश होने लगता था। उसकी नव-विवाहिता सुन्दरी ने अपने पति से एक दिन कहा कि 'मैं आपके इस अभ्यास को पसन्द नहीं करती, तुम्हारे पास आने से मुझे चक्कर आने लगते हैं क्या तुम मेरे लिए सिगरट नहीं छोड़ सकते?' युवक को अपनी पत्नी अति प्रिय थी, उसने उत्तर दिया कि 'शायद मैं छोड़ सकूंगा।' उसने उसी समय से सिगरट पीना बन्द कर दिया, पर उसे अत्यन्त कष्ट हुआ, वह बेहोशी में भी अपनी उंगलियों को होठों से लगाकर सिगरट पीने का संकेत करता था, उसकी पत्नी ने द्रवित होकर सिगरट सुलगा कर दे दी। पीते ही होश में आगया। उसने पत्नी से कहा, तुम अब मुझे

नहीं जाती। एक बार मेडिकल बोर्ड के निमन्त्रण पर इङ्गलैंड में तम्बाखू के दोषों पर एक निबन्ध लिखा गया जिस पर पांच सौ पौंड पारितोषिक दिया गया था। इस निबन्ध का कुछ सार इस प्रकार है:—

१. तम्बाखू का प्रयोग अप्राकृतिक है, क्योंकि कोई भी वनचर पशु इसे नहीं चरता।

२. पहले पहल जब मनुष्य इसे पीता है तो वह बीमार हो जाता है यदि वह पहले पहल किसी फल को खाये और चाहे वह फल उसे रुचि. कर न भी हो तब भी वह उसके खाने से बीमार नहीं होगा।

३. यह आनन्ददायक वस्तु नहीं है। आनन्ददायक वस्तु हानि नहीं करती।

४. अकेले इङ्गलैड में १२,०००,००० पौंड वार्षिक मूल्य का तम्बाखू उड़ाया जाता है। और इसके साज सामान सहित, २०,०००,-००० पौंड वार्षिक व्यय होते है।

५. यह गन्दी आदत है।

६. यह दांतों को बिगाड़ देती है।

७. इससे अनेक रोग शरीर में प्रवेश करते हैं। यह शारीरिक विकास को रोक देता है। बचपन में खाने से स्वाद शक्ति जाती रहती है। सूंघने, सुनने, और देखने की शक्ति भी कमजोर पड़ जाती है। गले में घाव हो जाते हैं। दिल कमजोर हो जाता है। पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। स्नायुमण्डल छिन्न भिन्न हो जाता है, हाथ कांपने लगते हैं। इच्छा शक्ति नष्ट हो जाती है। मनुष्य संशय और पशोपेश में पड़ा रहता है। मनुष्य ओज और स्मरण शक्ति नष्ट होकर वह पशु के

होता है। तीसरे डाक्टर कहते हैं कि जो मनुष्य प्रत्येक पाँच मिनट में चाय का चम्मच जितना थूकते हैं, वे अपने शरीर में से पचास वर्ष में ९ टन शक्ति खो देते हैं।

यूनायटेड स्टेट्स अमेरिका में सन १९०० में प्रति वर्ष ९५,-०००,००० पौंड तम्बाखू और १०००,२००,००० सिगरटें खर्च होती थी।

एक व्यक्ति खूब सिगरटें पीता था और वह सुधारवादियों का मजाक उड़ाकर कहा करता था कि मैं इतनी पीता हूं फिर भी मुझे क्यों नहीं कुछ होता। एक दिन सुना गया कि उसे लकवा मार गया है, पहले उसकी दृष्टि जाती रही, फिर बोलना बन्द हो गया, फिर गर्दन मुड़नी बन्द हो गई, हाथ उठने बन्द हो गये, धीरे २ सभी अंगों का संचालन भी बन्द और वह एक ही सप्ताह में मर गया !!! आंखों के एक बड़े भारी विशेषज्ञ डाक्टर का कहना है कि 'तम्बाखू आंखों का शत्रु है। यह आँखों को ले बैठता है और श्रवण शक्ति को कम कर देता है। यदि वे किसी भी अवस्था में पहुंच कर तम्बाखू त्याग दें तो उनका रोग अच्छा हो जायगा। मिस्टर प्लाइमाऊथ इंगलैंड के प्रसिद्ध वकील थे; उन्होंने लगातार तीस वर्षों तक तम्बाखू खाया भी और पिया भी। उनकी दृष्टि लगभग नष्ट हो चुकी थी और पिछले दस वर्षों से सिर में गूंज बनी रहती थी। उनके मित्रों ने तम्बाखू छोड़ देने की प्रार्थना की। उनके बार बार कहने पर उन्होंने तम्बाखू छोड़ दिया, परिणाम यह हुआ कि ६३ वर्ष की अवस्था में भी वे देखने और सुनने लगे। उनकी शिकायतें मिट गईं।

था। उसे अस्पताल ले गये पर वह वहां पहुंचते ही मर गया !!

तम्बाखू खाने, पीने और सूंघने का एक ही अर्थ है, हल्का नशा होना। इसी लिये इसका व्यवहार किया जाता है। परन्तु यह प्रत्येक अवस्था में स्नायुमण्डल को निर्बल और सुस्त कर देता है। रक्त का प्रवाह ठीक ठीक नहीं बहता। पसीने निकलने के छिद्र बन्द हो जाते हैं, मल अंतड़ियों में चिपक जाता है। जब शरीर में मल पदार्थ और अशुद्ध पानी रुकने लगेगा तो अवश्य कोई रोग उत्पन्न होगा। बहुत से व्यक्ति भोजन के बाद में तम्बाखू पीते हैं जिससे वे समझते हैं कि भोजन को पचने में सहायता मिलती है। परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। वह नसों को केवल गरमा देता है, जिससे अंतड़िये खुश्क हो जातीं और मल को बाहर फेंकने में अशक्त हो जाती हैं।

एक परिवार में तम्बाखू का बहुत ही प्रचार था, छोटे बड़े सभी तम्बाखू पीते थे। परिणाम यह हुआ कि इस परिवार में सबको दौरे आने लगे। बड़ा लड़का एक दिन घोड़े पर घूमने जा रहा था, हथ में सिगरट थी कि दौरा आ गया और गिर पड़ा, गिरते ही मर गया। गृहपति जिसकी अवस्था चालीस के लगभग थी, दौरे में ही मरा। स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों को भी क्लास में बैठे २ दौरे आ जाते थे। एक बार एक लड़के को दौरा आया, मास्टर ने इसकी जाँच की तो देखा कि मुंह में तम्बाखू भरा हुआ है। उससे बहुत मना किया गया परन्तु तम्बाखू नहीं छोड़ा। भरी जवानी में चौबीस वर्ष का होकर वह भी मर गया।

एक पार्लियामेन्ट के सदस्य बहुत ही प्रतिष्ठित थे, उनकी बहुत धाक

गांव में एक वैद्य रहते थे वे आये, उन्होंने नाड़ी देखी और कहा 'गड़बड़ मत करो, अभी मरे नहीं हैं।' पर वे बेहोशी का कारण न समझ सके। उन्हें कमरे में से निकालकर नीम के पेड़ों की छाया में खुली हवा में रखा गया। थोड़ी देर में ही उनकी मूर्छा जाती रही। उन्हें अपने कण्ठ में कड़वी चीज़ अटकी सी जान पड़ी। उन्होंने कई बार जोर लगाकर खकार थूकी तो काला धुआं निकला। और जीभ पर तम्बाखू का स्वाद मालूम पड़ा। उन्होंने पूछा कि मेरे कमरे में रात को कौन सोया था, गृहपति ने कहा कि मैं ही था, मैं रात में कई बार हुक्का पीने उठा भी था, पर किसी ग़ैर आदमी को अन्दर नहीं पाया। प्रोफेसर साहब खिलखिला कर हंस पड़े और बोले—"बस बस, तम्बाखू से मुझे बेहद घृणा है। मैं इसी के धुएं से बेहोश हुआ।"

इसके विषैले धुंए का परिणाम अवश्य ही भयानक है। अब आप कल्पना कीजिये कि यदि कोई बच्चा दस वर्ष की अवस्था से तम्बाकू पीने लगे तो पांच वर्ष बाद उसके कलेजे में कितना विष जमा हो जायगा और उसकी दस वर्ष बाद क्या दशा होगी। वह निश्चय ही पागल और मूढ़ बुद्धि हो जायगा। परीक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि तम्बाखू सेवन करने वालों पर टाइफाइड ज्वर और हैजे का शीघ्र प्रभाव होता है।

एक रियासत के प्रधान मन्त्री टाइफाइड से बीमार हुए और ६ महीने तक भी स्वस्थ न हो सके। डाक्टरों ने कहा कि आप योरोप जाइये और सिगरेट न पीने का प्रण करिये। मन्त्री महोदय योरोप गये परन्तु उन्होंने तम्बाकू पीना न छोड़ा। वे बिना पिये बेचैन होने लगते थे परिणाम यह कि हुआ कि वे वहाँ जाकर और भी अशक्त हो गये।

तम्बाखू के विष ने उन्हें सत्यानाश कर डाला है। जो व्यक्ति तम्बाखू खाता और थूकता है वह अपने इर्द गिर्द ६० फीट तक तम्बाखू की गन्ध फैलाता है।

× × × ×

"दारू और भाँग की तरह तम्बाखू भी खराब है। जो शराब को खराब मानता है, वह सिगरट, तम्बाखू कैसे पी सकता है। तम्बाखू पीने वाले इतने ज्ञानशून्य हो जाते हैं कि वे बिना आज्ञा के दूसरों के घरों में तम्बाखू पीते जरा भी नहीं शर्माते।"

—महात्मा गाँधी

"चुरूट, तम्बाखू पीने से बुद्धि नष्ट होकर मनुष्य की अधर्म में प्रवृत्ति हो जाती है। यह एक ऐसा नशा है, जो कई अंशों में शराब से भी बुरा है।"

—टाल्सटाय

"तम्बाखू पीने से हाज़मा सुधरता है, यह विचार बिल्कुल ग़लत है। ऐसे हजारों रोगी आते हैं जिनकी पाचनशक्ति तम्बाखू के व्यसन से बिगड़ गई है।"

—डाक्टर मर्सी

"तम्बाखू, शराब, चाय आदि नशीली और विषैली चीजों में शरीर को पोषण करने वाला गुण जरा भी नहीं है। कमजोरी और अकाल मृत्यु के सिवा और कोई नतीजा इससे नहीं होता।"

—डाक्टर टी० ए० निकोलस

"तम्बाखू से शरीर के भीतरी भाग बिगड़कर सूज जाते हैं। यह भयंकर विष है इसमें जरा भी सन्देह नहीं।"

—डाक्टर अल्माट

"जिस पुरुष को ५० वर्ष तक जीना हो, वह तम्बाखू पीने के कारण ४० वर्ष ही जियेगा।"

—डाक्टर शॉफ़

पांचवां खण्ड

मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः (यजुः १२।३२) प्रजाओं की शरीर से हिंसा मत कर।

अश्वं मा हिंसीः (यजुः १३।४२) अश्व की हिंसा मत कर।

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्य मीति वरूणः परोमर्त्तः परः श्वा ॥
(यजुः २२।५)

जो मनुष्य घोड़े को मारना चाहता है उसे परमात्मा रोग देता है वह मरणशील कुत्ते के तुल्य मनुष्य हमसे दूर हो।

गां मा हिंसी (यजुः १३।४३) गाय को मत मारो।

अन्तकाय गोघातम (यजुः ३०।१८) गाय को मारने वाले को मृत्यु दण्ड दो।

क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति (यजुः ३१।१८)

जो व्यक्ति गाय के मारने वाले के पास गोमांस मांगने जाता है, उसे क्षुधा दण्ड देना चाहिये।

इममूर्णायुं मा हिंसीः (यजुः १३।५०) भेड़ को न मारो।

ओपध्या मूलं मा हिंसिपम् (यजुः १।२२) औषधियों की मूल को न मारो।

अजावी आलभते भूम्ने। अथो पुष्टिर्वै भूमापुष्टि मेवावरून्धे।
(तैत्ति ब्रा० काण्ड ३ प्रपा० ९)

बकरे को न मारो।

माँस के विपक्ष में यह शास्त्रीय व्यवस्था है। वास्तव में मांस भक्षण प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है इसे हम भोजन में गिन ही नहीं सकते। मौलाना मख़जन-उल-अदविया ने माँस के विषय में इस प्रकार

उन पदार्थों को छोड़ कर घास पात नहीं खाते। प्यास लगने पर भी पशु पानी के सिवा अन्य पेय पदार्थों को नहीं पीता। परन्तु मनुष्य बहुत ही विलक्षण है। वह सब कुछ पेट में समा लेता है।

थलचर पशुओं के तीन भेद हैं। माँस-भक्षी, वनस्पति-भक्षी और फल-भक्षी। बिल्ली, कुत्ता और सिंह आदि हिंस्त्र जीव मांसभक्षी हैं। उनका स्वाभाविक भोजन मांस है। इसलिये इनके दांत लम्बे, नुकीले और दूर दूर होते हैं। इस प्रकार के दाँतों से ये जीव मांस को फाड़ कर निगल जाते हैं। उनके दांतों की रचना से यह स्पष्ट सूचित होता है कि प्रकृति ने उन्हें माँस खाने के लिये वैसे दांत दिये हैं। गाय, बैल, घोड़ा, बकरी आदि जीव वनस्पति भक्षी हैं इसलिये प्रकृति ने उनके दांत ऐसे बनाये हैं जिनमें उनसे वे घास को सहज ही काट सकें। मनुष्य के दांत न तो माँस भक्षी और न वनस्पति भक्षी पशुओ से मिलते हैं। उनकी बनावट ठीक वैसी है जैसी बन्दर आदि फल भक्षी जीवों के दांतों की होती है। अतएव यह निर्विवाद है कि मनुष्य फल भक्षी जीव है। माँसभक्षी जीवों का मेदा छोटा और गोल होता है। उनके शरीर से उनकी अंतड़ियां तीन से लेकर पांच गुना तक अधिक लम्बी होती हैं। वनस्पति भक्षी पशुओं का मेदा बहुत बड़ा होता है वे खाते भी अधिक हैं। उनकी अतड़ियाँ उनके शरीर से बीस से लेकर २८ गुना तक अधिक लम्बी होती हैं। फल भक्षी जीवों का मेदा चौड़ा होता है, उनकी अंतड़ियां उनके शरीर से दस से बारह गुना तक अधिक लम्बी होती हैं।

जिस वस्तु को उसकी स्वाभाविक दशा में देखकर खाने को मन

पोषक तत्त्व की ही आवश्यकता है वह जितना अधिक मिले, उतना ही अच्छा है, वे भूल करते हैं। प्रो० शिटंडेन ने यह सिद्ध कर दिया कि २० सिपाहियों के लिये ५० ग्राम प्राण पोषक तत्त्व काफी था और ८ पहलवानों के लिये ५५ ग्राम बहुत होता था। प्रोफेसर महोदय ने स्वयं ३६ ग्राम अपने लिये प्रयोग किया, फिर भी उनकी शक्ति बढ़ती गई। प्रयोग में जो सिपाही लिये गये थे, उनकी खुराक पहले ७५ औंस (२। सेर) थी, जिसमें उन्हें २२ औंस कसाई के यहाँ का मांस मिलता था। प्रयोग में माँस बिल्कुल बन्द करके इनकी खुराक केवल ५१ औंस कर दी गई। ९ महीने वे उस खुराक पर रहे। यद्यपि वे लोग पहले भी आरोग्य थे, तथापि नौ महीने तक बिना मांस का भोजन किये वे बहुत ज्यादा ताकतवर तथा अच्छी अवस्था में पाये गये।

इस प्रयोग में डाइनमोमीटर से ज्ञात हुआ कि उनकी शक्ति पहले से ड्योढ़ी हो गई थी और उन्हें कार्य में विशेष उत्साह रहता था। इस प्रयोग के बाद, कहने पर भी उन्होंने मांस नहीं खाया।

इंगलैंड के प्रसिद्ध डाक्टर जे० एफ० क्लार्क की राय है कि जो व्यक्ति माँस को शक्तिवर्द्धक पदार्थ समझ कर खाता है उसे माँस त्याग कर गन्ने का रस पीना चाहिये। क्योंकि मांस से कहीं अधिक गन्ने का सेवन उपयोगी है। सन् १९२४ में भारत में माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने जो अंग्रेज दल आया था, उसके साथ मेजर हिंगस्टन डाक्टर की हैसियत से गये थे। उन्होंने लन्दन में रॉयल जॉगराफिकल सोसाइटी के सामने भाषण देते हुए दो बातों पर विशेष प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा, 'ज्यों २ हम लोग ऊपर चढ़ते गये, त्यों २ स्वाभाविक-

वस्तु	जल	पोषक तत्व	चिकनाई	ठोस चीज़	अग्निवर्द्धक	मेदा
गो मांस	७४·६	१९·४	२·९	२४·४	·८	...
मुर्ग़ी मांस	७२·६	१९·९	६·२	२७·४	·६	...
सुअर मांस	७७·८	२२·७	४·१	२९·२	१·२	...
मटर	१४·८	२३·७	१·६	७·५	...	४९·३
गेहूँ	१२·४	२४·८	१·७	३·६	५९·६	...

सन् १८७९ की पार्लियामेंट में इंगलैंएड के कैदियों के भोजन के प्रबन्ध के बारे में एक रिपोर्ट पेश हुई थी कि एक पैंस के मटर में जितना पोषकतत्व है, उतना नौ पैंस के मांस में है। कुछ दिन पहले तक लोगों की धारणा थी कि कुश्ती लड़ने या कसरत करने वालों को मांसाहार करना परमावश्यक है, इसलिये योरोप, अमेरिका और पश्चिमी देशों के पहलवान अधपके मांस और अन्य उत्तेजक पदार्थों को खाते थे। पर अब उनकी यह धारणा बदल गई है और वे शाकाहारी बनते जारहे हैं। तुर्की सिपाही मांस बहुत कम खाते हैं, इसलिये वे योरोप भर में बली और योद्धा समझे जाते हैं। लालसमुद्र तथा स्वेज नहर के किनारे वाले भी मांस नहीं छूते, वे सब बड़े परिश्रमी और बली होते हैं। स्काटलैंड निवासी भी मांस नहीं खाते, वे भी अधिक बली होते हैं। काबुल के पठान मेवा अधिक खाते हैं, इसीसे पुष्ट हैं। मांसाहारी क्रोधी और भयानक हो जाते हैं, उनमें पैशाचिक और निर्दय भावना स्थिर हो जाती है, पर वे बलवान नहीं

डाक्टर अलेकज़ेन्डर मार्सडन, M.D.,F.R.C.S., चेयरमैन ऑफ कैंसर अस्पताल लदन, लिखते हैं "कि इंगलैंड में कैंसर के रोगी दिन २ बढ़ते जाते हैं। प्रतिवर्ष ३०,००० मनुष्य इस रोग से मरते हैं। मांसाहार जितनी तेजी से बढ़ रहा है, उससे इस बात का भय है कि भविष्य की सन्तानों में से ढाई करोड़ लोग इसकी भेंट होंगे। जिन देशों में मांस अधिक खाया जाता है, उन देशों में रोग ज्यादा होते हैं और डाक्टरों की अधिक आवश्यकता होती है।

देश	एक वर्ष में एक आदमी पर माँस का खर्च	दस लाख मनुष्यों में डाक्टरों की संख्या
जर्मनी	६४ औंस	३५५
फ्रांस	७७ औंस	३८०
इंगलैंड व वेल्स	११८ औंस	५७८
आस्ट्रेलिया	२७६ औंस	७८०

डाक्टरों ने खोज करके बताया है कि निमोनिया, लकवा, रिंडरपेस्ट शीतला, कंठमाला, क्षय और अदीठ इत्यादि भयंकर और प्राण नाशक रोग प्रायः गाय, बकरी और जल जन्तुओं के मांस खाने से होते हैं। सूअर के मांस में एक प्रकार छोटे कीड़े कद्दूदाने होते हैं, उनके पेट में जाने से अनेक रोग पैदा होते हैं। बकरी के मांस में ट्रिकनास्पिक्टस कीड़ा रहता है जिससे भयंकर रोग ट्रिकनोसेस हो जाता है। पठनी मछली

लाख भारतीय मुसलमानों के काम आते हैं, शेप ३८ लाख की खपत देश के बाहर होती है। इस समय संसार में गौमांस का सबसे बड़ा बाजार भारत है! बम्बई सरकार की रिपोर्टों से पता चलता है कि गत ४ वर्षों में १॥ लाख से अधिक गायें और ३१ हज़ार के लगभग भैंसे काट डाली गई हैं। इसके सिवा १० हज़ार बिना व्याही गाएँ और जवान बछड़े तथा ५८ लाख बैल काट डाले गये हैं। यह एक सरकारी कसाईघर का हिसाब है। ऐसे ऐसे अठारह कसाईघर हैं। प्रति वर्ष भारत से १६ करोड़ रुपये का तो चमड़ा ही बाहर भेजा जाता है।

भारत में ८० हज़ार गोरे सिपाही हैं जिनका भोजन गौमांस है। प्रत्येक पुरुष १॥ सेर मांस भी प्रतिदिन खाय तो रोजाना ९४६ मन और साल भर में ३ लाख ४५ हजार २९० मन हुआ। इतना कितनी गायों की हत्या से मिलेगा? फिर ७ करोड़ मुसलमान भी हैं। भारत में लगभग १२ सरकारी कसाईखानों के अलावा ३॥ लाख कसाई हैं। समस्त भारत में २० करोड़ मांसाहारी मनुष्य हैं। इनमें से ७ करोड़ मुसलमान और १० लाख अंगरेज़ निकाल दिये जांय तो भी १२॥ करोड़ हिन्दू मांसाहारी लोग बच रहते हैं, जिन्होंने बकरी के मॉस को इतना मंहगा कर दिया है कि गरीब मुसलमान लाचार गौमांस खाते हैं। इसके सिवा गत १० वर्षों में २२ लाख जीते पशु काटे जाने के लिये जहाजों में भरकर पानी के रास्ते से, और १६ लाख खुश्की के रास्ते से ईरान तिब्बत आदि को मॉस के लिये भेजे गये हैं।

बम्बई के सरकारी कसाईखाने हमने देखे हैं, वहां हजारों गायें लाइन में सीधी बांध दी जाती हैं, उनके आगे खाने को चारा डाल

जब से मैंने माँस त्याग दिया है, मेरा दर्द मिट गया है।"

—मिस्टर हैनसिन

"एक रोगी की गर्दन पर चार वर्ष से कैंसर थी। मुझे खोज करने पर उसके मांसाहारी होने का हाल मालूम हुआ। उससे माँस छुड़ा दिया गया और वह स्वस्थ है।

—डाक्टर J. H. K. लॉग

"माँसाहार शक्ति प्रदान करने के बदले निर्बलता का शिकार बनाता है और उससे जो नाइट्रोजीनस पदार्थ उत्पन्न होता है वह स्नायु पर विष का काम करता है।"

—डाक्टर सर टी० लोडर ब्रंटन

"माँसाहार की बढ़ती के साथ २ नासूर के दर्द की भी असाधारण बढ़ती पाई जाती है।"

—डाक्टर विलियम रॉबर्ट

"नासूर के दर्द का होना माँस का परिणाम है।"

—डाक्टर सर जेम्ससीयर M. D., F. R. C. P.

"८५% गले की आँतों के दर्द का कारण मांसाहार है।"

—डाक्टर लीओनार्ड विल्यम्स

"डेढ़ सौ वर्ष पहले से अब दांत के दर्द और पायोरिया के केस अधिक बढ़ गये हैं। इसका कारण मांसाहार है।"

—डाक्टर मिस्टर ऑर्थर अन्डरवुड

"१०५००० में से ८९२५ विद्यार्थी दन्त रोगी पाये गये, ये सब माँस के कारण से।"

—डाक्टर मिस्टर थोमस जे० रोगन

छठा खण्ड

Expansion Board बन गया है जो चाय के प्रचार में लाखों रुपये प्रति वर्ष करता है। गांव गांव, कस्बे २ आप चाय के प्याले मुफ़्त में पी सकते हैं। ये प्रचारक ग्रामोफोन का गाना सुनाते हैं, आपको चाय बनाने की भी विधि समझाते हैं और एक पैसे में एक पैकेट चाय देते हैं। स्टेशनों की दीवारों पर, अखबारों के पृष्ठों पर "चाय भारत का सर्वोत्तम पेय" विज्ञापन लिखा रहता है। क्या किसान, क्या राजा सभी को चाय पीने से स्फूर्ति आती है, गरमी में ठंडक पहुंचाती है, सरदी में गरमी पहुंचाती है, बुखार को रोकती है, बुढ़ापे को दूर भगाती है, इत्यादि अनेक झूठी बातें चाय के प्रचार में हमसे कही जाती हैं। पर सरकार इस प्रचार में कुछ भी बाधा नहीं डालती। इसे व्यापार का प्रश्न समझ कर हाथ में नहीं लिया जाता।

चाय एक प्रकार के वृक्षों की सूखी हुई पत्तियां हैं। इसके पीने से हल्का नशा होता है। इसमें तीन विष होते हैं:—

थीन (Theine)	२%
टेनिन (Tanin)	१५%
वोलेटाइल आयल (Volatile oil)	४%

थीन एक तीव्र क्षार है। ज्ञान तन्तुओं के संगठन पर इसका बहुत ही उत्तेजक और विषैला प्रभाव पड़ता है। चाय पीने में जो एक हल्का आनन्द प्रतीत होता है वह इसी क्षार का प्रभाव है।

टेनिन एक तीव्र कब्ज करने वाला पदार्थ है जिससे पाचन शक्ति बिल्कुल नष्ट हो जाती है। पेट में विकार होते हैं।

वोलेटाइल तैल वह है जिसकी सुगन्ध आती है। इसमें नींद को

अध्याय नवां

कांग्रेसी सरकारें और मादकनिषेध कार्य

प्रकरण १

कांग्रेस मिनिस्टरी बनते ही प्रान्तीय सरकारों में मादक निषेध कार्य की चर्चा सुनाई देने लगी। कांग्रेस का यह कार्य सन् १९२० से कांग्रेस के कार्यक्रम का एक अंग रहा है और उसके सम्बन्ध में इन बीस वर्षों में कार्यकर्त्ताओं और सहानुभूति रखने वालों ने समय २ पर अनेक कष्ट उठाये हैं। इसलिये अवसर मिलते ही इस कार्य को हाथ में लिया गया। यह कार्य बहुत सहल नहीं था, फिर भी इस गुरूतर भार को बहुत बुद्धिमानी से उठाया गया। जिसके परिणाम स्वरुप अंधेरे और सुषुप्त घरों में वर्षों बाद चिराग जले हैं और भूखी स्त्रियों और बच्चों ने कांग्रेस को दुआएं दी हैं कि आज हमारे आदमी ने शराब के पैसे बचा कर अनाज खरीदा है। कितने ही शराबियों ने अब महाजनों से कर्जा लेना बन्द कर दिया है। हजारों ने अपने मलिन और शराब से दुर्गन्धित वस्त्रों को त्याग कर नवीन वस्त्र पहने हैं, मानों आज वास्तव ही में जीवन का आलोक उदय हुआ है, प्रकाश की किरण उनके घर में नव सन्देश लाई है।

कांग्रेसी सरकारों ने ठेके की सब दुकानों को बन्द कर दिया और बहुत कम ठेके रखे गये। इन ठेकेदारों को सरकारी खजाने में जमानत

मैजिक लैन्टर्न से उपदेश देते हैं। जिसका परिणाम बहुत अच्छा रहा है। गाँव के गाँव शराब से सूखे हो गये, भट्टियाँ दफना दी गईं और सर्वत्र नवीन जीवन लहलहाने लगा है।

इस प्रकार का सबसे पहला कदम मद्रास सरकार ने उठाया। प्रीमियर श्री राजगोपालाचार्य की अन्तरात्मा ने इस शुभ कार्य में देर करना सहन नहीं किया और सन् १९३७—३८ के दूसरे भाग में केवल एक जिले में मद्य निषेध आरम्भ किया गया था, इस समय यह तीन जिलों के अन्दर है। १९३८—३९ में मद्य निषेध पूरे वर्ष एक जिले में और ६ महीने दो जिलों में रहा। सरकारी आय पिछले साल की अपेक्षा ३१ लाख घट गई। १९३९—४० में दूसरे भाग में अन्य जिलों में भी यह कार्य आरम्भ किया जायगा। और सरकार को लगभग १॥ करोड़ रुपये की आय हानि हुई।

यू० पी० सरकार ने मद्य निषेध का ठोस कार्य चुपचाप ही किया। एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, बिजनौर, जौनपुर, बदायूं जिलों में सफल प्रयोग किये गये।

मैनपुरी में जहां पहले अफीम २२५ सेर खाई जाती थी अप्रेल सन् १९३९ में वह घट कर केवल १ सेर ६ छटांक रह गई। और चरस ५५ सेर से घट कर ४ छटांक ही। एटा में ८८ व्यक्तियों में एक सप्ताह में अफीम केवल २० तोले ४ रत्ती और चरस ६ तोला ५ माशा खाई गई। शराब केवल १ बोतल पी गई। मई सन् १९३९ में ८१ व्यक्तियों में २९ तोले ३ माशा २ रत्ती अफीम खाई गई। मैनपुरी में मद्य निषेध के प्रथम वर्ष में ही देसी शराब ५९३२ गैलन से घटकर केवल ९ गैलन

पुलिस और स्वयंसेवक भरती किये गये ताकि चोरी से शराब शहर में न आ सके, न बन सके। शहर के अन्दर आने वाले सभी मार्गों पर पुलिस का ज़बरदस्त पहरा है, मद्यनिषेध क्षेत्र में पुलिस की टुकड़ियां चक्कर लगाती हैं। शहर में आने वाली सभी रेलगाड़ियों की अच्छी तरह जांच होती है। चोरी से लाई जाने वाली शराब का पता लगाने के लिये शरीफ़ सी० आई० डी० लगाई गई है जो आज़ादी से मुसाफ़िरों से मिलकर चोरी से लाई जाने वाली शराब पकड़ती है।

बम्बई में नियन्त्रण रखना बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि वहां थलमार्ग के अलावा जलमार्ग भी है। फिर भी मद्यनिषेध को क़ाबू में किया गया। केन्द्रीय सरकार ने बम्बई सरकार को मद्यनिषेध जारी करने के लिये नगर के आस पास समुद्र पर भी अधिकार दे दिया है इसलिये बम्बई सरकार समुद्री मार्ग से शराब न आने देने के उद्देश्य से स्टीम लंच द्वारा निगरानी करवाती है। बम्बई में समुद्री सीमा के तीन मील के अन्दर ज्योंही कोई जहाज़ आया कि मद्यनिषेध पुलिस इस पर चढ़ता है और जहाज़ के शराबख़ाने बन्द कर दिये जाते हैं।

लगभग ५ हज़ार पुलिस के अलावा ८०० स्वयंसेवक स्वेच्छापूर्वक कार्य कर रहे हैं। इन स्वयंसेवकों में छात्र, डाक्टर, वकील और उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं। होममिनिस्टर के पुत्र भी स्वयंसेवकों में हैं। विभिन्न व्यायाम शालाओं और अन्य स्थानों के २०००० स्वयंसेवकों ने भी अपनी सेवाएं अर्पित कर दी हैं, जिनमें महिला भी हैं।

सरकार ने शराब बेचने वालों के स्टाक को मुहर लगाकर केन्द्रीय गोदामों में रखवा लिया है, क्योंकि दुकानों पर बिक्री के लिये निर्धारित मात्रा से अधिक शराब नहीं रखी जा सकती।

आमोद-प्रमोद की संस्थाओं के रूप में शराबखाने हमेशा पेश करते थे—बहुत-से आदमियों के लिये यह सम्भव हो सका है कि वे मोटर या रेडियो खरीद सकें अथवा मनोविनोद के दूसरे साधनों में भी भाग ले सकें।

८. बचत के आंकड़े बताते हैं कि सेविंग बैंकों में रुपया जमा करने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई है। साप्ताहिक या मासिक बीमे की किश्तों में भी बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है और मकान व ऋणदात्री संस्थाओं की पूँजी भी बहुत ज्यादा बढ़ गई है।

९. मज़दूर अपने घर में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा है; उसके रहन-सहन का स्टैंडर्ड ऊँचा होगया है। शराबखानों के कारण उसकी क्रयशक्ति के उपयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत होगया था।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में औद्योगिक स्थितियों की जांच के लिये ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि-मण्डल ने लिखा था कि शराबबंदी का आर्थिक प्रभाव बहुत पड़ा है। बहुत-सा रुपया मजदूर बचाकर रखने लगे हैं और काम में उनकी हाजिरी की नियमितता बढ़ गई है। नेशनल ब्यूरो आफ इकानामिक रिसर्च ने १९२७ में जो आंकड़े प्रकाशित किये थे, उनके अनुसार राष्ट्रीय सम्पत्ति में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। १९१३ के डालर को स्टैण्डर्ड मानकर (१९१३ की कीमतों के आधार पर) १९१८ के युद्ध वर्ष में अमेरिकनों की कुल राष्ट्रीय आय ३५,५०,००,-००,००० डालर थी और १९२६ में ५२,९०,००,००,००० डालर, अर्थात् ४९ फीसदी ज्यादा थी। १९०९ से १९१८ तक आमदमी में जो वृद्धि हुई थी, उसकी बनिस्बत यह १७,४०,००,००,००० डालरों की वृद्धि दुगुनी से भी ज्यादा है। और यदि प्रति व्यक्ति के हिसाब से

तो आमदनी की यह वृद्धि पहले से ४ गुना ज्यादा है।"

मिल-मालिकों, बीमा एजेंटों तथा दूसरे लोगों से जब व्यक्तिशः
गया, कि क्या वे शराबबन्दी के हक़ में हैं या खिलाफ़ तो,
: सभी ने यह राय दी कि शराबखानों के बन्द हो जाने का यह
णाम हुआ है कि वेतनभोगी मज़दूर दूसरी चीज़ें खरीदने
बहुत दिलचस्पी लेने लगे हैं। एक सुलुप कम्पनी ने यह
य ज़ाहिर की है कि शराबबन्दी सबके लिए वरदान है।
सने हमारे मजदूरों के रहन-सहन का स्टैंण्डर्ड ऊँचा कर दिया है,
न्हें ज्यादा स्थिर कर दिया है और इसके कारण उन्हें व उनके
रिवारों को आराम-आसायश की ऐसी-ऐसी चीजें अब मिलने लगी हैं,
नके ले सकने की सम्भावना भी वे शराबबन्दी के अमल में आने से
हले न करते थे।

शराबखानों के खात्मे का असर और भी बहुत-सी चीजों पर पड़ा
है। शराबबन्दी के समर्थकों की बीसियों बार की गई इस घोषणा के
समर्थन का एक प्रमाण यह है कि लोगों पर अब किश्तों में रुपया चुकाने
के लिये विश्वास किया जाने लगा है। शराबबन्दी अपने वास्तविक रूप में न
राजनीतिक प्रश्न है, न नैतिक और न यह अर्थशास्त्र की समस्या है। संयुक्त
राष्ट्र अमेरिका की इतनी अधिक पैदावार का मुख्य श्रेय इसी शराबबन्दी
को है। इसी तरह बचत में भी बहुत वृद्धि हुई है, मोटर गाड़ियों की
खपत भी बढ़ गई है। घर बनाने, घर खरीदने तथा दूसरे बहुत-से
आर्थिक कारोबार, जिनके कारण संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की संसार में
इतनी ऊँची स्थिति हो गई है, शराबबन्दी के परिणाम दीखते हैं। एक

नई और बहुत क्रयशक्ति उन औसत अमेरिका नागरिकों से प्राप्त होती है जो इस देश के आधार हैं। यह क्रयशक्ति कुछ हद तक इसलिये भी बढ़ी है, क्योंकि अब देश में शराब खरीद-फरोख्त की वस्तु नहीं रह गई, क्योंकि शराबखाने बन्द हो गये हैं; क्योंकि औसत अमेरिकन के लिये उस कीमत या उस मेहनत के मुकाबले ये कुछ भी नहीं है, जो उसे प्राप्त करने के लिये लगानी पड़ती है; क्योंकि शराब उन खतरों के मुकाबले में भी नहीं ठहरती, जो उसे पीने पर उठाने पड़ते हैं। इसलिये व्यक्ति, उसके परिवार और साधारण व्यापार सबको उन वेतनों और बचतों का लाभ प्राप्त होता है, जो इससे पहले अनुत्पादक शराब के दूकानदार के पास चले जाते थे। शराबबन्दी से शराब का बिलकुल पीना बन्द हुआ और न बिलकुल पीना बन्द हो सकेगा। शराबबन्दी ने जो कुछ किया है, वह यह कि इसने देश और उसकी जनता को आर्थिक उत्साहन व स्थिरता में सहायता दी है। इन्हीं दोनों के कारण ही हमारा देश संसार भर में सबसे अधिक सम्पन्न, सबसे अधिक पैदावार करने वाला और सबसे अधिक शक्तिशाली बनता है।

यदि इस सबसे अच्छे काम को कुछ उचक्कों व गैरकानूनी शराब का छिप-छिप कर व्यापार करने वाले व्यापारियों ने कानून तोड़ कर नष्ट कर दिया, तो इससे यह परिणाम नहीं निकालना चाहिये कि जब कानून पर अमल होता था और लोग उसकी इज्जत करते थे, तब भी इसके अच्छे परिणाम नहीं निकलते थे और इनका लाभ नहीं होता था। हम यह आशा कर सकते हैं कि भारतवर्ष में ऐसे कानून तोड़ने वाले और उचक्के चोरों से कोई विशेष भय नहीं है।

॥ समाप्त ॥